सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 206, नई दिल्ली, शुक्रवार 03 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता.

03 राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का शताब्दी वर्ष विजयादशमी उत्सव पर पथ संचलन से प्रारंभ

06 भारत के भविष्य के लिए 21वीं सदी का कौशल महत्वपूर्ण क्यों है

08 ....आईटीआई रंजीत एवेन्यू एवं दयानंद आईटीआई का कोशल दीक्षांत समारोह

ईसीसी खत्म होने के बाद चालक उलझे नए नियमों में, कहीं दिखी ट्रैफिक जाम में राहत तो कहीं लगी गाड़ियों की कतार

दिल्ली में एमसीडी के टोल नाकों पर जाम कम करने के लिए पर्यावरण क्षतिपूर्ति शुल्क (ईसीसी) की वसूली पर छूट खत्म कर दी गई है। सिंघु बॉर्डर पर कुछ हद तक जाम से राहत मिली लेकिन गाजीपुर और कालिंदी कुंज पर पहले की तरह ही जाम रहा। चालकों को नए नियम की जानकारी न होने और आरएफआइडी रिचार्ज में दिक्कत के कारण भी जाम लगा।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में एमसीडी के टोल नाकों पर प्रवेश के दौरान लगने वाले जाम को खत्म करने के लिए पर्यावरण क्षतिपूर्ति शुल्क (ईसीसी) की वसूली पर छूट खत्म कर दी गई। मगर इसका असर मिला-जुला रहा। दिल्ली में प्रवेश के लिए 156 टोल नाके हैं। करीब 85 प्रतिशत यातायात 13 प्रमुख टोल नाकों से ही आता है। इन 13 में से प्रमुख सिंघु बार्डर, गाजीपुर, गाजीपुर ओल्ड और कालिंदी कुंज टोल नाके की दैनिक जागरण की टीम ने बुधवार रात को पड़ताल की। कुछ टोल नाको पर जाम से मुक्ति नजर आई। लेकिन कुछ पर पहले की तरह ही जाम लगा रहा। इसकी प्रमुख वजह टोल नाको से वाहनों का प्रवेश करने में अव्यवस्था का होना था। इसके साथ एक कारण यह था कि मालवाहक चालकों को फैसले की जानकारी नहीं थी। इसकी वजह से वह टोलकर्मियों से उलझ रहे थे।

कालिंदी कुंज पर लगा जाम, समय: 11:15 बजे

कालिंदी कुंज टोल नाके पर टोल कर्मी व्यावसायिक वाहन चालकों को बताते हुए नजर आए कि जो जरूरी वस्तुएं लाने वाले मालवाहक वाहनों पर ईसीसी की छूट अब खत्म हो गई है। ऐसे में उन्हें अब यह शुल्क देना पड़ेगा। इसके लिए एमसीडी के आरएफआइडी टैग को उसी अनुसार रिचार्ज कराना है। ताकि आगे से टोल से प्रवेश में दिक्कत न हो। हालांकि टोल नाके पर कई वाहन बिना जांच के गुजरे। यहां पर चालकों द्वारा ट्रकों को आड़े-तिरछे खड़े किए जाने और थोड़ी ही दूरी पर लाल बत्ती होने के कारण जाम की स्थिति बनी रही। एक तरह से यहां ईसीसी खत्म होने से वाहनों की जांच का प्रविधान तो खत्म हो गया लेकिन जाम की समस्या खत्म नहीं हुई।

सिंघु बार्डर बिना रोक-टोक गुजरे वाहन, रात 11:00 बजे

सिंघु बार्डर टोल नाके पर हिमाचल से लेकर पंजाब और चंडीगढ़ से वाहन आते हैं। यहां पर व्यावासायिक वाहन आसानी से निकलते रहे। किसी भी तरह की कोई वाहनों की जांच नहीं की गई। अधिकतर चालकों को नए नियम के बारे में पता था और जिन वाहन चालकों को नहीं पता था वहां उन्हें टोल कर्मी बता भी रहे थे। व्यावसायिक वाहनों से टोल वसूलने के लिए किसी भी तरह की जांच नहीं की गई।

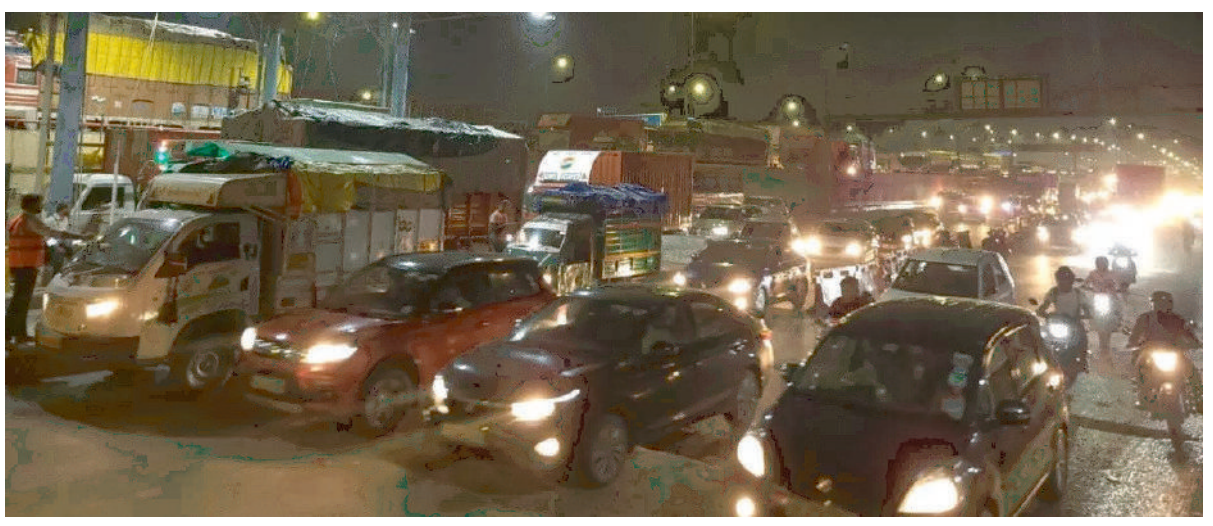

अन्य दिनों के मुकाबले अधिक सुरक्षाकर्मी तैनात किए गए थे।

गाजीपुर में आधे घंटे रहा जाम, दोपहर 11:00

गाजीपुर एमसीडी टोल नाके पर उत्तर-प्रदेश और उत्तराखंड से बड़ी मात्रा में सब्जी, दूध, फल जैसी जरूरी वस्तुएं आती हैं। यहां पर वाहनों का दबाव अधिक होने के कारण जाम लग गई। आरएफआइडी मैनुअल तरीके से रिचार्ज कराने के कारण ट्रक खड़े हुए नजर आए जिसकी वजह से जाम की स्थिति उत्पन्न हो गई। हालांकि, आधे घंटे बाद स्थिति सामान्य हो गई। ऐसी ही स्थिति गाजीपुर ओल्ड टोल नाके पर दिखाई दी। यहां पर पुलिस बेरिकेडिंग के कारण जाम लगा हुआ दिखाई दिया तो वहीं टोल नाके पर भी वाहनों के दबाव के कारण जाम की स्थिति कुछ समय के लिए दिखाई दी।

टोल पर अब तक क्या-क्या कब हुआ?

- 2015 में सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर दिल्ली में प्रवेश करने वाले व्यावसायिक वाहनों पर ईसीसी लगाया गया, हालांकि जरूरी वस्तुओं के साथ आने वाले डीजल के वाहनों को छूट दी गई
- 23 अक्टूबर 2018 को जाम से राहत देने के लिए 13 टोल नाकों पर आरएफआइडी टैग से युक्त किया गया
- 1 जुलाई 2019 से आठ टोल नाकों पर आरएफआइडी से वाहनों का प्रवेश अनिवार्य किया गया
- 15 अगस्त 2019 से 13 टोल नाकों को आरएफआइडी से वाहनों का प्रवेश अनिवार्य किया गया
- 15 अगस्त 2019 से 13 टोल नाकों पर आरफआइडी से प्रवेश लागू नहीं हो पाया तो इसे 23 अगस्त तक के लिए बढ़ा दिया गया
- 1 सितंबर 2019 को आरएफआइडी का पंजीकरण कराने के लिए वेबसाइट जारी की गई
- 2020 में लाकडाउन के चलते निगम टोल पर ज्यादा काम नहीं कर पाया, लेकिन सभी टोल नाकों को आरएफआइडी से लैस कर दिया। इसमें 111 टोल नाकों पर हैंड हेल्ड डिवाइस उपलब्ध कराए गए
- 2020 में लॉकडाउन हटने के बाद निगम ने आंतरिक स्तर पर कई बार टोल नाकों पर टैग से प्रवेश को अनिवार्य करने की कोशिश की
- 1 जनवरी 2021 से फिर एक बार 13 टोल नाकों पर टैग से प्रवेश को अनिवार्य किया गया, लेकिन यह लागू नहीं हो पाया
- 30 जून 2021 को 124 टोल नाकों पर टैग से प्रवेश को अनिवार्य किया गया, लेकिन जाम लग जाने की वजह से व्यवस्था लागू नहीं हो पाई
- 1 अक्टूबर 2025 को एमसीडी ने टोल नाको पर डीजल के मालवाहक वाहनों पर ईसीसी की छूट को खत्म कर दिया।

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

SCAN ME

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

राउरकेला से उड़ानें बंद होना विकास की राह में बाधा

एनसीपी अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने जताया कड़ा विरोध, सरकार से तुरंत हस्तक्षेप की मांग

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला। राष्ट्रीयवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के ओडिशा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने राउरकेला हवाई अड्डे से उड़ानों के निलंबन पर कड़ा विरोध दर्ज किया है। उन्होंने इसे पश्चिमी ओडिशा के विकास और आर्थिक प्रगति के लिए गंभीर बाधा बताते हुए राज्य और केंद्र सरकार से तुरंत कार्रवाई की मांग की।

डॉ. यादव ने कहा कि औद्योगिक नगरी राउरकेला से उड़ानों का बंद होना यात्रियों की असुविधा के साथ-साथ व्यापार, पर्यटन और स्वास्थ्य सेवाओं पर प्रतिकूल असर डाल रहा है। एलायंस एयर द्वारा जुलाई से उड़ानों को निलंबित करने और अब इसे 25 अक्तूबर 2025 तक बढ़ाने का निर्णय सरकार की उदासीनता को दर्शाता है। उन्होंने आरोप लगाया कि तकनीकी खराबी का बहाना बनाकर जनता को परेशान किया जा रहा है, जबकि कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं की गई।

उन्होंने चेतावनी दी कि राउरकेला-कोलकाता और राउरकेला-भुवनेश्वर जैसी महत्वपूर्ण उड़ानों का बंद होना क्षेत्रीय असमानता को और बढ़ाएगा। यदि उड़ानें शीघ्र बहाल नहीं हुईं, तो एनसीपी जन आंदोलन छेड़ेगी।

डॉ. यादव ने अपील की कि ओडिशा सरकार नई गंतव्य नीति 2025 के तहत एयरलाइनों को प्रोत्साहन दे और राउरकेला की हवाई संपर्कता को सुदृढ़ करे, ताकि क्षेत्र का विकास बाधित न हो।

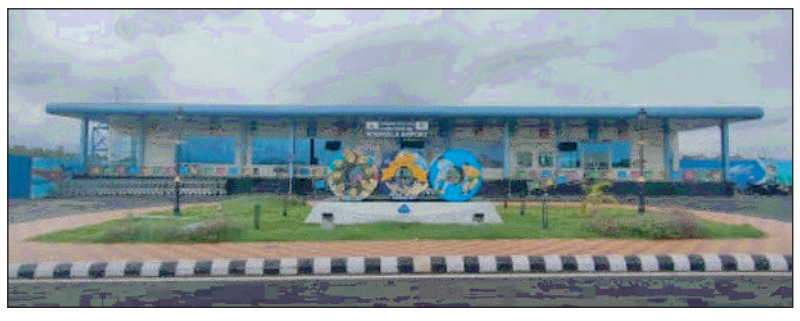

टैक्सी बसों वालो के साथ काफी सालो से लगातार हो रही ज्यादतियों और आर्थिक, मानसिक शोषण के खिलाफ किया रावण दहन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन नें प टैक्सी बसों वालो के साथ काफी सालो से लगातार हो रही ज्यादतियों और आर्थिक, मानसिक शोषण के खिलाफ दशहरा के पावन पर्व पर बुराई के प्रतीक रावण का पुतला दहन के साथ देश में अन्याय, शोषण और मिलावटखोरी के खिलाफ भी पुतला दहन किया.

जिसमे पेट्रोल में एथनोल की मिलावट, प्रदूषण के नाम पर डीजल टैक्सी बसों को बंद करना और उन पर 20 हजार के जुर्माने करना. जनता के पैसे से बनाये गए रोड और हाइवे और एक्सप्रेस वे पर टोल लगाकर प्राइवेट कम्पनियो द्वारा नाजयाज टोल वसूलना, मेहंगे ट्रैफिक चालान करवाना, महंगी इन्शुरन्स, पेनिक बटन के नाम पर भरस्टाचार करना.

आज ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट नें रावण के पुतले के दहन के साथ अन्याय और शोषण के दुसरे नाम के पुतले का भी दहन किया.

संजय सम्राट का कहना है की काफी सालो से सरकार और प्रशासन हमारी मांगो को अनसुना कर रहा है. इसलिए दशहरा के पावन पर्व पर, जिस त्यौहार में अन्याय पर न्याय की जीत के लियें रावण का पुतला दहन होता हैं इसी प्रकार इन बुराई का पुतला भी दहन किया गया.

काफी मुद्दे है :-

1. एथनोल जिसको सरकार पेट्रोल डीजल में 20% मिलाकर दे रही है. सबसे बड़ी बात यें है की जब हम सरकार के या प्राइवेट पेट्रोल पंप पर पूरे पैसे पेट्रोल /डीजल के दे रहें है तो सरकार का पेट्रोलियम मंत्रालय किस क्यों हमें 100% पेट्रोल /डीजल नहीं दे रहा है. अगर किसी भी पदार्थ में कोई भी इंसान मिलावट करता है तो उन इंसानो को सरकार या प्रशासन जेल भेज देता है, और उसकी दूकान या फैक्टरी सील कर देता है. एथनोल की मिलावट करने से हमारी गाड़ियों को को भी नुकसान हो रहा है, कल को इसी एथनोल की वजह से गाड़ियों के इंजन खराब होंगे. फिर यें सरकार और प्रशासन और इनकी एजेन्सी हमारी गाड़ियों को स्क्रैप बनाएंगी.

हमारी मांग यें है की जो भी पेट्रोल डीजल हमें दिया जा रहा है वो 100% असली हो. और जिन्होंने भी पेट्रोल/डीजल में मिलावट करी है, उनको सजा हो साथ ही ऐसे लोगो की फैक्ट्री सील की जाए. और इनकी सारी की सारी सम्पति की कुर्की हो और वो पैसा जनता को वापिस किया जाए. डीजल पेट्रोल सस्ता करके. और 100% डीजल/पेट्रोल दिया जाए.

2. भारत के परिवहन मंत्रालय नें भारत की जनता को आर्थिक और मानसिक शोषण करने के लिए ट्रैफिक के जुर्माने 10 गुना बड़ा दिए. अगर गलती से किसी ड्राइवर नें यूनिफार्म नहीं पहनी तो उसके गाडी मालिक पर 10 हजार का जुर्माना और ड्राइवर पर भी 10 हजार का जुर्माना. यें कहाँ तक उचित है. और तो और दिल्ली में कहीं स्पीड 80 किलोमीटर प्रति घंटा है तो कहीं 40 किलोमीटर प्रति घंटा, ना वहाँ कहीं स्पीड का बोर्ड लगा होता है, कैमरे जरूर लगा रखे है जो भारी भरकम ऑनलाइन चालान करके हमारे हर गरीब टैक्सी बस वालो को ट्रैफिक पुलिस द्वारा भेजते रेहते है. रोड टूटे हुए है, ट्रैफिक सिग्नल ख़राब होते है, रोड पर पानी भरा होता है, घंटो जाम में महिलाये, बुजुर्ग, बच्चे और हमारे ड्राइवर भूखे प्यासे गाड़ियों में फसे रेहते है. सरकार या प्रशासन पर क्यों नहीं जुर्माना किया जाता, इन को भी सजा होनी चाहिए, इनकी भी सम्पति जब्त होनी चाहिए. जैसे यें छोटी छोटी बातो में हमारी गाड़ियों को जब्त करते है.

3 इन्शुरन्स ना होने पर 10 हजार का जुर्माना पुलिस और इनफ़ोर्समेंट द्वारा किया जाता है, लेकिन इन्शुरन्स कम्पनिया कभी पूरा क्लेम नहीं देते बल्कि महीनों और सालो लगा देते है क्लेम देने में. सरकार तो GST के नाम पर अपन पैसा वसूल करके साइड हो जाती है. कभी सरकार नें पूरा क्लेम ना देने पर या देरी से क्लेम देने पर इन्शुरन्स कम्पनी पर जुर्माना लगाया है.

हमारी मांग है की इन्शुरन्स ना होने पर कोई जुर्माना ना लगाया जाए. या फिर इन इन्शुरन्स कम्पनियो पर भी जुर्माना लगाया जाए.

4 पेनिक बटन के नाम पर दिल्ली में अरबो रुपए का भरस्टाचार हो चूका है, जबकि दिल्ली में बीजेपी सरकार भी आये हुए 8 महीने हो गए लेकिन अभी भी 5 रुपए के पेनिक बटन के नाम पर 9000 रुपए से लेकर 22000 रुपए तक लिए जा रहें है. जबकि आज तक दिल्ली सरकार और इसके परिवहन विभाग नें कोई कॉल सेंटर अभी तक नहीं बनाया. हमारी मांग यह हैं की जब तक यह कॉल सेंटर नहीं बनाया जाता तब तक इसके पैसे नहीं हमसे नहीं लिए जाए और जो आज तक हमारे पैसे लिए गए हैं सरकार के परिवहन विभाग के वेंडर द्वारा वो सारे हमारे पैसे वापस करें जाएं.

साथ ही गाड़ियों की फिटनेस के समय पेनिक बटन की अनिवार्यता खत्म करी जाए.

5 कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट द्वारा प्रदुषण के नाम पर हमारी बीएस-4 डीजल टैक्सी बसों को बंद ना कराया जाए, क्योंकि हमारी टूरिस्ट टैक्सी बसें आल इंडिया टूरिस्ट परमिट होती हैं और ज्यादातर दिल्ली से बाहर रहती हैं.

इसलियर हमारी जितनी गाड़ियों की लाइफ हैं उतना उनको चलने दिया जाए यह हमारी मांगे है क्यूंकि प्रदुषण के नाम पर यह जानबूझकर हमारी गाड़ियों को स्क्रैप बनाने पर तुले हैं.

6. भारत में जितने भी हाइवे यां एक्सप्रेस वे बनाये जाते हैं, वो सरकार जनता के पैसे से बनाती हैं. जब इन रोड को बनाने में करोडो रूपए जनता के पेसो से लगता हैं तो फिर जगह जगह टोल प्लाजा बनाकर टोल क्यों वसूला जाता हैं. इन रोड की मरमत भी सरकार खुद जनता के पेसो से करा सकती हैं. इन टोल कम्पनियो द्वारा काफी बार लोगों की पिटाई की गई हैं बल्कि अभी हमारे भारतीय फ़ौजी को भी बुरी तरह पीटा गया हैं. ये टोल कम्पनी एक तरह से भ्रस्टाचार और बाउंसर का अड्डा बन गई हैं. इनकी वजह से काफी जाम भी रहता हैं. और ट्रैफिक जाम के कारण गाड़ियों का डीजल पेट्रोल भी फुखता हैं. हमारी मांग ये हैं की सारे हाइवे और एक्सप्रेस वे पर कहीं भी कोई अवरोधक यां टोल नहीं होना चाहिए, बल्कि इन रोड पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम होने चाहिए.

सम्राट का कहना हैं की हमने इस पर्व पर एथनोल पेनिक बटन, मिलावटी चीजें इत्यादि का पुतला इसलिए भी दहन करा जिससे पूरी जनता में यह जागृति जगाना चाहते हैं की जनता हमेशा बुराई का पुतला जलाएं जिससे हमारे देश में बुराई और भ्रस्टचार खत्म हो और हमारा देश समृद्ध हो और खुशहाल हों।

पापांकुशा एकादशी व्रत आज

आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को पापांकुशा एकादशी कहा जाता है। इस दिन भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की पूजा करने के साथ व्रत रखने का विधान है। मान्यताओं के अनुसार, इस दिन जो साधक व्रत रखता है तो वह हर एक दुख-दर्द, रोग-दोष से निजात पा लेता है और इस लोक में सुख भोग कर मृत्यु के बाद स्वर्गलोक की प्राप्ति करता है।

कब है पापांकुशा एकादशी ?

==========

आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि आरंभः 2 अक्टूबर 2025 को शाम 07:11 बजे

आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि समाप्त- 3 अक्टूबर 2025 को शाम 06:33 बजे

पापांकुशा एकादशी 2025 तिथि- 3 अक्टूबर 2025

पापांकुशा एकादशी व्रत का पारण का समय

==========

पापांकुशा एकादशी व्रत का पारण 4 अक्टूबर 2025 को सुबह 06:23 बजे से 08:44 बजे तक है।

हरि वासर आंरभ- 4 अक्टूबर को सुबह 12 बजकर 12 मिनट तक

हरि वासर समाप्त- 4 अक्टूबर को सुबह 5 बजकर 09 मिनट तक

पापांकुशा एकादशी पूजा विधि

==========

पापांकुशा एकादशी के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर नित्यकर्मों से निवृत्त होकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें। इसके बाद श्री हरि विष्णु की पूजा आरंभ करें। सबसे पहले भगवान विष्णु का पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद और मिश्री) से अभिषेक करें। फिर उन्हें फूल, माला, पीला चंदन, अक्षत आदि अर्पित करें और तुलसी दल के साथ नैवेद्य (भोग) चढ़ाएं। इसके पश्चात घी का दीपक और धूप जलाकर श्री विष्णु मंत्रों, चालीसा, और पापांकुशा एकादशी व्रत कथा का पाठ करें। अंत में आरती करें। दिनभर निराहार या फलाहार व्रत रखें। संध्या समय पुनः भगवान विष्णु की पूजा करें। व्रत का पारण अगले दिन यानी द्वादशी तिथि को उचित समय पर करें।

पापांकुशा एकादशी महत्व

==========

पौराणिक ग्रंथों में पापांकुशा एकादशी का विस्तार से उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि इस एकादशी व्रत के समान अन्य कोई व्रत नहीं है। पापांकुशा एकादशी पर भगवान विष्णु की पूजा करने तथा दीन-दुःखी, निर्धन लोगों को दान देने से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है और सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है। पापांकुशा एकादशी हजार अश्वमेघ और सौ सूर्ययज्ञ करने के समान फल प्रदान करने वाली होती है। पदम पुराण के अनुसार, "जो व्यक्ति इस दिन श्रद्धा पूर्वक सोना, तिल, भूमि, गौ, अन्न, जल, जूते और छाते का दान करता है, उसके ऊपर भगवान विष्णु की कृपा होती है और उसे यमराज के भय से मुक्ति मिल जाती है। साथ ही जो व्यक्ति इस दिन रात्रि में जागरण करके प्रभु का भजन करता है और पूजा अर्चना करता है, वह स्वर्ग का भागी बनता है।"

दान का महत्व

==========

सनातन परंपरा में दान बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। हमारे धर्म ग्रंथों में दान के महत्व का उल्लेख मिलता है जहां दान को सभी कष्टों और व्याधियों से निजात पाने का अचूक साधन माना गया है। सनातन धर्म में सदियों से ही दान की परंपरा रही है। लोगों को मन की शांति, मनोकामना पूर्ति, पुण्य की प्राप्ति, ग्रह-दोषों के प्रभाव से मुक्ति और भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए दान करना चाहिए।

दान का महत्व इसलिए भी अधिक बढ़ जाता है क्योंकि ऐसी मान्यता है कि आपके द्वारा किए दान का लाभ केवल इस जीवन में ही नहीं बल्कि मृत्यु के बाद भी मिलता है। मृत्यु के बाद जब धर्मराज के समक्ष आपके कर्मों का आंकलन किया जाता है तो यही पुण्य कर्म काम आते हैं। दान के द्वारा अर्जित किया गया पुण्य इस पृथ्वी पर रहने के साथ और यहाँ से जाने के बाद भी आपके साथ ही रहता है।

श्री नीलमाधव मंदिर, कांटिलो – जगन्नाथ संस्कृति की आदि भूमि

स्थानः कांटिलो, नयागढ़ जिला, ओडिशा

देवताः भगवान श्री नीलमाधव (भगवान विष्णु का रूप)

मंदिर का महत्वः ओडिशा की पवित्र महानदी के किनारे, दो नदियों – कुषभद्र और मुण्डेश्वरी – के संगम पर बसा है यह दिव्य मंदिर। यह स्थान आध्यात्मिक ऊर्जा, शांति और प्रकृति की सुंदरता से भरपूर है। यहाँ की पहाड़ियाँ और हरे-भरे जंगल मंदिर के चारों ओर एक दिव्य वातावरण बनाते हैं।

इतिहास की झलकः नीलमाधव भगवान जगन्नाथ के प्राचीन रूप माने जाते हैं। विद्यापति नामक ब्राह्मण द्वारा जब पहली बार नीलमाधव के दर्शन हुए, तब उन्होंने राजा इंद्रद्युम्न को इसकी जानकारी दी। राजा इंद्रद्युम्न ने उसी नीलमाधव की खोज में पुरी में श्रीजगन्नाथ मंदिर की स्थापना की। इसी कारण कांटिलो को जगन्नाथ संस्कृति की जन्मस्थली माना जाता है।

क्यों जाएँ यहाँ? भगवान नीलमाधव के प्राचीन स्वरूप के दर्शन के लिए प्रकृति की गोद में आत्मिक शांति पाने ओडिशा की सांस्कृतिक जड़ों को समझने के लिए हर भक्त के जीवन में एक बार यह यात्रा अवश्य होनी चाहिए।

जय श्री नीलमाधव!

अन्याय पर न्याय की, असत्य पर सत्य की, आक्रामक पर सहृदयता की, अहंकार पर सरलता की जीत को दर्शाने वाले पर्व दशहरा/विजय-दशमी की बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं। मंगल हो।

अहंकारी और स्वाभिमानी में बस इतना अन्तर है कि अहंकारी सदैव स्वयं के बाहरी सम्मान/प्रशंसा/सुख के लिये दूसरों को लूटकर/पाकर अथवा दूसरों को कमतर/निकृष्ट साबित करके प्रसन्न होता हैं।

यह एक झूठा दंभ है जो हमें दूसरों से श्रेष्ठ साबित करके मन-ही-मन प्रसन्न करता हैं। यह स्थिति हर अगली स्थिति में बदलने वाली है इसलिए ऐसे में भयभीत/बेचैनी की स्थिति बनी रहती है कि कहीं हमारी बाहरी छवि कम-ज्यादा तो नहीं हो रही है? ऐसे में इससे जीवन से आनन्द अवरोधित/निष्कासित हो जाता है। अहंकार/दम्भ का आन्तरिक आनन्द से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। अहंकारी कभी भी आनन्दित नहीं होता वह सदैव भौतिक रूप से खुश होता है। तथा किसी भी स्तर पर जाकर अपने उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास करना मात्र रहता है। यह एक तरह से हमारे रोगों को बढ़ाने का कारक भी बन जाता है। जबकि स्वाभिमान हमें अपने कार्यों को करने में एक उत्साह/शक्ति/चेतना की तरंग का कार्य करता है। यदि हमें अपने आप पर ही संशय/भ्रम होगा तो हम किसी भी कार्य को सक्षमता के साथ करने में सफल नहीं होंगें। स्वाभिमान अपनी कार्यक्षमता पर विश्वास का पर्याय है। जो अपने क्षमता का मान समझता है वह दूसरों को कभी भी तोड़ने/निकृष्ट समझने/साबित करने का कुकृत्य नहीं कर सकता। केवल वही दूसरों के सुख के लिये कुछ भी करके आनन्दित होता है। जिसके पीछे उसका कोई भौतिक/निहित उद्देश्य नहीं रहता। वह जानता है कि यहां कोई किसी से बड़ा या छोटा नहीं है। सभी अपने-अपने तरह के फूल हैं और वह अपनी-अपनी तरह से ही खिलकर ही अहो-भाव को प्राप्त हो सकते हैं।

नींद और स्वास्थ्य

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में लोग अक्सर नींद को हल्के में ले लेते हैं। देर रात तक काम करना, तनाव, मोबाइल स्क्रीन पर घंटों बिताना और खराब जीवनशैली के कारण अच्छी नींद से वंचित हो जाते हैं। लेकिन स्वस्थ जीवन का मूल आधार अच्छी नींद है। यह न केवल मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, बल्कि संपूर्ण जीवनशैली को भी नियंत्रित करती है।

नींद और स्वास्थ्य का गहरा संबंध

नींद केवल आराम नहीं बल्कि शरीर के लिए एक ज़रूरी प्रक्रिया है। यह हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाती है, मस्तिष्क को सक्रिय रखती है और हार्मोन के संतुलन को बनाए रखती है।

यदि कोई नियमित रूप से अच्छी नींद (GoodSleep) नहीं लेता, तो उसे कई गंभीर समस्याएं हो सकती हैं

प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती है, जिससे संक्रमण का खतरा बढ़ता है।

मस्तिष्क कार्यक्षमता प्रभावित होती है, जिससे ध्यान केंद्रित करने और याददाश्त बनाए रखने में कठिनाई होती है।

तनाव और अवसाद बढ़ सकता है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

हृदय रोग का खतरा बढ़ जाता है, क्योंकि नींद की कमी रक्तचाप और हृदय गति को असंतुलित कर सकती है।

मोटापा और मधुमेह का खतरा बढ़ जाता है क्योंकि नींद की कमी से भूख नियंत्रित करने वाले हार्मोन प्रभावित होते हैं।

एक वयस्क व्यक्ति के लिए 7–9 घंटे की गहरी और लगातार नींद आवश्यक होती है।

अच्छी नींद के लिए घरेलू उपाय

बहुत से लोग नींद की गोलियों का सहारा लेते हैं, लेकिन यह नशे की लत और साइड इफेक्ट्स का कारण बन सकती हैं। इसके बजाय, प्राकृतिक घरेलू उपाय अपनाकर अच्छी नींद पा सकते हैं।

1 हर्बल चाय का सेवन

कुछ जड़ी-बूटियों की चाय तनाव को कम करके नींद लाने में मदद करती हैः

कैमोमाइल चाय

इसमें एपिजेनिन नामक एंटीऑक्सीडेंट होता है, जो नींद को बढ़ावा देता है।

लैवेंडर चाय

यह तनाव कम करके मानसिक शांति प्रदान करती है।

वलेरियन जड़ की चाय एक प्राकृतिक नींद लाने वाली औषधि है।

सोने से एक घंटे पहले गर्म हर्बल चाय पीना लाभकारी होता है।

2 अरोमाथेरेपी सुगंध से नींद का सुधार

कुछ आवश्यक तेलों की खुशबू नींद लाने में सहायक होती है

लैवेंडर तेल इसे तकिए पर छिड़कने से गहरी नींद आती है।

सैंडलवुड (चंदन) तेल यह तनाव कम करके नींद की गुणवत्ता सुधारता है।

यलंग-यलंग तेल दिमाग को शांत करके नींद लाने में मदद करता है।

रात को सोने से पहले आवश्यक तेल का उपयोग करने से अच्छी नींद आती है।

3 नींद बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थ

कुछ खाद्य पदार्थ नींद के लिए फायदेमंद होते हैं

केला

इसमें मैग्नीशियम होता है, जो मांसपेशियों को आराम देता है।

बादाम

इसमें मेलाटोनिन होता है, जो नींद को नियंत्रित करता है।

गर्म दूध

इसमें ट्रिप्टोफैन होता है, जो शरीर में सेरोटोनिन और मेलाटोनिन बढ़ाता है।

कैफीन, शराब और भारी भोजन से बचना चाहिए।

4 सही वातावरण बनाना

नींद की गुणवत्ता सुधारने के लिए कुछ बदलाव जरूरी हैंः

हल्की रोशनी रखें

अंधेरा शरीर में मेलाटोनिन उत्पादन को बढ़ाता है।

नियमित नींद का समय

हर दिन एक ही समय पर सोने और जागने से नींद बेहतर होती है।

स्क्रीन टाइम कम करें

मोबाइल और लैपटॉप की नीली रोशनी मेलाटोनिन को कम करती है, जिससे नींद प्रभावित होती है।

आरामदायक बिस्तरः सही गद्दे और तकिए से नींद की गुणवत्ता बढ़ती है।

श्वास और विश्राम तकनीक

तनावजनित अनिद्रा से बचने के लिए ये उपाय कारगर हो सकते हैंः

गहरी सांस (4-7-8 विधि)

चार सेकंड तक सांस लें, सात सेकंड रोकें और आठ सेकंड में छोड़ें—यह तंत्रिका तंत्र को आराम देता है।

मांसपेशियों को धीरे-धीरे आराम देना

पूरे शरीर की मांसपेशियों को धीरे-धीरे आराम देने से तनाव दूर होता है।

योग और ध्यान

मानसिक शांति के लिए रोज ध्यान करने से नींद की गुणवत्ता बढ़ती है।

कब डॉक्टर से संपर्क करें?

अगर प्राकृतिक उपायों से कोई सुधार नहीं होता, तो अनिद्रा, स्लीप एपनिया या अन्य नींद संबंधी विकार हो सकते हैं। सही उपचार के लिए विशेषज्ञ से सलाह लेना ज़रूरी है।

निष्कर्ष

अच्छी नींद कोई विलासिता नहीं बल्कि आवश्यकता है। घरेलू उपायों को अपनाकर और बेहतर नींद की आदतें विकसित करके हर सुबह तरोताजा महसूस किया जा सकता है। स्लीपिंग पिल्स की बजाय कैमोमाइल चाय, लैवेंडर की सुगंध और गहरी सांस लेने की तकनीक से नींद की गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता है। आज रात से ही अपनी नींद को प्राथमिकता दें और शरीर को प्राकृतिक रूप से पुनर्जीवित होने दें।

भारत माता की अवधारणा भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता का प्रतीक है....

भारत माता की अवधारणा भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता का प्रतीक है। भारत माता की छवि अक्सर एक महिला के रूप में दर्शाई जाती है, जो देश की समृद्धि, संस्कृति और शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है।

इस अवधारणा का इतिहास ब्रिटिश शासन के दौरान शुरू हुआ, जब भारतीयों ने अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना शुरू किया। इस दौरान, भारत माता की छवि राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में उभरी।

भारत माता की मुद्रा या सिक्के पर छवि एक नए विकास का हिस्सा है, जो देश की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत को सम्मानित करने के लिए किया गया है। यह विशेष रूप से राष्ट्रीय गौरव और एकता को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है।

आपको यह जानने में रुचि हो सकती है कि यह विशेष सिक्का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 100वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में जारी किया गया है, जो एक महत्वपूर्ण संगठन है जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और सांस्कृतिक संरक्षण में भूमिका निभाई है।

संतान के रूप में कौन आता हैं

पूर्व जन्म के कर्मों से ही हमें इस जन्म मे माता-पिता, भाई बहिन, पति-पत्नी, प्रेमिका,

मित्र-शत्रु, सगे-सम्बंधी इत्यादि संसार के जितने भी रिश्ते नाते है, सब मिलते है ।

इन सबको हमें या तो कुछ देना होता है, या इनसे कुछ लेना होता है ।

वैसे ही संतान के रूप में हमारा कोई पूर्वजन्म का 'सम्बन्धी' ही आकर जन्म लेता है,

जिसे शास्त्रों में चार प्रकार का बताया गया है।

ऋणानुबन्ध :-

पूर्व जन्म का कोई ऐसा जीव जिससे आपने ऋण लिया हो या उसका किसी भी प्रकार से धननष्ट किया हो, तो वो आपके घर में संतान बनकर जन्म लेगा और आपका धन बीमारी में या व्यर्थ के कार्यों में तब तक नष्ट करेगा जब तक उसका हिसाब पूरा ना हो।

शत्रु पुत्र :-

पूर्व जन्म का कोई दुश्मन आपसे बदला लेने के लिये आपके घर में संतान बनकर आयेगा और बड़ा होने पर माता-पिता से मारपीट, झगड़ा या उन्हें सारी जिन्दगी किसी भी प्रकार से सताता ही रहेगा । हमेशा कड़वा बोल कर उनकी बेइज्जती करेगा व उन्हें दुःखी रख कर खुश होगा ।

उदासीन पुत्र :-

इस प्रकार की 'सन्तान', ना तो माता-पिता की सेवा करती है, और ना ही कोई सुख देता है और उनको उनके हाल पर मरने के लिए छोड़ देती है । विवाह होने पर यह माता-पिता से अलग हो जाते हैं।

सेवक पुत्र :-

पूर्व जन्म में यदि आपने किसी की खूब सेवा की है, तो वह अपनी की हुई सेवा का ऋण उतारने के लिये, आपकी सेवा करने के लिये पुत्र बन कर आता है ।

जो बोया है, वही तो काटोगे, अपने माँ-बाप की सेवा की है, तो ही आपकी औलाद बुढ़ापे में आपकी सेवा करेगी । वरना कोई पानी पिलाने वाला भी पास ना होगा ।

आप यह ना समझें कि यह सब बातें केवल मनुष्य पर ही लागू होती है ।

इन चार प्रकार में कोई सा भी जीव आ सकता है।

जैसे आपने किसी गाय कि निःस्वार्थ भाव से सेवा की है तो वह भी पुत्र या पुत्री बनकर आ सकती है ।

यदि आपने गाय को स्वार्थ वश पालकर उसको दूध देना बन्द करने के पश्चात घर से निकाल दिया हो तो वह ऋणानुबन्ध पुत्र या पुत्री बनकर जन्म लेगी।

यदि आपने किसी निरपराध जीव को सताया है तो वह आपके जीवन में शत्रु बनकर आयेगा ।

इसलिये जीवन में कभी किसी का बुरा नहीं करें।"

क्योंकि प्रकृति का नियम है कि आप जो भी करोगे, उसे वह आपको इस जन्म या अगले जन्म में, सौ गुना करके देगी ।

स्मार्ट बनने का असली राज़ है, खुद से संतुष्ट और खुश रहना

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह सहज

हरदा मध्य प्रदेश.

स्मार्ट बनने का मतलब केवल पहनावे या चाल-ढाल में नहीं छिपा होता, बल्कि यह हमारे सोचने, बोलने, और व्यवहार करने के तरीके में नज़र आता है। स्मार्ट व्यक्ति हमेशा सकारात्मक, आत्मविश्वासी और सुलझा हुआ नजर आता है। उसकी छवि ऐसी होती है कि लोग उसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं।साफ-सुथरे और व्यवस्थित कपड़े पहनना, चेहरे पर मुस्कान रखना, विनम्रता से बात करना, यह सब हमारी स्मार्टनेस को बढ़ा देता है। मेहनत और लगन से लगातार सीखते रहना, नए विचार ग्रहण करना, और अपने आसपास हर समय अपडेट रहना भी आवश्यक है।स्मार्ट इंसान न केवल अच्छा बोलता और लिखता है, बल्कि वह अच्छे से सुनना भी जानता है। वह दूसरों की भावनाओं की कद्र करता है, समय की कीमत समझता है और हर किसी का सम्मान करता है। उसकी बॉडी लैंग्वेज में आत्मविश्वास झलकता है और चेहरे पर हमेशा सकारात्मकता की झलक दिखाई देती है।दरअसल, स्मार्ट बनने का असली राज़ है, खुद से संतुष्ट और खुश रहना। जब हम खुद से खुश होते हैं, तो हमारी ऊर्जा और मुस्कान दूसरों को भी आकर्षित करती है, और लोग हमारे दीवाने बन जाते हैं।

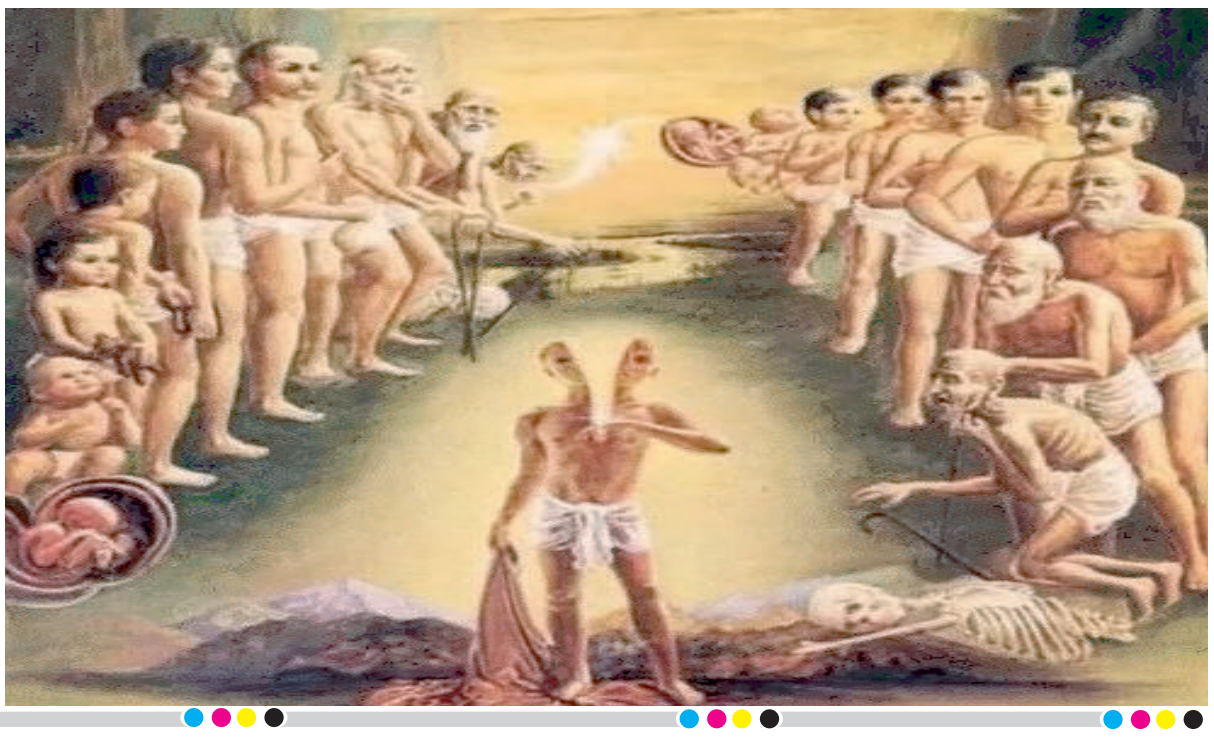

'आप' ने गांधी की समाधि पर दुनिया के सबसे बड़े गांधीवादी सोनम वांगचुक की रिहाई के लिए की प्रार्थना

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली, आम आदमी पार्टी ने गुरुवार को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती पर दुनिया के सबसे बड़े गांधीवादी और सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक की जेल से रिहाई के लिए प्रार्थना की। ₹आप₹ के दिल्ली प्रदेश संयोजक सौरभ भारद्वाज दोपहर 12 बजे राजघाट स्थित महात्मा गांधी की समाधि पर पहुंचे और कुछ मिनट मौन धारण कर उन्हें याद किया। उन्होंने सोनम वांगचुक को न्याय दिलाने की प्रार्थना करते हुए कहा कि गांधी जी की समाधि पर फूल चढ़ाने वाले लोग ही एक सच्चे गांधीवादी सोनम वांगचुक को देशद्रोह के झूठे केस में जेल में डाल रखा हैं। जबकि सोनम वांगचुक ने देश को सत्य व अहिंसा की राह दिखाई है। इस दौरान विधायक संजीव झा, आदिल खान, महिला विंग की अध्यक्ष सारिका चौधरी समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

सौरभ भारद्वाज गुरुवार को गांधीवादी सोनम वांगचुक की रिहाई की प्रार्थना करने राजघाट पहुंचे थे। प्रार्थना के उपरांत उन्होंने मीडिया से बातचीत में कहा कि आज पूरा विश्व महात्मा गांधी को याद कर रहा है। लेकिन विश्व के सबसे बड़े गांधीवादियों में से एक सोनम वांगचुक देशद्रोह के झूठे मुकदमे में जेल में बंद हैं। आज रूस की सरकार ने गांधी समाधि के पास गांधी जी और टॉलस्टॉय के जीवन पर एक प्रदर्शनी लगाई है, जो दर्शाता है कि आज भी पूरा विश्व गांधी जी को याद कर रहा है।

सौरभ भारद्वाज ने इसे शर्म की बात बताते हुए कहा कि गांधी जी की समाधि पर फूल चढ़ाने वाले लोग ही दुनिया के सबसे बड़े गांधीवादी सोनम वांगचुक को

देशद्रोह के झूठे इल्जाम में जेल में बंद कर रखा हैं। उन्होंने देशवासियों से निवेदन किया कि अगर उनके दिल में कहीं गांधी हैं, तो आज उसी दिल से सोनम वांगचुक के लिए ईश्वर से प्रार्थना कीजिए। प्रार्थना यह नहीं है कि वे जल्द जेल से छूटें, क्योंकि गांधीवादी के लिए जेल में रहना बड़ी बात नहीं है, लेकिन प्रार्थना यह है कि सोनम वांगचुक ने जो अहिंसा और सत्य की राह देशवासियों व लद्दाख के निवासियों को दिखाई है, उस पर वे मजबूती से चलें और ईश्वर हमें भी उस राह पर चलने की शक्ति दे।

सौरभ भारद्वाज ने बताया कि बुधवार को सोनम वांगचुक की पत्नी से मेरी फोन पर बात हुई है, जो बीते दिनों दिल्ली आई थीं। इत्तेफाक से, जिस दिन सोनम वांगचुक की गिरफ्तारी हुई, उस सुबह मैसेज पर उनसे भी बात हुई थी। आम आदमी पार्टी ने आश्वासन दिया था कि अगर वे दिल्ली आते हैं, तो सब मदद करने के लिए तैयार हैं। अब उनकी पत्नी से भी बात की है और कहा है कि पार्टी जो भी काम आ सके, उसके लिए तैयार है।

इस दौरान बुराड़ी से "आप" विधायक संजीव झा ने कहा कि आज देश के सबसे बड़े गांधीवादी सोनम वांगचुक जेल में बंद हैं। वे वही व्यक्ति हैं, जिन्होंने गांधी के विचारों और तरीकों को आगे बढ़ाया। आश्चर्य की बात यह है कि जिन लोगों ने उन्हें जेल में बंद किया, वे भी बापू की समाधि पर फूल चढ़ा रहे हैं। संजीव झा ने कहा कि वे लोग बापू की समाधि पर फूल तो चढ़ा रहे हैं, लेकिन बापू के विचारों को पालन करने वाले लोगों को जेल में बंद कर रहे हैं। आज देशवासियों को सोनम वांगचुक के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। वे गांधीवादी तरीके से अपने आंदोलन को आगे बढ़ा रहे थे, लेकिन उन्हें जेल में बंद कर दिया गया। आज का दिन प्रार्थना करने और प्रेरणा लेने का है, ताकि जिस तरह सोनम वांगचुक ने अपनी लड़ाई लड़ी, हम सब उन से प्रेरणा लेकर अपनी लड़ाई को आगे बढ़ाएं।

उधर, "आप" नेता आदिल अहमद खान ने कहा कि गांधी की समाधि पर हमने प्रार्थना की और दुआ मांगी कि वह केंद्र सरकार को सद्बुद्धि प्रदान करे। इस दुनिया के सबसे बड़े गांधीवादी, समाज सुधारक, वैज्ञानिक सोनम वांगचुक को लद्दाख की लड़ाई लड़ते हुए केंद्र सरकार ने राष्ट्रद्रोह के मुकदमे में गिरफ्तार किया है। उन्होंने कहा कि जो गांधी की विचारधारा को मानते हैं। यह लड़ाई सोनम वांगचुक की अकेले की नहीं है, बल्कि यह देश के अस्तित्व को बचाने और गांधी की सोच और विचारों को बचाने की लड़ाई है। सभी देशवासी साथ खड़े हों और सोनम वांगचुक का साथ दें और उनका हौसला बढ़ाएं। वह जेल से डरने वाले नहीं, बल्कि गांधी जी के विचारों पर चलने वाले व्यक्ति हैं। लेकिन पूरे देश को आज गांधी के विचारों के साथ खड़े होकर सोनम वांगचुक का समर्थन करना चाहिए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का शताब्दी वर्ष विजयादशमी उत्सव पर पथ संचलन से प्रारंभ

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) ने अपने शताब्दी वर्ष की ऐतिहासिक शुरुआत विजयादशमी उत्सव के अवसर पर कालकाजी जिले में भव्य पथ संचलन से की। सुबह 7 बजे से 10 बजे तक आयोजित इस कार्यक्रम में जिले के 12 मंडलों के अंतर्गत 13 स्थानों पर मुख्य मार्गों से अनुशासित पथ संचलन निकाला गया। पूरे आयोजन में उत्साह, अनुशासन और संगठन की अद्वितीय छवि देखने को मिली।

पथ संचलन के दौरान स्वयंसेवकों की पंक्तियों ने अनुशासन और संगठन का परिचय देते हुए क्षेत्र का वातावरण राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत कर दिया। नारी शक्ति, युवाओं और समाज के विभिन्न वर्गों की सक्रिय भागीदारी उल्लेखनीय रही।

प्रत्येक मंडल के कार्यक्रम में संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे, वहीं समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने अतिथि के रूप में मार्गदर्शन किया। वक्ताओं ने कहा कि विजयादशमी उत्सव केवल एक परंपरा नहीं बल्कि संगठन, सेवा और राष्ट्रसमर्पण का

प्रेरणास्रोत है।

जिले के माननीय संघचालक जितेश जी और जिला कार्यवाह अजय जी उपाध्याय ने संघ की पंच परिवर्तन योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए शताब्दी वर्ष को "समाज जागरण का वर्ष" घोषित किया। उन्होंने कहा कि यह समय केवल अतीत की उपलब्धियों को याद करने का नहीं बल्कि भविष्य के संकल्पों को मजबूत करने का है।

वक्ताओं ने संघ की 100 वर्षों की यात्रा का उल्लेख करते हुए बताया कि 1940 से 1975 तक के कालखंड में विभाजन, युद्ध और आपातकाल जैसी परिस्थितियों में संघ ने कठिनाइयों का सामना किया। 1975 से 2000 के बीच संगठन का विस्तार हुआ और विभिन्न संगठनों की नींव रखी गई। 2000 के बाद समाज में व्यापक बदलाव और राम मंदिर निर्माण जैसे ऐतिहासिक निर्णय सामने आए। कोरोना काल में भी संघ ने सेवा कार्यों से समाज का साथ दिया।

संघ के वरिष्ठ वक्ताओं ने कहा कि शताब्दी वर्ष केवल औपचारिक उत्सव का नहीं, बल्कि सेवा, शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास और सामाजिक समरसता जैसे क्षेत्रों में समाज तक पहुँच बढ़ाने का संकल्प वर्ष है।

कार्यक्रम में यह भी उल्लेख किया गया कि संघ के 100 वर्ष पूर्ण होने पर सरकार ने स्मृति सिक्का और डाक टिकट जारी कर विश्वास और सम्मान प्रकट किया है।

पथ संचलन के साथ आयोजित विजयादशमी उत्सव में बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक, महिलाएँ और युवा उपस्थित रहे।जिला प्रचार प्रमुख विजय कुमार ने बताया है कि पथ संचलन में कुल 4780 पूर्ण गणवेशधारी स्वयंसेवकों ने भाग लिया। समाज की सज्जन शक्ति ने फूलों की वर्षा कर स्वयंसेवकों का स्वागत किया। वरिष्ठ संघ अधिकारियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा को और बढ़ाया। विजयादशमी का यह आयोजन न केवल कालकाजी जिले के लिए ऐतिहासिक साबित हुआ, बल्कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष की दिशा और दशा तय करने वाला महत्वपूर्ण पड़ाव भी बना।

क्राइम ब्रांच सेंट्रल रेंज ने मिलावटी देसी घी बनाने वाले गिरोह का किया भंडाफोड़

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। त्योहारी सीज़न के मद्देनज़र दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच सेंट्रल रेंज ने उत्तर-पूर्वी दिल्ली में मिलावटी देसी घी बनाने वाले तीन अवैध कारखानों का पर्दाफाश किया है। विशेष खुफिया सूचना पर शिव विहार, करावल नगर और मुस्तफाबाद में समन्वित छापेमारी की गई। कार्रवाई के दौरान 1,625 किलोग्राम मिलावटी घी बरामद हुआ और 6 आरोपित पकड़े गए।यह अभियान इस आशंका पर चलाया गया कि दशहरा और दिवाली पर बढ़ती मांग का फायदा उठाने के लिए बड़े पैमाने पर घी में मिलावट की जा रही है। कार्रवाई का उद्देश्य जनस्वास्थ्य की रक्षा, खाद्य सुरक्षा मानकों का पालन और बाज़ार में मिलावटी उत्पादों की रोकथाम के लिए की गई थी। इंस्पेक्टर वीर सिंह के नेतृत्व में एसआई अबोध शर्मा, एसआई नवीन दहिया, एएसआई दीप चंद, एचसी मनीष कुमार, एचसी मनोज, एचसी विनोद, एचसी

संजय, एचसी सुकराम पाल, कॉन्स्टेबल सुमित, महिला कॉन्स्टेबल मोनिका, नेहा कौशिक और कल्पना सरोज की टीम ने लगातार तीन छापे मारे। छापे के दौरान 1625 किलो मिलावटी घी, रसायन, दवाइयां एवं अन्य उपकरण बरामद किए गए। इस अवैध कार्य में लगे सफीक, यूनुस मलिक, मेहबूब, शाकीर, शाहरुख, जमालुद्दीन को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

सीधी बात: अगर चौथा स्तंभ कमजोर हो रहा है, तो उसे कोसिए मत, एमजबूत बनाइए – कोरी बातें नहीं, सहयोग चाहिए

मजबूती आती है संसाधनों से,
और संसाधन आते हैं सहयोग से
– नैतिक, सामाजिक और
आर्थिक सहयोग से
यह विडंबना ही है कि हमसे
अपेक्षा की जाती है कि हम हर
सामाजिक गतिविधि को
प्राथमिकता दें – लेकिन जब
विज्ञापन की बात करते हैं, तो हमें
ही दोषी ठहरा दिया जाता है – कि
मीडिया बिक गया है, पत्रकार
बिक गए हैं, चौथा स्तंभ कमजोर
हो गया है?

नई दिल्ली, संजय साग़र सिंह। देश का लोकतंत्र चार स्तंभों पर खड़ा है – विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और मीडिया। मीडिया, जिसे चौथा स्तंभ कहा जाता है, आज अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। बात केवल पत्रकारिता की नहीं है, बल्कि उन मूल्यों की है जो इसे जिंदा रखते हैं – ईमानदारी, स्वतंत्रता और जनसेवा। लेकिन सवाल यह है कि क्या सिर्फ़ उम्मीदों से कोई संस्थान जीवित रह सकता है?

हम बात करते हैं पत्रकारों की, उन अख़बारों की जो न तो सरकार से कोई विशेष अनुदान पाते हैं, न ही माफियाओ एवं कॉर्पोरेट जगत की चापलूसी करके अपना पेट पालते हैं। इनकी कमाई का एकमात्र साधन होता है जनसहयोग और विज्ञापन और यही वह बिंदु है जहाँ सारा संकट शुरू होता है।

हमसे हर कोई अपेक्षा करता है कि हम हर सामाजिक गतिविधि को प्राथमिकता दें – चाहे वह रक्तदान शिविर हो, सत्संग हो, या फिर भंडारा। हमसे कहा जाता है कि ये सब समाज सेवा है और इन्हें 'निःशुल्क' प्रकाशित किया जाना चाहिए। लेकिन सवाल यह है कि जब पत्रकार कार्यक्रम में शामिल होने जाता है, तो क्या वह पैट्रोल फ्री में भरवाता है? क्या चाय-समोसे में ही उसकी मेहनत का मूल्य अदा हो जाता है?

क्या हम पैट्रोल पंप वाले से कहें – समाज सेवा कर रहे हैं, फ्री में तेल दे दो? क्या बाइक रिपेयर वाले से कहें – ख़बर के लिए निकले थे, पैसे नहीं हैं?

क्या मोबाइल ऑपरेटर या बिजली विभाग से कहा जा सकता है – समाचार लिखा है, बिल माफ कर दो? और अंत में, क्या अख़बार के मालिक से कहा जाए – आज भी बिना विज्ञापन के न्यूज़ छपी है, लेकिन सैलरी दे दीजिए?

यह विडंबना ही है कि हमसे अपेक्षा की जाती है कि हम समाज के लिए सब कुछ करें, लेकिन समाज हमारे लिए कुछ न करे। और जब हम संसाधनों की बात करते हैं, जब विज्ञापन की बात करते हैं, तो हमें ही दोषी ठहरा दिया जाता है - कि मीडिया बिक गया है, पत्रकार बिक गए हैं, चौथा स्तंभ कमजोर हो गया है।

तो साहब, सीधी बात ये है – अगर चौथा स्तंभ कमजोर हो रहा है, तो उसे कोसिए मत, मजबूत कीजिए। मजबूती आती है संसाधनों से, और संसाधन आते हैं सहयोग से – नैतिक, सामाजिक और आर्थिक सहयोग से।

आज समय आ गया है जब हमें केवल समाचार भेजने वालों की नहीं, विज्ञापन और सहयोग करने वालों की भी आवश्यकता है। पत्रकारिता कोई 'शौक' नहीं, बल्कि एक पूरा समर्पित पेशा है, जिसमें समय, श्रम और संसाधन की भारी आवश्यकता होती है। और जैसे हर पेशे का मेहनताना होता है, वैसे ही पत्रकारिता का भी होना चाहिए।

इसलिए अगली बार जब आप कोई समाचार भेजें, तो उसके साथ थोड़ा सहयोग भी भेजें – चाहे वह छोटा विज्ञापन हो या कार्यक्रम में पत्रकार के लिए न्यूनतम सुविधा की व्यवस्था। क्योंकि बिना ईंधन के गाड़ी नहीं चलती, और बिना सहयोग के पत्रकारिता।

सीधी बात, इधर-उधर की बातें न करें – बस इतना बताइए, हम पत्रकार आखिर किससे कहें...?

कंज्यूमर ड्यूरेबल्स के लिए नया ब्लू प्रिंट खाका, उपभोक्ताओं और धरती के उज्ज्वल भविष्य को आकार देना

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। भारत के सबसे विश्वसनीय कंज्यूमर इलेक्ट्रिकल ब्रांड्स में से एक, टिकाऊ व नवाचारी कंज्यूमर ड्यूरेबल उत्पादों में अग्रणी, क्रॉम्पटन ग्रीव्स कंज्यूमर इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (सीजीसीईएल), ने एक दूरदर्शी 'सस्टेनेबिलिटी एक्शन रोडमैप' की घोषणा की है।

यह रोडमैप कंपनी की संपूर्ण वैल्यू चेन यानि फैक्ट्री से लेकर सप्लाई चेन और उत्पाद के उपयोग तक को एकीकृत करता है। इस सुसंगठित पहल के माध्यम से कंपनी ने लो-कार्बन और फ्यूचर रेडी कंज्यूमर ड्यूरेबल बिज़नेस की दिशा में एक निर्णायक कदम उठाया है।

क्रॉम्पटन के प्रयासों को पहले ही वैश्विक स्तर पर मान्यता मिल चुकी है। कंपनी को एसएंडपी ग्लोबल कॉरपोरेट सस्टेनेबिलिटी असेसमेंट (सीएसए) रैंकिंग 2024 में हाउसहोल्ड ड्यूरेबल्स सेक्टर में विश्व स्तर पर चौथा स्थान मिला है।

इसके साथ ही एसएंडपी ग्लोबल सस्टेनेबिलिटी ईयरबुक 2025 में भी शामिल किया गया है, जिससे कंपनी शीर्ष सतत प्रदर्शनकर्ताओं में जगह बनाने में सफल हो गई है।

इस विजन को आगे बढ़ाते हुए, कंपनी का मानना है कि पर्यावरण के प्रति जागरूक निर्णय लेना न केवल एक जिम्मेदारी है, बल्कि बेहतर व्यावसायिक परिणामों की तरफ भी ले जाता है- जिससे नवाचार, ऊर्जा दक्षता, उत्पाद भिन्नता और उपभोक्ता जुड़ाव के नए अवसर मिलते है।

कंपनी सौर ऊर्जा क्षेत्र में भी अपनी उपस्थिति को मज़बूत कर रही है और सक्रिय रूप से सौर पंप टेंडरों में भाग लेकर अपनी सोलर पोर्टफोलियो का निर्माण कर रही है तथा साथ ही एक मजबूत सोलर रूफटॉप और सोलर लाइटिंग व्यवसाय का विकास कर रही है।

इन प्रयासों को कंपनी के विनिर्माण संयंत्रों में सौर ऊर्जा के सक्रिय उपयोग से आगे बढ़ाया जाएगा, सबसे पहले उन संयंत्रों से शुरू करते हुए जहाँ कार्बन उत्सर्जन सबसे अधिक है, और धीरे-धीरे अन्य संयंत्रों को भी इसमें शामिल किया जाएगा।

इसके साथ ही, क्रॉम्पटन द्वारा सस्टेनेबल सप्लाई चेन कोड ऑफ कंडक्ट तैयार किया जा रहा है, जिसके तहत आपूर्तिकर्ताओं को भी उत्सर्जन ट्रैकिंग और सुधार ढांचे में शामिल किया जाएगा- इस प्रकार आंतरिक संचालन से परे जलवायु कार्रवाई का दायरा बढ़ेगा।

इसके साथ ही, हम अपने उत्पादों के पर्यावरणीय प्रभाव के प्रति सजग हैं। उद्योग में अग्रणी होने के नाते, हमारा संकल्प है कि हम ऐसे उत्पाद प्रस्तुत करें जो बदलती उपभोक्ता प्राथमिकताओं के अनुरूप हों और एक हरित भविष्य का मार्ग प्रशस्त करें। इसके साथ ही, नियामकों के साथ मिलकर भविष्य के पर्यावरणीय मानकों को परिभाषित करने में भी योगदान दें।"

उन्होंने आगे कहा, "अब हमारा ध्यान एक मजबूत वैल्यू चेन विकसित करने, जीएचजी स्कोप 1 और 2 उत्सर्जन कम करने, प्रति यूनिट बिक्री पर उत्सर्जन तीव्रता घटाने और उत्पाद विकास के हर चरण में स्थिरता को शामिल करने पर है। हम सततता को केवल एक जिम्मेदारी के रूप में नहीं देखते, बल्कि इसे स्मार्ट विकल्प, तीक्ष्ण नवाचार, उत्पाद में भिन्नता और उपभोक्ता जुड़ाव को प्रेरित करने वाला एक प्रमुख कारक मानते हैं। व्यवसाय में सफलता और शेयरधारकों के हित में कार्य करना, सीधे-सीधे ग्रह और पर्यावरण के हित में कार्य करने से जुड़ा है। हमारा मिशन स्पष्ट है: — पारदर्शिता, मापनीयता और जिम्मेदारी के साथ लचीला व्यवसाय मॉडल तैयार करना तथा भारत में कंज्यूमर ड्यूरेबल्स के लिए एक नया खाका तैयार करने में योगदान देना। हमारे पास इस यात्रा को आगे बढ़ाने की पर्याप्त क्षमता और संसाधन हैं, जिससे हम उपभोक्ताओं को सतत उत्पाद उचित मूल्य पर प्रदान कर सकें।"

जीवन तो है धन्य वही, जब कोई कर्ज न होय

मोहन मंगलम

मनुष्य को सृष्टिकर्ता की सर्वश्रेष्ठ कृति मानने वालों की कमी नहीं है। पर, वे यह नहीं जानते कि मानव योनि में जन्म लेने भर से कोई मनुष्य की श्रेणी में नहीं आ जाता। मनुष्य को मनुष्य बनना पड़ता है। मनुष्यता प्रमाणित करनी पड़ती है। जो मनुष्य अपनी मनुष्यता को प्रमाणित नहीं कर सकता, उसमें और पशु में भला क्या अन्तर है?

वैदिक चिन्तन में जन्म लेने वाला ऋण-स्वरूप होता है। स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मान कर व्यक्ति दंभी न हो जाए - संभवतया यही सोचकर व्यक्ति को ऋण-स्वरूप कहा गया है। यह एक खुली चुनौती भी है कि 'हे मानव तू तो ऋण है- ऋण से धन बन जा, धन्य बन जा।' एक बार यह बात समझ में आ जाने पर व्यक्ति अपने जीवन का एक-एक दिन, एक-एक क्षण ऋण से मुक्त होकर धन्य बनने में ही बिताना चाहेगा। यही सक्रियता मनुष्य को पुरुषार्थी बनाती है।

सुविधाएँ जुटाई जा सकती हैं। सुख-साधन बटोरे जा सकते हैं, पर इनसे कोई व्यक्ति धन्य या धनवान नहीं बन सकता। धन्य तो सद्गुणों से बना जाएगा, सत्कर्मों से बना जाएगा, सद्भावों से बना जाएगा। सत्कर्म सीमित साधनों से भी किए जा सकते हैं। सद्भाव भी बाह्य उपकरणों पर निर्भर नहीं रहते।

स्मृतिकारों ने बहुत सोच-समझ कर तीन ऋणों की कल्पना की है - देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण। देव-यज्ञ करके देव ऋण से मुक्ति पाई जा सकती है। ज्ञानार्जन और विद्यादान करके ऋषि ऋण से मुक्ति पाई जा सकती है। इसी तरह सुयोग्य और संस्कारशील सन्तान के द्वारा पितृ ऋण से मुक्ति पाई जा सकती है।

ऋणमुक्त होकर जीने की कल्पना अपने आप में आनन्दायिनी है। व्यक्तित्व के विकास की कसौटी है ऋणमुक्त होना। ऋण के भार से आक्रान्त होकर न लोक में अभ्युदय का आनन्द लिया जा सकता है और न आध्यात्मिक क्षेत्र में सन्तोष प्राप्त किया जा सकता है।

ऋण से निर्भार हों तब छोटे-बड़े सब दायित्वों को ग्रहण किया जा सकता है, निभाया जा सकता है। इस लोक का ऋण तो पितृ ऋण है। माता-पिता ने जन्म दिया। संस्कार देकर योग्य बनाया। कष्ट सहे। सपनों का संसार दिया। उनका ऋण चुकाने के लिए माता-पिता की सेवा-शुश्रूषा करें। साथ ही उनके द्वारा प्रशस्त किए मार्ग पर चलते हुए सुसन्तान द्वारा परम्परा को आगे बढ़ाएं। परिवार का निर्माण करें। पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह करें। सुन्दर समाज का निर्माण करें। उसके दायित्वों को निभाएं।

दूसरा ऋण ऋषियों का है। इसे दूसरे लोक का ऋण कहा गया है। कर्म की प्रेरणा ऋषि-मुनियों के वचनों से मिलती है। यह बहुत बड़ा ऋण है। उस परम्परा को आगे बढ़ाकर और उसमें अपनी ओर से और वृद्धि करके दूसरे लोक से ऋणमुक्त होना सम्भव है।

तृतीय लोक भावनाओं का है। यह दिव्य लोक है। सद्भावों का विस्तार करके तृतीय लोक में ऋणमुक्त हुआ जा सकता है। प्रत्येक मनुष्य अपने मनोराज्य में जीता है, मनोयोग-पूर्वक कर्तव्य कर्म करता है।

मनोराज्य भावलोक ही हुआ करता है।

जीवन बहुरंगी है। जो जैसे जीना चाहे, जिए। पर ऋण-भार से आक्रान्त होकर जीना बड़ी कष्ट-कल्पना है। ऋणमुक्त होकर जीना ही जीवन की सार्थकता है। ऋणमुक्त होने पर साधक धनयुक्त हो जाता है। धनयुक्त होना ही धन्य होना है- धनवान होना है। वह मान-धन, यशोधन, ज्ञान-धन बन जाता है। वह विद्या पाकर धनी हो जाता है।

सत्य, सन्तोष, करुणा, दया, सेवा, सहानुभूति, परहितरति आदि मानवीय गुण अर्जित करके ही मनुष्य अपनी मनुष्यता को प्रकट करता है। इन गुणों से हो चरित्र बनता है। चारित्रिक दीप्ति प्रकट होती है। चारित्रिक दीप्ति से संपन्न व्यक्ति धनवान या धन्य बनता है। सन्तोष के विषय में कहा गया है-

गोधन, गजधन, वाजिधन और रतनधन खान।
जो आए सन्तोष धन, सब धन धूरि समान।।

सर्वश्रेष्ठ धन ही विद्या है। विद्या प्राप्त करके मनुष्य विद्वान बनता है। विद्या ऐसा धन है जो बाँटने से अधिकाधिक बढ़ता है। भर्तृहरि का कहना है कि विद्या मनुष्य का सौन्दर्य है, छिपा हुआ धन है। विद्या भोगदात्री है, यश और सुख प्रदान करने वाली है। विद्या विदेश में बन्धुजन है। विद्या परा देवता है। विद्या ही राजाओं में पुजती है, धन नहीं। विद्या के बिना पुरुष पशु ही है।

व्यक्ति धनवान से धन्य कैसे बनता है - यह सब जानते हैं। इसके उपरान्त भी सांसारिक प्रपंचों में फंसे रहते हैं। धनी नहीं होना चाहते। चाहते तो हैं; पर प्रयत्न नहीं करते।

लोग सपनों की पूंजी या धन की बात भी करते हैं मगर यूं ही कोई धनी नहीं हो जाता। ज्ञान, कर्म और भाव के स्तर पर सपने देखते रहने से सत्प्रयास करके - ऋणमुक्त होकर व्यक्ति धनी या धन्य बनता है। सारा जीवन ऋण से धन बनने को साधना में लगाया करते हैं उत्तम साधक। नासमझ लोग जीवनभर ऋण के भार से ग्रस्त रहते हैं और धन्य होने का अवसर खो देते हैं। ऋण रूप ही जन्मे और ऋण रूप ही मर जाते हैं। श्रेष्ठ जीवन वह है जिसे जीकर साधक धन्य-धन्य हो जाए -

ऐसे जीने से क्या भला, जब अर्थ सधे न कोय।
जीवन तो है धन्य वही, जब कोई कर्ज न होय।।

श्रीकृष्ण काली धाम में पूर्णाहुति और कन्या पूजन के साथ संपन्न हुआ 10 दिवसीय शतचण्डी महामहोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गोपीनाथ बाजार स्थित श्रीकृष्ण काली धाम में श्री कृष्ण काली पीठ धर्मार्थ सेवा ट्रस्ट के द्वारा शारदीय नवरात्रि के उपलक्ष्य में चल रहा 10 दिवसीय शतचण्डी महामहोत्सव अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर हुए वृहद यज्ञ में कृष्ण काली पीठाधीश्वर डॉ. केशवाचार्य महाराज के आचार्यत्व में अनेक सन्तों,विप्रों-प्रतिष्ठित जनों एवं भक्त श्रद्धालुओं ने पूर्णाहुति दी।तत्पश्चात सैकड़ों कन्याओं का पूजन-अर्चन करके उन्हें भोजन प्रसाद ग्रहण कराया गया।साथ ही उन्हें दक्षिणा, वस्त्र एवं उपहार आदि वितरित किए गए।

महोत्सव के मुख्य अतिथि मथुरा-वृन्दावन क्षेत्र के विधायक पण्डित श्रीकान्त शर्मा ने कहा कि मैं श्रीकृष्ण कालीपीठ के दर्शन कर अभिभूत हो गया। साथ ही मुझे यहां दिव्य परमाणुओं की अनुभूति हुई। ऐसे धर्मस्थलों से ही पृथ्वी पर धर्म व अध्यात्म का अस्तित्व है।

श्रीकृष्ण काली पीठाधीश्वर डॉ. केशवाचार्य महाराज ने कहा कि श्रीकृष्ण काली पीठ में प्रतिवर्ष दोनों नवरात्रि में विश्वशांति एवं विश्वकल्याणार्थ शतचण्डी महायज्ञ का आयोजन किया जाता है। यह महोत्सव पिछले लगभग 50 वर्षों से आयोजित हो रहा है। इसमें देश के विभिन्न प्रान्तों के असंख्य भक्त-श्रद्धालु अपनी-अपनी सुविधानुसार आते हैं। यहाँ जो जिस कामना से आता है, उसकी वह कामना काली मैय्या निश्चित ही पूरा करती हैं।

पद्मश्री कृष्ण कन्हाई चित्रकार एवं रूपी रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि सर्वशक्ति स्वरूपा मां दुर्गा जन-जन की आराध्य हैं। इसीलिए दोनों नवरात्रि में इनकी पूजा-अर्चना न केवल अपने देश के प्रत्येक कोने में अपितु समूचे विश्व में होती है। हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान तक में 51 शक्तिपीठों में से एक हिंगलाज माता का मंदिर है। यह स्थान अत्यन्त चमत्कारिक है,इसीलिए इस स्थान के प्रति हिंदुओं के अलावा मुस्लिमों में भी गहरी आस्था है।

उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के अध्यक्ष व पूर्व मंत्री रविकांत गर्ग एवं एम.एल.सी. ओमप्रकाश सिंह ने कहा कि श्रीकृष्ण काली पीठ श्रीधाम वृन्दावन का प्राचीन एवं सिद्ध स्थल है।इसीलिए यहाँ की सारे देश में मान्यता है।

महोत्सव में मथुरा-वृन्दावन नगर निगम के उपसभापति मुकेश सारस्वत, पूर्व पालिकाध्यक्ष पण्डित मुकेश गौतम, प्रमुख समाजसेवी पण्डित राधाकृष्ण पाठक, पूर्व प्राचार्य डॉ. विनोद बनर्जी, गीता शोध संस्थान एवं रासलीला अकादमी के कोऑर्डिनेटर सी.पी. सिंह सिकरवार, पूर्व पार्षद हेमंत भारती, भीमसेन अग्रवाल (चक्की वाले), दानबिहारी खंडेलवाल, विष्णु दान शर्मा, आदित्य आचार्य, युवा साहित्यकार राधाकांत शर्मा, भाजपा नेत्री श्रीमती सरोज गोला, श्रीमती कल्पना आचार्य आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

श्रीकृष्ण कृपा धाम में त्रिदिवसीय शरदोत्सव 04 अक्टूबर से

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। परिक्रमा मार्ग स्थित श्रीकृष्ण कृपा धाम में त्रिदिवसीय दिव्य व भव्य शरदोत्सव का आयोजन 04 से 06 अक्टूबर 2025 पर्यंत महामंडलेश्वर गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज के पावन सानिध्य में विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया गया है।

शरदोत्सव के मीडिया प्रभारी डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि महोत्सव का शुभारंभ 04 अक्टूबर को अपरान्ह 3 बजे संतों व विद्वानों के द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ होगा।तत्पश्चात संत आशीर्वचन का कार्यक्रम आयोजित होगा।रात्रि 8 बजे से सरस भजन संध्या होगी।जिसमें प्रख्यात भजन गायक सुप्रसिद्ध भजन गायक महावीर शर्मा (दिल्ली) एवं रतन रसिक (मुजफ्फरनगर) श्रीराधा कृष्ण की महिमा से ओतप्रोत भजनों की प्रस्तुतियां देंगे।

05 अक्टूबर को प्रातः 10 बजे से सन्त, ब्रजवासी वैष्णव सेवा (वृहद भंडारा) एवं महंतों का सम्मान आदि के आयोजन होंगे।अपरान्ह 3 बजे से वृहद संत-विद्वत सम्मेलन होगा।जिसमें महामंडलेश्वर कार्ष्णि स्वामी गुरुशरणानंद महाराज के अलावा कई प्रख्यात संत, विद्वान एवं धर्माचार्य आदि भाग लेंगे।तत्पश्चात भजन संध्या में बाबा चित्र-विचित्र महाराज अपने भजनों की प्रस्तुति देंगे।

इसके अलावा 06 अक्टूबर को प्रातः 5 बजे से श्रीधाम वृन्दावन की पंच कोसी परिक्रमा देश के विभिन्न प्रांतों से आए असंख्य भक्तों व श्रद्धालुओं के द्वारा गाजे-बाजे के साथ लगाई जाएगी।साथ ही समूचे परिक्रमा मार्ग पर सफाई अभियान श्रीकृष्ण कृपा धाम के भक्त परिकर के द्वारा चलाया जाएगा।

मीडिया प्रभारी डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि महोत्सव के अंतर्गत निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया जाएगा।साथ ही संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा (भंडारा) आदि के आयोजन भी संपन्न होंगे।

श्रीकृष्ण कृपा धाम के प्रबंधक वासुदेव शरण महाराज व शक्ति स्वरूप ब्रह्मचारी ने सभी भक्तों और श्रद्धालुओं से इस महोत्सव में शामिल होने का अनुरोध किया है।

बेटी : घर-आँगन की शान

डॉ. क्षमा पाटले 'अनंत'

(अंतर्राष्ट्रीय साहित्यकार, समाजसेवी एवं फिल्म प्रोड्यूसर)

दुनिया कहती बेटियों का, कोई घर नहीं होता,
मैं कहती हूँ बेटी के बिना, घर कभी घर नहीं होता।

माँ-बाप का मान बढ़ाती, बचपन से ही संवारती,
यौवन में दो कुलों को, अपनी शक्ति से तारती।

ससुराल में सहती ताने, सास-ननद के व्यवहार,
मायके पर न आये आँच, सह लेती दुख अपार।

दुर्गा-लक्ष्मी शक्ति स्वरूप, फिर भी अबला कहलाती,
कुछ मजबूरी, कुछ सपनों से, बेटियाँ बिखर जाती।

नूर है घर-आँगन का, जननी है जीवन की,
फिर क्यों बंधन जंजीरों में, बेड़ियाँ हर क्षण की।

आये दिन अपराध बढ़े, बेटियाँ हो रही शिकार,
रेप, हत्या, जलती देह — समाज करे क्यों अत्याचार?

बचपन से ही रोक-टोक, कदम-कदम पर पहरे,
बेटियों को दो अधिकार, ऊँचाइयों तक बढ़ने।

अबला नहीं, बलवान बनाओ, दो आत्मविश्वास,
कुंग-फू, कराटे, तीर-कमान, बंदूक का भी हो अभ्यास।

तभी न समझो बोझ उन्हें, होंगी वे आत्मनिर्भर,
गर्व करो अब बेटियों पर, बढ़ेंगी जग में निर्भय।

जल, थल, नभ सब क्षेत्र में, बेटियाँ झंडा गाड़ें,
घर-आफिस-संसद भवन, इनसे ही शोभा सारे।

संस्कृति का श्रृंगार यही, परिवार की पहचान,
बेटियाँ हैं तो जीवन है, वरना बंजर जहान।

रक्षमाः करती विनती सुनो — मत कोख में उनको मारो,
बेटियाँ ही खुशहाल करें, इस दुनिया का हर द्वार खोलो।

शारदीय नवरात्र में मुजफ्फरपुर जिले के मुरौल प्रखण्ड स्थित बखरी गांव में भव्य श्रीमद्भागवत कथा का हुआ सफल आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

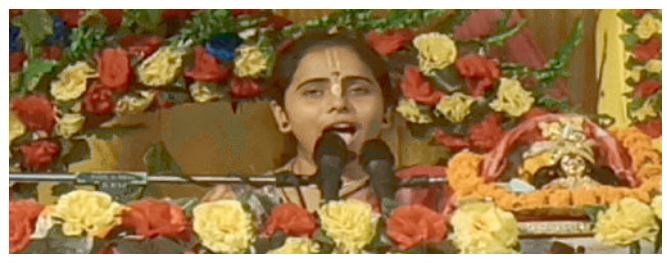

शारदीय नवरात्र के पावन अवसर पर मुजफ्फरपुर जिले के मुरौल प्रखंड अंतर्गत बिशनपुर बखरी पंचायत स्थित रामजानकी मंदिर, बखरी परिसर में दिनांक 23 सितम्बर 2025 से 01 अक्टूबर 2025 तक नौ दिवसीय सामूहिक दुर्गा पूजा महोत्सव का भव्य आयोजन हुआ।

इस अवसर पर दुर्गा पूजा प्रबंधन समिति, बखरी के तत्वाधान में प्रसिद्ध कथा प्रवाचिका निकुंज मंजरी चंचला दीदी द्वारा संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा का दिव्य और भावपूर्ण प्रवचन किया गया।

पूरे नौ दिनों तक श्रद्धालुओं ने भक्ति, श्रद्धा और आस्था के साथ कथा श्रवण किया। प्रतिदिन हजारों की संख्या में भक्तजन कथा पंडाल में उपस्थित होकर भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं, भक्ति के महत्व तथा जीवन मूल्य पर आधारित संदेशों को आत्मसात किया।

दुर्गा पूजा प्रबंधन समिति, बखरी के अध्यक्ष विमलेश पाण्डेय, कोषाध्यक्ष राम किशोर पाण्डेय उर्फ संतोष पाण्डेय, सचिव सुनील कुमार ने इस आयोजन को सफल बनाने हेतु सर्वप्रथम सक्रिय सदस्य मकेश्वर पाण्डेय, विनोद पाण्डेय, रंजीत कुमार, बाबुल पाण्डेय, समस्त ग्रामवासियों, श्रद्धालु भक्तजनों एवं प्रशासन का आभार व्यक्त किया।

उक्त जानकारी देते हुए ग्रामीण सह प्रधान शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू, प्रखण्ड मुरौल सह बिहार की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी टीचर्स ऑफ बिहार के इवेंट लीडर सह डिस्ट्रिक्ट टेक्निकल टीम (दीक्षा) बिहार शिक्षा परियोजना मुजफ्फरपुर केशव कुमार ने कहा कि प्रसिद्ध कथा प्रवाचिका निकुंज मंजरी चंचला दीदी द्वारा संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा का दिव्य और भावपूर्ण प्रवचन किया गया। इस कथा के माध्यम से कथा प्रवाचिका निकुंज मंजरी चंचला दीदी ने कथा प्रेमियों से अपने समाज में भक्ति, सद्भावना और सांस्कृतिक मूल्यों को जीवित रखने का आह्वान किया। केशव कुमार ने कहा कि कथा प्रवाचिका पूजनीय निकुंज मंजरी चंचला दीदी के द्वारा प्रस्तुत संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा का हम सभी ने सपरिवार श्रवण किया। इस कथा के माध्यम से हमें भक्ति ज्ञान एवं जीवन के वास्तविक मूल्य समझने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। कथा प्रवाचिका आदरणीय चंचला दीदी ने अपनी मधुर वाणी से हम सबको अमृतमयी कथा एवं सुंदर भजनों से हमारे हृदय को आलोकित कर दिया। इसके लिए हम कथा प्रवाचिका का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

महावीर व्यायामशाला देवघर में महिलाओं द्वारा सिंदूर खेला का आयोजन

देवघर। स्थानीय एम० आर० टी० चौक स्थित महावीर व्यायामशाला में श्री श्री 108 महावीर व्यायागशाला सार्वजनिक दुर्गा पुजा समिति द्वारा धूमधाम से आयोजित दुर्गा पूजा महोत्सव पर विजयादशमी के अवसर पर सिंदूर खेला गया। जिसमें महिलाओं ने माँ दुर्गा को विदाई देते हुए एक दूसरे को सिंदूर लगाया। और माँ भगवती से सुख-शांति, समृद्धि, निरोग व सुहागन रहने की कामना की। और अगले साल भी माँ भगवती की इसी तरह स्वागत करने हेतू मां से आशीर्वाद मांगा।

उद्योग नगर औद्योगिक क्षेत्र में DSIIDC की नालियाँ बिना कवर की हैं जिनमें पानी रुककर मच्छर पनप रहे हैं। इससे कामगारों को डेंगू जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ गया है। कृपया शीघ्र कार्यवाही करें

भारत में मोबाइल चोरों,जेबकटों, साइबर अपराधियों का दुस्साहस बढ़ा?- केंद्रीय व राज्य गृह विभागों को चुनौती?- सख़्त रणनीति बनाने की ज़रूरत

भारत में मोबाइल चोरों ज़ेबक़टों साइबर क्राइम के अपराधियों को पब्लिक डोमेन में घुमाना समय की मांग-जनता इन्हें पहचान कर सतर्क रहे-**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

भारत में अपराध का स्वरूप पिछले कुछ वर्षों में तेज़ी से बदल रहा है। पारंपरिक हिंसक, अपराधों में जहाँ कुछ गिरावट देखी जा रही है,वहीं तकनीक आधारित अपराध, विशेषकर साइबर अपराध, उभरकर सामने आ रहे हैं और आम नागरिकों के लिए नए-नए खतरे पैदा कर रहे हैं।30 सितंबर 2025 को जारी अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) रिपोर्ट 2023 के आँकड़ों ने इस बदलाव की भयावहता को स्पष्ट कर दिया है-पूरे देश में साइबर अपराधों की संख्या में एक वर्ष में लगभग 31फ़ीसदीं की लगाकर 86,420 मामले दर्ज किए गए हैं,यह केवल आँकड़ा नहीं,बल्कि डिजिटल युग में भरोसे की टूटन और संस्थागत तैयारियों की कमज़ोरी का प्रतीक भी है। यह भी देखा गया है कि राष्ट्रीय औसत के पीछे राज्यों की असमान भागीदारी है-कुछ राज्य (विशेषकर कर्नाटक और तेलंगाना) में केसों की भारी तादाद है।कर्नाटक में21,889 और तेलंगाना में 18,236 साइबर अपराध दर्ज किए गए; पाँच राज्यों,कर्नाटक, तेलंगाना, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र और बिहार,ने मिलकर लगभग तीन- चौथाई साइबर मामलों का बोझ उठाया। जनसंख्या के अनुपात में तेलंगाना शीर्ष पर है, जहाँ प्रति लाख आबादी पर 47.8 मामले दर्ज हुए, जबकि राष्ट्रीय दर 6.2 प्रति लाख तक पहुँच गई (2022 में 4.8 थी)। इन आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि समस्या न केवल संख्यात्मक है, बल्कि भौगोलिक रूप से भी केंद्रीकृत है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र मानता हूं कि शहरी और सार्वजनिक स्थानों पर होने वाले पारंपरिक चोरियों के तरीके आज अधिक परिष्कृत और नेटवर्केड बन गए हैं। मोबाइल-चोरी जेबक़ाट और भीड़ में हाथ साफ कर देने जैसे अपराध अब केवल एक व्यक्ति की चालाकी नहीं रहे; ये अक्सर रैकेट, तकनीक और सोशल इंजीनियरिंग की मिली-जुली रणनीतियों पर आधारित होते हैं। मैंने स्वयं अनुभव किया कि जैसे हैदराबाद/सिकंदराबाद लोकल बसों में जेबकाट की घटनाएँ मेरे सामने हुई, इसी बदलते परिदृश्य का स्थानीय अनुभव हैं जहाँ अपराधी भीड़, ट्रैफ़िक और यात्रियों की निरक्षरता का लाभ उठाकर कम समय में बड़ी वारदात कर लेते हैं।तकनीक का दुरुपयोग बड़े पैमाने पर आर्थिक नुक़सान के लिए हो रहा है, और इसका सीधा असर उन नागरिकों पर पड़ रहा है जो डिजिटल सर्विसेज, नेट-बैंकिंग और मोबाइल वॉलेट का उपयोग करते हैं।

साथियों बात अगर हम क्यों बढ़ रहे हैं मोबाइल-चोरी और साइबर अपराध? इसको समझने की करें तो (क) डिजिटल पैंठ इंटरनेट-बैंकिंग,यूपी-आई,मोबाइल-वॉलेट ई-कॉमर्स और रिमोट-वर्क में तेजी से वृद्धि ने अधिक लेन-देन और डिजिटल पहचान के टुकड़ों की उपलब्धता बढ़ा दी,जो क्रिमिनल्स के लिए फायदा है।(ख)सोशल इंजीनियरिंग और धोखाधड़ी- लोगों की भरोसेमंदी और डिजिटल साक्षरता में कमी का फायदा उठाकर फ़िशिंग, वॉइस-फिशिंग और नकली वेबसाइट/ऑप-ऐप के जरिए पैसे निकाल लिए जाते हैं। (ग) भीड़ और सार्वजनिक परिवहन का अवसर-लोकल बसों, ट्रेन प्लेटफार्मों, भीड़-भाड़ वाले बाजारों में अपराधी हाथ की सफाई बड़ी तेज़ी से करते हैं,पीड़ित को महसूस होने पर तक़रीबन बहुत देर हो चुकी होती है।मेरा हैदराबाद-लोकल अनुभव की तर्ज़ पर ऐसे कई स्थानों पर अपराधी एकदम चुपके से मोबाइल या नकद निकाल लेते हैं। (घ) लॉ इम्प्लीमेंटेशन - गैप-पुलिस और नियामक संस्थाओं की डिजिटल- विशेषज्ञता फास्ट-ट्रेसिंगक्षमता और क्रॉस-जुरिस्डिक्शनल समन्वय सीमित हैं, जिससे अपराधी अक्सर राज्यों के परे जाकर अलग-अलग तरीके अपनाकर बच निकलते हैं।(ङ) आर्थिक-सामाजिक कारण-बेरोज़गारी, असमानता और अपराध नेटवर्क की पेशेवर संरचना भी इस बढ़ती प्रवृत्ति के पीछे है,अपराधी छोटे-छोटे व्यक्तिगत अपराध से संगठनात्मक नेटवर्क तक विकसित हो रहे हैं।

साथियों बात अगर हम क्या अपराधियों को 'पब्लिक डोमेन' में घुमाना चाहिए? नैतिक, कानूनी और व्यावहारिक विचार को समझने की करें तो,मोबाइल चोरों, जेबकाटों और साइबर अपराधियों को सार्वजनिक रूप से घुमाया जाए

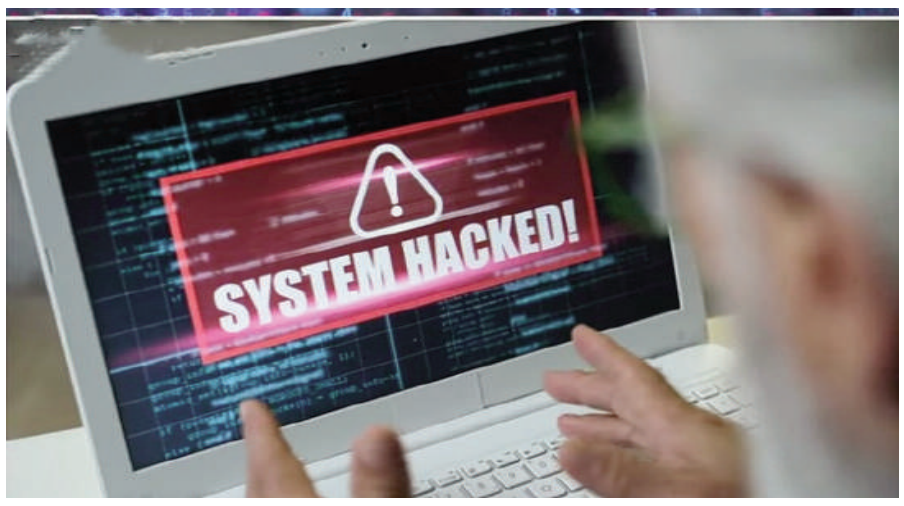

ताकि जनता उन्हें पहचान सके और सतर्क रहे। यह सुझाव भावनात्मक रूप से समझने योग्य है, पीड़ितों की पीड़ा और नाखुशी इस तरह के कड़े कदमों के पीछे प्रेरक हो सकती है। पर इस विचार को लागू करने से पहले कई कानूनी, मानवाधिकार और सुरक्षा- आधारित प्रश्नों का समाधान ज़रूरी है।(1) किसी भी व्यक्ति की पहचान सार्वजनिक करने से पहले यह सैद्धान्तिक और कानूनी सिद्ध होना चाहिए कि वह अपराधी है,गिरफ्तारी, चार्जशीटिंग और अदालत द्वारा दोषसिद्धि से पहले सार्वजनिक पहचान करने से न्यायिक प्रक्रिया पर असर पड़ सकता है और गलत गिरफ्तारियों से निर्दोष लोगों का जीवन तबाह हो सकता है। (2), सार्वजनिक लिंचिंग और सोशल-शेमिंग के खतरे हैं- प्रबंधन के बिना ऐसी नीतियाँ भीड़ द्वारा हिंसा को बढ़ावा दे सकती हैं।(3) निजता और मानवीय गरिमा के अधिकार अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार मानकों के तहत संरक्षित हैं; राज्य को कानून के दायरे में ही कार्य करना चाहिए।फिर भी, 'सार्वजनिक जानकारी' और 'जन-सुरक्षा सूचना' के बीच संतुलन बनाना संभव है और ज़रूरी भी।कई लोकतांत्रिक देश और पुलिस-विभाग पीड़ित-सहायता और सार्वजनिक चेतावनी के लक्ष्य से सीमित, नियंत्रित और न्यायिक अनुमति पर अपराधियों/संदिग्धों की तस्वीरें जारी करते हैं,जैसे कि गिरफ्तारी के बाद 'वांटेड' सूचनाएँ, सीसीटीवी फुटेज, और सक्रिय चेतावनी संदेश। इस तरह के कदम पारदर्शिता, सावधानी और कानूनी मंज़ूरी से किए जाएँ तो वे उपयोगी साबित हो सकते हैं,पर उनके साथ कानून को शर्तें भी लागू हो सकती है।

साथियों बात अगर हम व्यावहारिक विकल्प जो केंद्र और राज्य गृह विभाग के स्तरपर तुरंत लागू किए जा सकते हैं इसको समझने की करें तो (1) स्मार्ट-वांटेड पोर्टल और मोबाइल अलर्ट्स- पुलिस को एक केंद्रीकृत पोर्टल और मोबाइल अलर्ट सिस्टम चाहिए, जहाँ गिरफ्तारी/जांच के बाद, और न्यायिक मंज़ूरी के अनुरूप, स्थानीय रूप से अपराधियों की तस्वीरें और विवरण अपलोड किए जाएँ,ताकि जनता सचेत रहे। यह सिस्टम जीपीएस -आधारित अलर्ट भेजेगा जब कोई 'उच्च-जोखिम क्रिमिनल' किसी नगर के सार्वजनिक परिवहन क्षेत्र में दिखाई दे। (2) लोकल-गीत/ऑडियो-विजुअल जागरूकता अभियानः विशेषकर कम-शिक्षित और बुज़ुर्ग लोगों के लिए रेडियो, लोकल-बसों में पोस्टर और ऑडियो संदेश, जो जेबकाट से बचने, मोबाइल सुरक्षित रखने और नकद न दिखाने के व्यवहारिक उपाय बताते हों।(3) पुलिस-टेक स्किलिंग और साइबर- रैपिड- रिस्पॉन्स यूनिट- हर ज़िले में साइबर-विशेषज्ञों की टीम रखें जो धोखाधड़ी के डिजिटल निशानों को तुरंत ट्रेस कर सके और तत्काल कॉल/बैंक-फ्रीज़ जैसे कदम उठा सके।(4) रेल-और-बस सीसीटीवी- इंटीग्रेशन और पोर्टेबल-रैडारः भीड़-भाड़ वाले मार्गों पर उच्च-रिज़ॉल्यूशन सीसीटीवी व एएनपीआर सिस्टम, और संदिग्ध पैटर्न का एआई -आधारित अलर्ट, जिससे जेबकाट गैंग्स पहले पकड़े जा सकें।(5) तेज़-प्रति-राज्य समन्वय,-गैंग -आधारित अपराध अक्सर राज्यों के पार होते हैं; इसलिए मेटा-डेटा एक्सचेंज, त्वरित गिरफ्तारियों के लिए समन्वय और साझा फोरेंसिक प्लेटफॉर्म अत्यंत आवश्यक हैं।

साथियों बात अगर हम मेरा अनुभव,हैदराबाद- सिकंदराबाद बसों में मोबाइल चोरी,जेबकटों की घटनाएं हुई इसको समझने की करें तो,मेरा अनुभव दर्शाता है कि लोकल बसों में जेबकाट- घटनाएँ सक्रिय हैं। इस स्थानीय स्तरपर तत्काल उपायों मेंशामिल होना चाहिए कि बसों में यात्रियों के लिए सुरक्षा-माइक/सीनल (ड्राइवर/ कंडक्टर हटाने का बटन), सीसीटीवी का इंस्टॉल और नियमित मॉनिटरिंग, यात्री- जागरूकता पोस्टर, और बस स्टैंड पर पुलिस-नाके, साथ ही, बसों के दौरान यात्रियों को सलाह दी जानी चाहिए कि, मोबाइल को अग्रभाग के अंदर जेब में रखें, बैक-पॉकेट और खुले हाथ में नकद न रखें, और भीड़ में बैग को शरीर के सामने रखें। स्थानीय ट्रैवल-अथॉरिटीज को यात्रियों की सुरक्षा को प्राथमिकता बनाना चाहिए और पुलिस- कम्प्लाइंट- काउंटरों को हर मुख्य स्टॉप पर सक्रिय रखना चाहिए।

साथियों बात अगर हम पीड़ित केंद्रित सेवाओं को समझने की करें तो,अक्सर पीड़ितों में शर्म, अनभिज्ञता या प्रक्रियागत जटिलताओं के कारण करीब 50फ़ीसदी से अधिक शिकायत दर्ज नहीं कराते। इसीलिए पीड़ित- केन्द्रित सेवाएँ ज़रूरी हैं-एक-स्टॉप-पॉइंट जहाँ पीड़ित एफआईआर, बैंक-रिपोर्ट, फॉरेंसिक-हेल्प,और साइबर- लॉजिस्टिक्स (जैसे स्टेटमेंट रिट्रीवल, बैंक टेलीकॉम ट्रैस) एक-साथ मिलें। इसके अलावा पीड़ित-काउंसलिंग और फास्ट-रिपेयर (बैंकों के साथ समझौतेः फ्रॉड में फंड रीकवरी-स्टैंडर्ड) भी लागू किए जाने चाहिए।

साथियों बात अगर हम नीति- निर्माण के लिए केंद्र एवं राज्य के लिए प्रस्तावित रोडमैप को समझने की करें तो (1)कानूनी स्पष्टताऔरमानक-ऑपरेशनल-प्रोसीजर-जब पुलिस किसी अपराधी की पहचान सार्वजनिक करे, तो किन शर्तों पर और किस समय पर जानकारी जारी होगी इसका संसद/स्टेट लॉ-विभाग द्वारा नियमावलियाँ तय हों।(2)साइबर-फास्ट-ट्रेसिंग नेटवर्कः बैंक, टेक कंपनियों और पुलिस के बीच रीयल-टाइम डेटा-शेयरिंग एमओयू और एपी आई.(3) जन-जागरूकता मिशनः विद्यालय, वृद्धाश्रम, रेलवे, बस स्टेशनों पर सुसंगठित अभियान(4)साइबर-रैपिड-रिस्पॉन्स-फण्डः पीड़ितों के लिए तात्कालिक वित्तीय सहायता और बैंकों के साथ सहमति द्वारा फंड का आंशिक क्लेम।(5)इंटर-स्टेट गैंग-बस्टिंग यूनिटः जेबकाट/रैकेट-ऑपरेशन के विरुद्ध संयुक्त कार्यनीति।(6)राज्य के साथ-साथ नागरिकों की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है। पड़ोस-निगरानी, सार्वजनिक- शिक्षा सेशन,और 'सुरक्षित-यात्री' स्वैच्छिक कार्यक्रम लोकल स्तर पर बहुत प्रभाव डाल सकते हैं। लोगों को सिखाना चाहिए कि वे किस तरह संदिग्ध गतिविधि रिपोर्ट करें, किस तरह बैंक/टेलीकॉम को तुरंत अलर्ट करें, और कैसे व्यक्तिगत डिजिटल- हैबिट्स बदलकर जोखिम कम कर सकते हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि मोबाइल चोरों, जेबकाटों और साइबर अपराधियों की बढ़ती दुस्साहसियत केवल पुलिस या सरकार का अकेला विषय नहीं है; यह समाज, टेक्नोलॉजी- कंपनियाँ, बैंकिंग-इंडस्ट्री और नागरिकों का संयुक्त संकट है। एनसीआरबी के हालिया आँकड़े 86,420 साइबर मामलों में 31फ़ीसदी की वृद्धि; राज्यवार असमानता; धोखाधड़ी का बढ़ता हिस्सा बतलाते हैं कि समस्या तेज़ी से गंभीर होती जा रही है और उसे बहु-आयामी नीतियों से ही रोका जा सकता है। 'पब्लिक- डोमेन में घुमाना' जैसा उपाय भावनात्मक समझदार हो सकता है पर उसे बिना सूचित कानूनी ढाँचे और सुरक्षा-गारंटी के लागू नहीं करना चाहिए,गलतियाँ और दमन दोनों का जोखिम वहाँ अधिक है।

यदि अफगानिस्तान बगराम एयरबेस को अमेरिका को नहीं देता, तो लेने के देने पड़ सकते हैं?

कमलेश पांडेय

अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने हाल ही में दिए अपने एक बयान में साफ़ कहा है कि उनका प्रशासन अफगानिस्तान स्थित बगराम हवाई अड्डे को फिर से अपने नियंत्रण में लेने की कोशिश कर रहा है। दरअसल, ट्रंप ने प्रेस कॉन्फ्रेंस और सोशल मीडिया पर बयान देते हुए तालिबान को चेतावनी दी है कि यदि अफगानिस्तान ने यह एयरबेस अमेरिका को वापस नहीं दिया तो उसे गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। इससे सवाल उठता है कि यदि अफगानिस्तान बगराम एयरबेस को अमेरिका को नहीं देता, तो अफगानिस्तान को लेने के देने पड़ सकते हैं?

दरअसल, दुनिया के थानेदार ट्रंप ने तर्क दिया है कि बगराम एयरबेस की भौगोलिक स्थिति अफगानिस्तान, ईरान, पाकिस्तान, भारत, तजाकिस्तान, उज़्बेकिस्तान, चीन और रूस आदि पूर्व एशियाई, मध्य एशियाई और दक्षिण एशियाई देशों से नजदीकी के कारण अमेरिका की सुरक्षा और निगरानी के लिए अत्यंत जरूरी है। यही वजह है कि

ट्रंप ने तर्कसम्मत तरीके से कहा कि, ₹हम इसे वापस लेने की कोशिश कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें भी हमसे चीजें चाहिए। इसलिए हम उस बेस को वापस चाहते हैं।₹ उनका तर्क है कि यह एयरबेस न सिर्फ अफगानिस्तान के लिए नहीं, बल्कि चीन व रूस आदि के गठजोड़ की वजह से भी उनके लिए जरूरी है, क्योंकि यह चीन के परमाणु प्रतिष्ठानों के नजदीक है। उनके मुताबिक, बगराम एयरबेस चीन की मिसाइल बनाने वाली जगह से सिर्फ एक घंटे की दूरी पर है।

उल्लेखनीय है कि बगराम का भू-राजनीतिक स्थान अफगानिस्तान के उत्तर में, काबुल से लगभग 40-60 किमी दूर पारवान प्रांत में है, जो मध्य, दक्षिण और पश्चिम एशिया के संगम पर बैठता है। इसका स्थान इसे क्षेत्रीय ₹ग्रैंड चेसबोर्ड₹ यानी सामरिक संतुलन की चाबी बना देता है—जहाँ से अफगानिस्तान, पाकिस्तान, ईरान, चीन (विशेषकर शिंजियांग क्षेत्र), और मध्य एशिया के देशों (जैसे ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान) तक निगरानी और पहुंच बनाना बहुत आसान है।

इसकी भू-राजनीतिक स्थान की विशेषता अहम है।

सलांग दर्रे और टनल के करीब होने से यह आधार अफगानिस्तान के उत्तर-दक्षिण गलियारे और मध्य एशिया तक रणनीतिक पहुँच प्रदान करता है। यहाँ से पश्चिम में ईरान, पूर्व में पाकिस्तान, उत्तर में मध्य एशिया, और उत्तर-पूर्व में चीन तक अमेरिकी या किसी भी ताकत की त्वरित कार्रवाई मुमकिन हो जाती है। वहीं, चीन के शिंजियांग क्षेत्र की दूरी बगराम से एक घंटे की फ्लाइट में तय होती है, जहाँ चीन की न्यूक्लियर सुविधाएँ और बेल्ट एंड रोड प्रोजेक्ट्स केंद्रित हैं।

जहां तक इस जगह से पड़ोसी देशों पर प्रभाव डालने का सवाल है तो यह कहा जा सकता है कि बगराम का अमेरिकी या किसी विरोधी शक्ति के पास होना चीन के लिए सुरक्षा संबंधी खतरा बन जाता है, खासकर शिंजियांग और लोप नूर न्यूक्लियर साइट्स तक इसकी पहुँच के कारण। इससे चीन-अमेरिका संबंधों में तनाव भी बढ़ सकता है।

वहीं, पाकिस्तान के हिसाब से यहाँ से ड्रोन या निगरानी अभियानों की आशंका बढ़ती है और पाकिस्तान के रणनीतिक गहरे प्रभाव क्षेत्र पर अमेरिकी हस्तक्षेप संदेहास्पद बन जाता है।

वहीं, बगराम के कारण अमेरिका को ईरानी गतिविधियों और उसके पश्चिमी बॉर्डर पर निगरानी में बड़ी सहूलियत मिलती है, जिससे क्षेत्रीय प्रतिस्पर्द्धा तेज हो सकती है।

जबकि मध्य एशियाई देशों- उज्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, और तुर्कमेनिस्तान जैसे देश बगराम बेस के कारण क्षेत्रीय शक्ति संतुलन, आतंकवाद दमन, और पश्चिमी सुरक्षा छत्र के दबाव में रहते हैं।

जहां तक भारत की बात है तो भारत के लिए बगराम सामरिक दृष्टि से लाभकारी है क्योंकि यहाँ से अमेरिकी सहयोग से क्षेत्रीय आतंकवाद और पाक समर्थित नेटवर्क्स पर निगरानी संभव है। वहीं, अफगानिस्तान और मध्य एशिया में रूसी हित भी इससे प्रभावित होते हैं क्योंकि रूस का पारंपरिक प्रभाव क्षेत्र यहाँ तक है। संक्षिप्त रूप में, बगराम का स्थान विश्व राजनीति के शक्ति संघर्ष में, खासकर चीन, रूस, ईरान, पाकिस्तान और भारत के पारस्परिक समीकरण में प्रमुख भूमिका निभाता है। क्योंकि बगराम के नियंत्रण से इन देशों के रणनीतिक फैसलों और क्षेत्रीय स्थिरता पर गहरा असर पड़ता है।

उल्लेखनीय है कि अपने चुनाव अभियान और कैबिनेट मीटिंग में भी ट्रंप ने कई बार कहा है कि बगराम एयरबेस अमेरिका को मिलना चाहिए क्योंकि इसे अमेरिकी सेना ने बनाया और विकसित किया था। यही वजह है कि ट्रंप ने सोशल मीडिया पर तालिबान को सीधे तौर पर धमकी दी हैः ₹अगर अफगानिस्तान बगराम एयरबेस को अमेरिका को नहीं देता, तो बुरी चीजें होने वाली हैं।₹ वहीं, जवाबी प्रतिक्रिया देते हुए तालिबान प्रशासन ने ट्रंप के दावों और मांगों को पूरी तरह खारिज करते हुए कहा है कि अफगानिस्तान अपनी एक इंच जमीन भी किसी को नहीं देगा और बगराम हवाई अड्डे पर केवल अफगानिस्तानी नियंत्रण है और रहेगा।

तालिबान सरकार की ओर से प्रतिक्रिया देते हुए उनके अधिकारी और प्रवक्ता ज़बीहुल्लाह मुजाहिद ने ट्रंप की मांग को पूरी तरह ठुकरा दिया और कहा कि, ₹हम अपनी एक मीटर जमीन भी अमेरिका को नहीं देंगे। ट्रंप को 'यथार्थवादी और विवेकपूर्ण' नीति अपनानी चाहिए।₹ इससे पहले

तालिबान की कंधार में एक उच्च स्तरीय बैठक हुई जिसमें सभी सैन्य और कैबिनेट अधिकारी शामिल थे, और यह तय किया गया कि यदि अमेरिका ने बगराम पर कब्जे की कोशिश की तो तालिबान नए सिरे से युद्ध शुरू करने के लिए तैयार है।

वहीं, तालिबान के विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी ने भी स्पष्ट कहा कि इतिहास में अफगानों ने कभी भी विदेशी सेना की मौजूदगी स्वीकार नहीं की है और अमेरिकी सैनिकों को दुबारा अफगान जमीन पर आने नहीं दिया जाएगा। वहीं, अफगान विदेश मंत्रालय ने ट्रंप के बयान की कड़ी निंदा की और स्पष्ट किया कि बगराम एयरबेस तालिबान के नियंत्रण में है तथा इसे वापस लौटाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। मंत्रालय ने कहा कि अफगान विदेश नीति अब आर्थिक विकास और सभी देशों से रचनात्मक संबंधों पर केंद्रित है, तथा अमेरिका को अफगान जमीन के प्रति कोई उम्मीद नहीं करनी चाहिए। तालिबान और अफगान विदेश मंत्रालय दोनों ने अमेरिकी मांगों को पूरी तरह से खारिज करते हुए आक्रामक जवाब दिया और देश की संप्रभुता तथा स्वतंत्रता का संरक्षण करने का संकल्प दोहराया।

इस तरह से, ट्रंप ने अफगानिस्तान और विशेष रूप से तालिबान पर दबाव बनाया है कि अमेरिका को बगराम एयरबेस लौटाया जाए, क्योंकि इसकी अहमियत चीन की परमाणु नीति और अमेरिका की सामरिक नीति से जोड़ी जा रही है। यही नहीं, अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने बगराम एयरबेस को वापस लेने के पीछे कई प्रमुख वजहें बताईं हैं, जिनमें सामरिक और क्षेत्रीय नियंत्रण प्रमुख हैं। ट्रंप का कहना है कि बगराम एयरबेस पर कब्जा करके अमेरिका पूरे क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित कर सकता है। यह एयरबेस सामरिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है और क्षेत्र में अमेरिकी प्रभाव को बढ़ाता है।

ट्रंप ने साफ कहा कि अफगानिस्तान के काबुल के पास बना यह एयरबेस चीन के परमाणु प्रतिष्ठानों के बेहद करीब है, जिससे चीन के परमाणु हथियार कार्यक्रम और सैन्य गतिविधियों पर नजर रखी जा सकती है। ट्रंप ने इससे पहले बाइडेन प्रशासन की अदूरदर्शिता की तीखी आलोचना की और कहा कि अमेरिकी सेना ने बगराम एयरबेस छोड़ कर एक सामरिक आपदा को जन्म दिया। वे कहते हैं कि इसे अमेरिका ने बनाया था और यह उनके पास ही रहना चाहिए। ताकि क्षेत्रीय सुरक्षा व प्रतिरक्षा सम्बन्धी अमेरिकी हित सध सके। उन्होंने कहा कि वह अपने दोनों विरोधियों—चीन और ईरान—पर नजर रखने के लिए यह जगह सामरिक रूप से अमेरिका के लिए खास है।

इन सभी वजहों को आधार बनाकर ट्रंप जोर दे रहे हैं कि बगराम एयरबेस को अमेरिका को लौटाया जाए, जिससे अमेरिका की सैन्य, निगरानी और रणनीतिक क्षमता क्षेत्र में मजबूत हो सके। जबकि तालिबान और अफगान विदेश मंत्रालय ने अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के बगराम एयरबेस को लौटाने संबंधी मांग और धमकी का सख्त विरोध किया है।

जहां तक बगराम हवाई अड्डा सम्बन्धी अमेरिकी लालसा का सवाल है तो अंतरराष्ट्रीय कानूनी निहितार्थ के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि बगराम एयरबेस के पुनः कब्जे के ट्रंप के दावे और तालिबान के सख्त विरोध के कुछ मुख्य पहलू इस प्रकार हैं, जिनकी कतई अनदेखी नहीं की जा सकती है। अंतरराष्ट्रीय विधि के तहत प्रत्येक राज्य की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान जरूरी होता है। किसी अन्य देश के बिना अनुमति के क्षेत्राधिकार में प्रवेश या कब्जा गैरकानूनी माना जाएगा, जो अंतरराष्ट्रीय संघर्ष का कारण बन सकता है।

तालिबान के नेतृत्व वाले अफगानिस्तान को एक संप्रभु राज्य माना जाता है, इसलिए बगराम एयरबेस पर जबरन कब्जा अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन होगा। बेहतर होगा कि ट्रंफ अफगानिस्तान की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का ख्याल रखते हुए अपनी वैश्विक महत्वाकांक्षा को तिलांजलि दें। उन्हें यह पता होना चाहिए कि किसी भी सैन्य घुसपैठ या कब्जे को लेकर जेनेवा कन्वेंशन्स और अन्य युद्ध विधि की संधियां लागू होती हैं। जब तक विवाद को शांतिपूर्ण बातचीत से हल नहीं किया जाता, तब तक सैन्य कब्जा अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा परिषद या संयुक्त राष्ट्र के अधीन विचारणीय होगा।

अलबत्ता, इस तरह के दावे से क्षेत्रीय तनाव बढ़ सकते हैं, जिससे अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा प्रभावित हो सकती है। उक्त कार्रवाई पर अन्य देशों और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों की प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण होगी। वहीं, ट्रंफ के इस दावे के कारण दो राष्ट्रों के बीच कानूनी और कूटनीतिक विवाद उत्पन्न होगा, जिसे अंतरराष्ट्रीय न्यायालय या मध्यस्थता के जरिये हल करने की कोशिश हो सकती है। हालांकि, यह मामला क्षेत्रीय सुरक्षा और राजनीतिक ताकत के आधार पर भी प्रभावित होगा। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि ट्रंप के बगराम एयरबेस के दावे पर अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत यह माना जाएगा कि किसी राज्य की संप्रभु जमीन पर कब्जा गैरकानूनी है और ऐसी कार्रवाई से अंतरराष्ट्रीय विवाद उत्पन्न हो सकता है, जिसे शांतिपूर्ण या कानूनी माध्यमों से सुलझाना आवश्यक होगा।

समझा जाता है कि दुनिया के थानेदार अमेरिका ने अपनी थानेदारी को मिल रही चीनी चुनौतियों के दृष्टिगत नया दावा पेश किया है। खुद ट्रंप ने बगराम एयरबेस से संबंधित अपने दावे में चीन की मौजूदगी का हवाला कई कारणों से दिया है। उनका तर्क इस बात पर केंद्रित है कि बगराम एयरबेस स्थित क्षेत्र चीन के परमाणु हथियार निर्माण और सैन्य गतिविधियों के लिए अत्यंत संवेदनशील इलाका है।

ट्रंप का कहना है कि बगराम एयरबेस काबुल के नजदीक है और यह चीन के परमाणु प्रतिष्ठानों से मात्र करीब 60 किलोमीटर की दूरी पर है, जिससे चीन की सैन्य और परमाणु गतिविधियों पर नजर रखने के लिए यह एयरबेस अमेरिकी सुरक्षा हितों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। वहीं, उनका आरोप है कि चीन अफगानिस्तान में अपने प्रभाव को बढ़ा रहा है, जहां वे राजनीतिक और आर्थिक रूप से भी जगह बना रहे हैं, जिससे अमेरिका की एशिया की सामरिक स्थिति खतरे में पड़ सकती है।

लिहाजा, अब यह साफ हो चुका है कि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप अपने वैश्विक प्रतिद्वंद्वी चीन को संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए एक प्रमुख रणनीतिक प्रतिद्वंद्वी मानते हैं और उनके अनुसार, बगराम एयरबेस को वापस लेकर अमेरिका चीन की विस्तारवादी गतिविधियों को रोक सकता है। इसके अलावा, ट्रंप चीन की आर्थिक और सैन्य शक्ति को लेकर भी कड़ी चेतावनी देते रहे हैं, और बगराम एयरबेस की वापसी उन्हें इस रणनीतिक प्रतिस्पर्धा में बढ़त दिला सकती है।

इसलिए ट्रंप की बातों में चीन की मौजूदगी का हवाला एक रणनीतिक कारण के तौर पर दिखता है, जो अमेरिकी सुरक्षा और क्षेत्रीय प्रभाव को बनाए रखने से जुड़ा है। यही वजह है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने भी डॉनल्ड ट्रंप के बगराम एयरबेस को लेकर किए गए आरोप और दावे पर अपनी अपनी विविध प्रतिक्रियाएं दी हैं, जिनमें मुख्य रूप से संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के सम्मान पर जोर दिया गया है।

वहीं, अधिकांश देशों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने यह स्पष्ट किया है कि किसी भी संप्रभु राष्ट्र की जमीन पर बिना उसकी अनुमति के कब्जा करना अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन होगा और यह क्षेत्रीय शांति और सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर सकता है। संयुक्त राष्ट्र और कई दूसरे वैश्विक मंचों ने अफगानिस्तान की संप्रभुता की रक्षा पर बल दिया है और किसी भी सैन्य कार्रवाई का विरोध किया है जो इस संतुलन को बिगाड़ सकती है।

अफगानिस्तान के वर्तमान तालिबान नेतृत्व के समर्थन में भी कई देशों ने उनके संप्रभु अधिकारों की पुष्टि की है, जिससे ट्रंप के दावे को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक स्वीकृति नहीं मिली। वहीं, ट्रंप के चीन पर शक और आरोप को लेकर कुछ देशों ने इसे क्षेत्रीय तनाव बढ़ाने वाला माना है, जबकि कुछ ने इस पर स्पष्ट टिप्पणी से बचते हुए कूटनीतिक वार्ता पर जोर दिया है। इसी समय, संयुक्त राष्ट्र में भारत ने पाकिस्तान के आतंकवाद से जुड़े दावों पर कड़ी प्रतिक्रिया दी है जो दर्शाता है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय सुरक्षा और आतंक के विषयों को गंभीरता से देख रहा है, हालांकि अफगानिस्तान मामले में स्थिति भिन्न है लेकिन संप्रभुता के मुद्दे एक समान हैं।

जहां तक इसके रणनीतिक महत्व का सवाल है तो बगराम, अफगानिस्तान की राजधानी काबुल से लगभग 60 किमी उत्तर में, एक ऐसे स्थान पर है जहाँ से ईरान, पाकिस्तान, चीन (विशेषकर शिंजियांग क्षेत्र), और मध्य एशिया तक आसानी से पहुँचा जा सकता है। यहाँ से अमेरिकी वायुसेना लगभग हर दिशा में कार्रवाई के लिए तैयार रह सकती है।

इसकी विशाल रनवे, उन्नत मेडिकल सुविधाएँ, इंटेलिजेंस और सिग्नल सर्विलांस सेंटर, तथा बड़े पैमाने पर सैन्य लॉजिस्टिक्स ने इसे अफगान युद्ध के दौरान अमेरिका का सबसे बड़ा सैन्य केंद्र बनाया था। यहाँ से आतंकवाद विरोधी अभियानों के साथ-साथ पूरे क्षेत्र पर निगरानी रखी जाती थी।

सवाल है कि आखिर अमेरिका इसे क्यों वापस चाहता है? तो जवाब होगा कि चीन के खिलाफ अपनी रणनीति को धार देने के लिए, क्योंकि यह बेस चीन के शिंजियांग प्रांत से करीब एक घंटे की फ्लाइट दूरी पर अवस्थित है, जहाँ चीन अपने न्यूक्लियर मिसाइल और सैन्य निर्माण को बढ़ा रहा है। अमेरिका इस आधार से चीन की गतिविधियों और इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स (जैसे बेल्ट एंड रोड) पर निगरानी बढ़ाना चाहता है। वहीं, रूस और ईरान की गतिविधियों की निगरानी तथा मध्य एशिया में अमेरिकी प्रभाव बनाए रखना इसकी प्राथमिकता है। अफगानिस्तान के खनिज भंडार, नए व्यापारिक रास्ते तथा क्षेत्रीय सामरिक स्थिति नियंत्रण में अमेरिका के लिए बगराम काफी अहम है। क्षेत्रीय आतंकवाद और उग्रवादी गतिविधियों पर प्रतिक्रिया की क्षमता यहाँ से सबसे सशक्त रहती है।

वहीं, मित्र देशों (जैसे भारत) के साथ इंटेलिजेंस साझा करना और क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखना भी इस बेस का मुख्य उद्देश्य है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि बगराम एयरबेस क्षेत्रीय शक्ति संतुलन, सैन्य पहल, खुफिया कार्य, तथा चीन-रूस जैसे देशों के प्रभाव को संतुलित करने के लिए अमेरिका के लिए एक अपर्याप्त सामरिक संपत्ति है।

खास बात यह है कि अफगानिस्तान स्थित बगराम हवाई अड्डे को अमेरिका द्वारा पुनः पाने की कोशिशों के मुद्दे पर साथ पाकिस्तान, चीन, रूस और ईरान परस्पर साथ आए हैं और दो टूक कहा है कि ताजा अमेरिकी पहल वैश्विक सुरक्षा के लिए खतरा है। यहां पाकिस्तान का ईरान, रूस और चीन के साथ खड़ा होना अमेरिका के लिए किसी बुरे स्वप्न की तरह है, क्योंकि अमेरिका ने भारत को नाराज करके पाकिस्तान व बंगलादेश को साधने की जो कोशिश की है, वह दांव भी उल्टा पड़ गया है। इससे एशिया में अमेरिकी पांव उखड़ने के स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं।

दरअसल, पाकिस्तान, चीन, ईरान और रूस ने अफगानिस्तान में अमेरिकी सैन्य ठिकाने बनाने का विरोध किया और ऐसा होने पर आतंकवाद और नशीले पदार्थों के खतरे सम्बन्धी चिंता जताई है। इसमें एक महत्वपूर्ण एशियाई किरदार भारत भले ही शामिल नहीं है, लेकिन आतंकवाद और नशीले पदार्थों पर रोक लगाने सम्बन्धी उसकी मौलिक चिंताओं को भी शामिल कर लिया गया है ताकि भविष्य में इस रूसी-ईरानी-अफगानी मित्र को भी साधा जा सके।

हाल ही में संयुक्त राष्ट्र संघ में अफगानिस्तान की स्थिति पर पाकिस्तान, चीन, ईरान और रूस ने अपना संयुक्त बयान जारी करते हुए कहा कि क्षेत्र में किसी भी सैन्य ठिकाने की स्थापना का वे कड़ा विरोध करते हैं। इन चारों देशों की यह राय अमेरिका को खुली नसीहत समझी जा रही है। क्योंकि उसके ही देश न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 80वें सत्र के दौरान हुई चौथी क्वाड्रीपार्टिट (Quadripartite) बैठक में इन चार देशों के विदेश मंत्रियों ने एक बयान देते हुए कहा कि अफगानिस्तान की संप्रभुता, स्वतंत्रता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान होना चाहिए। अमेरिकी-यूरोपीय नेतृत्व वाले नाटो देशों को मौजूदा संकट के लिए जिम्मेदार ठहराते हुए कहा गया कि अब उन्हें अफगानिस्तान की आर्थिक बहाली और विकास के अवसर पैदा करने चाहिए।

चारों देशों ने आरोप लगाते हुए कहा कि अफगानिस्तान में आईएसआईएल, अलकायदा, तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी), बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) और मजीद ब्रिगेड जैसी आतंकी गतिविधियां अभी भी क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा के लिए खतरा बनी हुई हैं। इसलिए अफगान अधिकारियों को ठोस कदम उठाकर इन संगठनों को खत्म करना होगा। इसके साथ ही, अफगान शरणार्थियों की सुरक्षित और समयबद्ध वापसी सुनिश्चित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय और दानदाताओं को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करनी चाहिए। साथ ही लौटने वालों के पुनर्वास और सामाजिक-राजनीतिक जीवन में शामिल करने की जिम्मेदारी अफगान सरकार को उठानी होगी।

चार देशों ने इस बात पर भी जोर दिया कि अफगानिस्तान में एक समावेशी और व्यापक शासन प्रणाली बने जो समाज के सभी वर्गों की आकांक्षाओं और हितों को दर्शाए। इसमें महिलाओं और लड़कियों की शिक्षा, कामकाज और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी को शांति और स्थिरता के लिए अहम बताया गया। चारों देशों ने दो टूक कहा है कि मॉस्को फॉर्मेट, अफगानिस्तान के पड़ोसी देशों की बैठक और शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) जैसे क्षेत्रीय ढांचे राजनीतिक समाधान की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

काशी के घाटों की अनंत धुनः पंडित छन्नूलाल मिश्र को श्रद्धांजलि

जब गंगा के तट पर सूरज की पहली किरणें काशी के घाटों को चूमती हैं, तो वहाँ की हवा में एक अलौकिक धुन गूंज उठती है—सदियों की साधना और परंपरा से सनी, आत्मा को झंकृत करने वाली वह धुन। यह धुन नदी की लहरों से नहीं, बल्कि एक ऐसे साधक की आवाज़ से जन्मती थी, जिसने शास्त्रीय संगीत को भारत की सांस्कृतिक आत्मा का पर्याय बना दिया। आज, जब यह स्वरलहरी सदा के लिए शांत हो गई, तो समूचा देश शोक में डूबा है। पद्मविभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी का निधन केवल एक कलाकार का जाना नहीं, बल्कि काशी की मिट्टी से उपजी शास्त्रीय संगीत की उस अनमोल धरोहर का अवसान है। 2 अक्टूबर को, 89 वर्ष की आयु में मिर्ज़ापुर में अपनी पुत्री के आवास पर उन्होंने अंतिम सांस ली। एक युग का अंत हुआ, पर उनकी स्वरलहरियाँ अनंत काल तक गूंजेंगी, हमें याद दिलाती रहेंगी कि सच्चा संगीत अमर होता है।

3 अगस्त 1936 को उत्तर प्रदेश के आज़मगढ़ के हरिहरपुर गाँव में एक साधारण ब्राह्मण परिवार में जन्मे पंडित छन्नूलाल मिश्र का संगीत से रिश्ता बचपन से ही गहरा था। उनके पिता, पंडित बद्री प्रसाद मिश्र, एक कुशल गायक थे, जिन्होंने उन्हें संगीत की प्रारंभिक दीक्षा दी। लेकिन उनकी साधना तब साकार हुई, जब वे किराना घराने के उस्ताद अब्दुल घनी खान के शिष्य बने। उस्ताद की कठिन तालीम ने उनकी खयाल गायकी को अटल आधार दिया, जो उनकी अनूठी शैली का मूल बना। बाद में, ठाकुर जयदेव सिंह जैसे गुरुओं के मार्गदर्शन में उन्होंने पंजाब, पूर्वांचल और गया घरानों की शैलियों को आत्मसात किया। उनकी गायकी में बनारसी ठुमरी की मिठास, खयाल की गहराई और भजन की भक्ति का अनोखा संगम था। काशी की गलियों और गंगा की लहरों से प्रेरित उनकी आवाज़ में वह ठहराव था, जो सुनने वालों को मंत्रमुग्ध कर देता।

पंडित जी की गायकी मंचों तक सीमित नहीं रही; उन्होंने शास्त्रीय संगीत को जन-जन का बनाया। ठुमरी, दादरा, चैती, कजरी और होरी जैसी विधाओं में पूर्वांचल की मिट्टी की सोंधी महक थी। तुलसीदास की रामचरितमानस और कबीर के दोहों को उनकी बनारसी शैली ने आध्यात्मिक ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उनकी राग दरबारी में ठुमरी हो या कजरी में बरसती बूंदों-सी स्वरलहरियाँ, हर रचना ने संगीत प्रेमियों को बाँधा और शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में क्रांति ला दी। उनकी आवाज़ में गंगा-यमुना का मिलन था—उदासी और आनंद का अद्भुत संतुलन। पंडित छन्नूलाल मिश्र का जाना एक युग का अंत है, पर उनकी धुनें काशी के घाटों पर, गंगा की लहरों में, और संगीत प्रेमियों के हृदय में सदा गूंजती रहेंगी।

पंडित छन्नूलाल मिश्र का योगदान केवल गायकी तक नहीं सिमटा; उन्होंने भारतीय संस्कृति को वैश्विक मंच पर अमर कर दिया। 1960 के दशक से अमेरिका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया के मंचों पर उनकी खयाल और ठुमरी की गूंज ने न केवल संगीत प्रेमियों को मंत्रमुग्ध किया, बल्कि भारतीय दर्शन को भी पश्चिमी दुनिया के सामने उजागर किया। उनके लिए संगीत केवल मनोरंजन नहीं, आत्म-साक्षात्कार का मार्ग था। इस प्रयास ने शास्त्रीय संगीत को वैश्विक पहचान दी। देश में भी उनका प्रभाव असीम था। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय सहित कई संस्थानों में उन्होंने शिष्यों को प्रशिक्षित कर किराना घराने की परंपरा को जीवंत रखा। उनके पुत्र, तबला वादक रामकुमार मिश्र, इस विरासत के सच्चे वारिस हैं। पंडित जी ने संगीत को लिंग और वर्ग की सीमाओं से मुक्त कर महिलाओं व युवाओं को प्रेरित किया। ग्रामीण संगीत शिविरों के ज़रिए किसानों के बच्चों को राग-तान सिखाकर उन्होंने भारतीय संस्कृति की समावेशिता को सशक्त किया।

उनके सम्मानों की सूची उनकी साधना का साक्षी है। 2000 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 2010 में पद्मभूषण, और 2020 में पद्मविभूषण जैसे अलंकरण उनके योगदान के प्रतीक हैं। उत्तर प्रदेश के यश भारती, नौशाद पुरस्कार, सुर सिंगर संसद का शिरोमणि सम्मान और बिहार का संगीत शिरोमणि पुरस्कार उनकी महानता के गवाह हैं। फिर भी, पंडित जी के लिए ये सम्मान जिम्मेदारी थे, न कि गर्व का कारण। वे कहते थे, "संगीत पुरस्कार नहीं, आत्मा की पुकार माँगता है।" उनकी यह विनम्रता उन्हें सच्चा साधक बनाती थी।

पंडित छन्नूलाल मिश्र का जाना काशी के घाटों की उस स्वर-साधना का शांत होना है, जिसमें गंगा का प्रवाह, काशी की मिट्टी और राम का नाम बसा था। वे कहते थे, "संगीत सीखना आसान है, उसे जीना कठिन।" यह उक्ति हमें उनकी विरासत संजोने की प्रेरणा देती है। शास्त्रीय संगीत को युवाओं तक पहुँचाना, घरानों की परंपरा को जीवित रखना और भारतीय संस्कृति को विश्व में स्थापित करना अब हमारा दायित्व है। उनकी स्वरलहरियाँ गंगा-सी अनंत बहती रहेंगी, काशी के घाटों पर गूंजती रहेंगी। पंडित जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, संकल्प लें कि उनकी साधना को जीवित रखेंगे, क्योंकि उनकी धुनें हमारी आत्मा में सदा गूंजेंगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

सुनहरी छाँव द्वारा अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एवं पुस्तक लोकार्पण 5 को, ख्यातिनाम कवि और शायर करेंगे शिरकत

डॉ.शंभू पंवार

नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था ₹ सुनहरी छाँव ट्रस्ट द्वारा 5 अक्तूबर को एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एवं पुस्तक विमोचन का आयोजन होने जा रहा है।

वरिष्ठ साहित्यकार, लेखिका, गजलकारा एवं सुनहरी छाँव की संस्थापिका डॉ सुमन मोहिनी "सलोनी" ने बताया कि गुरूग्राम स्थित रेल विहार सोसाइटी, सेक्टर-15, पार्ट- II में होने वाले इस भव्य आयोजन की अध्यक्षता विश्व रिकॉर्ड धारक, अंतर्राष्ट्रीय लेखक, पत्रकार - विचारक डॉ शंभू पंवार करेंगे एवं मुख्य अतिथि सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता एवं दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री सोमनाथ भारती ओर विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार, लेखिका, कवयित्री डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा गीत, जनता न्यूज़ चैनल के डायरेक्टर, मीडिया पार्टनर देवेन झा, कलमकार डॉ रवि खुराना, एवं डॉ विक्रम गौड़ रसिक उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा सुनहरी छाँव पब्लिकेशन हाउस द्वारा प्रकाशित प्रथम सांझा काव्य संग्रह ₹मर्यादा पुरूषोतम श्री राम₹ का लोकार्पण किया जाएगा। तत्पश्चात अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में देश के कोने-कोने से आने वाले ख्यातिनाम कवि, शायर जिसमें रचना शर्मा ,नंद त्यागी, सुनील कुमार यादव, गुस्ताख हिंदुस्तानी, जितेंद्र जीत, रितु रस्तोगी, डॉ महिंदर शर्मा ' मधुकर ', कुमार प्रभाष सिंह, सत्य मोहन सक्सेना, प्रवीण रंजन जौनपुरी, प्रवीण व्यास, गोल्डी गीतकार, सुभाष प्रतापगढ़ी, गुंजन अग्रवाल, प्रतिभा शर्मा, रमन जायसवाल, देवेश अवस्थी, कुमारी शिल्पा, शिवानी स्वामी, ज्योत्सना शायरा, डॉ राम सिंह हलचल, दयाराम खोरवाल, वीरेंद्र सिंह कौशल, योगेश ब्रजवासी, राही राज, प्रीति राज, कुमार विशु, हलचल हरियाणवी, आमीन अली शाहपुरी , सोनम शायरा, आशीष भदौरिया, आतिशी, राजेश प्रभाकर, सौरव यादव तथा विवेक तिवारी सहित अन्य कवि शिरकत करेंगे। आयोजन की सफलता के लिए बनाई टीम में उपाध्यक्ष ऋषि मौर्य, सचिव अभिषेक मिश्रा, उप सचिव भारत मौर्या, संगठन प्रभारी शिवम बर्मन एवं सैयद बदरूद्दुजा, मीडिया प्रभारी सुभाष श्रीवास्तव, सदस्यों में मधुलिका तिवारी और प्रभात पांडे आदि तैयारियों में लगे हुवे है। संस्थापिका डॉ सुमन मोहिनी "सलोनी" ने बताया कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा का अधिकाधिक संवर्धन करना है और नवोदित कलम कारों का सम्मान तथा मंच प्रदान करना है।

विजय गर्ग

भारत कौशल रिपोर्ट 2025 एक कठोर वास्तविकता प्रस्तुत करती हैः इस वर्ष केवल 55 प्रतिशत भारतीय युवा रोजगार में हैं। रोजगार बाजार में प्रवेश करने वाले प्रत्येक दो युवा भारतीयों में से लगभग एक व्यक्ति अनुकूलन क्षमता, डिजिटल प्रवाह और लचीलापन की आवश्यकता वाली भूमिकाओं के लिए तैयार नहीं है। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), अर्धचालक, स्वास्थ्य देखभाल और कल्याण तथा हरित प्रौद्योगिकी जैसे उच्च मांग वाले क्षेत्रों में 29 मिलियन श्रमिकों की अनुमानित कमी से चेतावनी दी है।

भारत के भविष्य के लिए 21वीं सदी का कौशल महत्वपूर्ण क्यों है

भारत के युवा, एक अनिश्चित समय में खड़े हैं। डिग्री के साथ सशस्त्र लेकिन 21वीं सदी में आवश्यक कौशल की कमी, वे कम वेतन वाली नौकरियों में फंस जाएंगे। जब तक शिक्षा सुधार, डिजिटल पहुंच और कौशल निर्माण की पहल को तत्काल पैमाने पर नहीं बढ़ाया जाता, तब तक जनसांख्यिकीय लाभांश का वादा खो जाएगा

भारत में युवाओं का दुनिया का सबसे बड़ा पूल है, लेकिन सही कौशल के बिना यह जनसांख्यिकीय लाभ एक जनसंख्यागत आपदा बन सकता है।

कार्य करने में विफलता कोई विकल्प नहीं है। निष्क्रियता के परिणाम भयानक होंगेः लाखों शिक्षित लेकिन कम कुशल युवा निम्न वेतन वाली नौकरियों में फंसे रहेंगे, जिससे निराशा और असमानता बढ़ जाएगी। हाल ही में, हमने नेपाल के साथ-साथ श्रीलंका और बांग्लादेश में भी अशांति देखी है, जहां बेरोजगार युवा राजनीतिक अभिजात वर्गों पर अपना क्रोध फैलाते हैं। भारत को इन चेतावनी संकेतों पर ध्यान देना चाहिए।

रोजगार संबंधी समस्या

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा 15 सितंबर को जारी नवीनतम आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) के आंकड़ों के अनुसार, युवा महिलाओं में बेरोजगारी काफी बढ़ गई है। 15-29 वर्ष की आयु वाली शहरी महिलाओं के लिए बेरोजगारी दर 25.7 प्रतिशत तक बढ़ गई है, जो कि युवा शहरी पुरुषों की तुलना में 10 प्रतिशत से अधिक है।

भारत कौशल रिपोर्ट 2025 एक कठोर वास्तविकता प्रस्तुत करती हैः इस वर्ष केवल 55 प्रतिशत भारतीय युवा रोजगार में हैं। रोजगार बाजार में प्रवेश करने वाले प्रत्येक दो युवा भारतीयों में से लगभग एक व्यक्ति अनुकूलन क्षमता, डिजिटल प्रवाह और लचीलापन की आवश्यकता वाली भूमिकाओं के लिए तैयार नहीं है। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), अर्धचालक, स्वास्थ्य देखभाल और कल्याण तथा हरित प्रौद्योगिकी जैसे उच्च मांग वाले क्षेत्रों में 29 मिलियन श्रमिकों की अनुमानित कमी से चेतावनी दी

है।

यह असंगति तकनीकी कौशल से परे है। विश्व बैंक ने पाया है कि नियोक्ता समस्या समाधान, सहयोग और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को उतना ही महत्व देते हैं जितना वे कोडिंग या इंजीनियरिंग करते हैं। इन ₹मानव कौशल₹ वाले उम्मीदवार न केवल अधिक आसानी से नौकरी पाते हैं, बल्कि उच्च वेतन भी प्राप्त करते हैं।

नवाचार अंतर

21वीं सदी के कौशल की कमी से भारत में ₹विचारशीलता का अंतर₹ भी बढ़ जाता है विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद, भारत अपनी सकल घरेलू उत्पाद का 0.7 प्रतिशत से भी कम अनुसंधान और विकास में निवेश करता है, जबकि चीन में 2.4 प्रतिशत और अमेरिका में 3 प्रतिशत से अधिक।

नतीजतन, जबकि चीन ने 2023 में लगभग 800,000 पेटेंट दायर किए थे, भारत मुश्किल से 30,000 दाखिल करने में कामयाब रहा।

यह असमानता भारतीय युवाओं में रचनात्मकता की कमी के कारण नहीं है; बल्कि शिक्षा प्रणाली से आती है, जो शायद ही कभी रचनात्मक सोच को बढ़ावा देती है। मूल सीखने और उच्च जोखिम वाली परीक्षाएं जिज्ञासा, डिजाइन सोच या समस्या समाधान के लिए बहुत कम जगह छोड़ देती हैं। जब तक भारत अपनी शिक्षा प्रणाली में इन कौशल को शामिल नहीं करता, तब तक वह निर्माता के बजाय वैश्विक नवाचारों का उपभोक्ता बने रहने का जोखिम उठाता है।

21वीं सदी के कौशल क्यों महत्वपूर्ण हैं

कार्यस्थल में तेजी से परिवर्तन हो रहा है, जो पारंपरिक पाठ्यपुस्तकों को बहुत पीछे छोड़ देता है। जैसे-जैसे सचिवालय की भूमिकाएं घटती जा रही हैं, नवीकरणीय ऊर्जा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, फिनटेक और जैव प्रौद्योगिकी में नौकरियां प्रमुख शक्तियों के रूप में सामने आती हैं। भविष्य की नौकरियों की रिपोर्ट 2025 स्पष्ट करती हैः 2030 तक आज के लगभग 40 प्रतिशत कौशल अप्रचलित हो जाएंगे।

21वीं सदी के कौशल केवल रोजगार की क्षमता से परे हैं; वे गरिमा, आत्मविश्वास और गतिशीलता का प्रतीक हैं। शोध इस बात को सुदृढ़ करता है, जिससे पता चलता है कि मजबूत सामाजिक-भावनात्मक कौशल वाले छात्र अकादमिक रूप से उत्कृष्ट हैं, अधिक कल्याण का आनंद लेते हैं और तनाव के प्रति कम संवेदनशील होते हैं।

हालांकि, इन परिणामों को प्राप्त करने के लिए प्रणालीगत परिवर्तन की आवश्यकता होती है। महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की खाई बनी हुई हैः वर्तमान में केवल 57 प्रतिशत स्कूलों के पास कंप्यूटर तक पहुंच है, जबकि 54 प्रतिशत ही इंटरनेट से जुड़े हैं। ग्रामीण स्कूलों को असमान रूप से प्रभावित किया जाता है; कई गांवों में, बच्चे परीक्षा केंद्रों पर पहली बार लैपटॉप का सामना करते हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों की तैयारी और प्रशिक्षण दुखद रूप से अपर्याप्त है।

कई शिक्षकों को रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच विकसित करने के लिए आवश्यक डिजिटल साक्षरता और शैक्षणिक उपकरण की कमी होती है। श्लोक पूरा करने की आवश्यकता से अभिभूत, वे अक्सर मौलिक शिक्षण का सहारा लेते हैं।

सामाजिक असमानताएं लिंग, भूगोल और विकलांगताओं को प्रभावित करती हैं। केवल 36 प्रतिशत ग्रामीण किशोर लड़कियों के पास स्मार्टफोन है, जिससे डिजिटल सीखने की संभावनाओं तक उनकी पहुंच गंभीर रूप से सीमित हो जाती है। आदिवासी छात्र और विकलांग बच्चों को अक्सर उपलब्ध सामग्री की कमी का सामना करना पड़ता है।

इसके अलावा, अप्रचलित मूल्यांकन प्रणालियों ने नवाचार पर स्मृति को प्राथमिकता दी है। जब तक ये मूल्यांकन विकसित नहीं होते, तब तक स्कूलों में समस्या-समाधान या सहयोग पर ध्यान केंद्रित करने के लिए बहुत कम प्रोत्साहन होगा।

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें पांच महत्वपूर्ण मोर्चों पर निर्णायक कार्रवाई करनी होगी

पाठ्यक्रम सुधारः 21वीं सदी के कौशल को मौलिक - आवश्यक, वैकल्पिक या व्यावसायिक नहीं माना जाना चाहिए। उन्हें अलग-अलग मॉड्यूल के रूप में संलग्न करने की बजाय सभी विषयों पर एकीकृत किया जाना चाहिए।

शिक्षक सशक्तीकरणः हमें प्रशिक्षण ढांचे में संशोधन करना होगा, निरंतर व्यावसायिक विकास प्रदान करना होगा और शिक्षकों को सफल होने के लिए आवश्यक डिजिटल और सामाजिक-भावनात्मक शिक्षण उपकरण उपलब्ध कराएंगे।

इक्विटी एंड एक्सेसः डिजिटल अंतर को दूर करना आवश्यक है। हमें कम लागत वाली नवाचारों जैसे कि ऑफलाइन सामग्री, सहकर्मी क्लब और बहुभाषी संसाधन लागू करने की आवश्यकता है।

मूल्यांकन नवाचारः परियोजना-आधारित मूल्यांकन, पोर्टफोलियो और डिजिटल बैज की ओर बढ़ना महत्वपूर्ण है जो रचनात्मकता, टीमवर्क और समस्या समाधान क्षमताओं को सटीक रूप से दर्शाते हैं।

साझेदारीः हमें पायलट कार्यक्रमों को बढ़ाने और राष्ट्रीय पहल में आवश्यक कौशल सेट शामिल करने के लिए सीएसआर फंड, एडटेक प्लेटफॉर्म और उद्योग सहयोग का लाभ उठाना होगा

एक राष्ट्रीय अनिवार्य

यह सिर्फ भारतीय युवाओं को रोजगार देने के बारे में नहीं है; यह मूलतः राष्ट्र निर्माण के बारे में है। एक मजबूत कौशल पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करना घरेलू स्तर पर नौकरियां पैदा करने के लिए आवश्यक है और साथ ही हमारे युवाओं को रोजगार से जुड़े प्रवास की तैयारी भी करनी चाहिए, क्योंकि पश्चिमी देश कुशल श्रमिकों की सक्रिय तलाश में हैं। यह ₹प्रतिभा का परिपत्र प्रवाह₹ निस्संदेह धन हस्तांतरण, अंतर-सांस्कृतिक अनुभव और वैश्विक नेटवर्क के माध्यम से भारत को समृद्ध करेगा, जिससे हमारा जनसांख्यिकीय लाभांश रणनीतिक वैश्विक लाभ में बदल जाएगा।

. यदि भारत इस क्षण का लाभ उठाता है, तो हमारे युवा न केवल राष्ट्रीय विकास बल्कि वैश्विक प्रगति को बढ़ावा देने के लिए दुनिया की सबसे गतिशील कार्यबल बन सकते हैं।

विकल्प स्पष्ट है, और आगे का रास्ता निर्विवाद है। अनिवार्य बात यह नहीं है कि भारत 21वीं सदी के कौशल में निवेश करने का खर्च उठा सकता है, बल्कि वह इसे कितनी जल्दी और प्रभावी ढंग से कर सकता है। कार्रवाई का समय अब है। यह सुनिश्चित करना हमारी जिम्मेदारी है कि प्रत्येक छात्र को 21वीं सदी में पनपने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान किए जाएं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर

पैरेंट्स की मेंटल हेल्थ के साथ साथ बच्चे की मेंटल हेल्थ भी जरूरी है

विजय गर्ग

आजकल टीनएजर बच्चों द्वारा अपने जीवन के बारे में अतिवादी कदम उठाने के मामलों में लगातार इजाफा हो रहा है। यह बच्चे कई कारणों से मानसिक रूप से तनावग्रस्त होने के कारण आत्महत्या कर रहे हैं, वजह कोई भी हो सकती है। एग्जाम में अच्छे स्कोर हासिल करने का दबाव, अच्छे कॉलेज में एडमिशन का दबाव, खेल में सुपरस्टार बनने की तमन्ना, सोशल मीडिया में बुलिंग होने का तनाव, गरीबी, धन की कमी, जाति लिंग, विकलांगता के आधार पर भेदभाव का शिकार, इनके अलावा और कई गंभीर मुद्दों के कारण बच्चे लंबे समय तक मानसिक तनाव का शिकार रहते हैं और जब वह उस मानसिक तनाव को झेलने में असमर्थ हो जाते हैं तो वे अपनी जान लेने जैसा गंभीर कदम उठा लेते हैं।

सवाल है कि पैरेंट्स क्या उनके भीतर पनप रहे मानसिक तनाव, चिड़चिड़ेपन आदि को पहचान नहीं पाते? नहीं, ऐसा नहीं है। बच्चों की नींद, खानपान की आदतों या दैनिक जीवन में और कई तरह के ऐसे बदलाव होते हैं, जो पैरेंट्स की नजर में तो आते हैं, लेकिन पैरेंट्स उन लक्षणों को गंभीरता से नहीं लेते। अपनी मनपसंद गतिविधियों में अचानक अरुचि पैदा होना, दूसरे लोगों से दूरी बनाना, अपने करीबी दोस्तों से मिलने-जुलने की बजाय उनसे दूर रहना, कुछ पूछने पर इनकार कर देना, जैसे लक्षण पैरेंट्स को दिखायी दें तो उन्हें समझ जाना चाहिए कि बच्चा मानसिक तनाव में है।

तनाव पहचानने में मददगार बातचीत

बच्चे के मूड में बदलाव, स्कूल में उसका खराब प्रदर्शन, हार्मोनल बदलाव, इन तमाम कारणों से बच्चा तनावग्रस्त हो जाता है, लेकिन

अगर पैरेंट्स को एक साथ कई लक्षण दिखायी देते हैं, तो उन्हें सतर्क हो जाना चाहिए। इन तमाम बातों के अलावा अगर बच्चा किसी किस्म के नशे का सेवन करता है तो इसे इस उम्र की एक समस्या तो माना ही जा सकता है, लेकिन अगर वह इसके दुष्चक्र में ज्यादा फंस जाता है तो पैरेंट्स के लिए यह खतरे की घंटी है। कई बार शराब और नशीले पदार्थों का सेवन टीनएजर कठिन भावनाओं और परिस्थितियों से निपटने के लिए कर सकते हैं। यह इस ओर भी इशारा करते हैं कि आपका बढ़ता बच्चा भावनात्मक रूप से दर्द से परेशान है। पैरेंट्स को अपने टीनएज बच्चे की मेंटल हेल्थ के बारे में जरा सी भी लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए, उनके साथ लगातार संवाद ही उसके तनाव के कारण को पहचानने में मददगार हो सकता है।

समस्या जानने के लिए जरूरी भरोसा जीतना

अपने बच्चे के साथ उसकी समस्याओं पर बात करके उसे सुरक्षित बनाना जरूरी है। बच्चे अकसर संवेदनशील विषयों पर बात करने से बचते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि उन्हें इसके लिए पैरेंट्स की बातें सुननी पड़ सकती हैं। बच्चे को विश्वास दिलाएं कि वह खुलकर आपसे बताए और आप भी उसके साथ सख्ती से पेश न आएं। बातचीत के दौरान अपने डर पर काबू पाकर उससे खुलकर सब बताने के लिए कहें और पैरेंट्स भी उसकी बतायी चीजों को और उसकी गलतियों को उसकी इस नादानी भरी उम्र की एक सामान्य गलती मानें। हर चीज को अपने जीवन के चश्मे से न देखें। बच्चे के नकारात्मक व्यवहार को सीधा प्वाइंट आउट करने की बजाय उससे घुमा-फिराकर पूछेंगे तो वह ज्यादा सहजता से आपसे बात करेगा। अगर आपको लगता है कि बच्चा अपनी भावनाओं को छिपाने की कोशिश कर रहा है और खुलकर आपसे कोई बात नहीं कर पा रहा है तो आप उसे सोचने के लिए थोड़ा इंतजार करें ताकि वह मानसिक रूप से आपको अपनी समस्या बताने के लिए समय दें।

गलतियां माफ करने वाली भूमिका

बच्चा अगर मानसिक रुप से परेशान है तो पैरेंट्स इसे उतना ही गंभीर मानें, जितना कोई शारीरिक समस्या होती है और अपने टीनएजर को समझाएं कि वह अपनी समस्या बताने में डर या शर्म महसूस न करे। याद रखें, टीनएज में बच्चा बहुत कठिन दौर से गुजरता है और अपने सामने आने वाले दबाव से निपटने के लिए वह पूरी कोशिश करता है। इसलिए बच्चे के प्रति बेहद पॉजीटिव रहकर उसकी गलतियों को माफ करने की भूमिका में रहें। अपने टीनएजर के प्रति प्यार, विश्वास और सम्मान दिखाने से उसकी समस्या तो हल होगी ही, आपको भी इससे नुकसान नहीं होगा।

अपनों का साथ व पॉजिटिव गतिविधियां

आपका टीनएज बच्चा अगर आपको शारीरिक-मानसिक रूप से सही दिखता है, तब भी उसे समय दें, उसकी मनोदशा को स्वस्थ बनाने वाली आदतों की ओर उसको डाइवर्ट करें। परिवार के रूप में एक-दूसरे के साथ समय बिताने के लिए समय निकालें। पॉजीटिव गतिविधियां और रिश्ते उसके मानसिक स्वास्थ्य पर ढाल का कार्य करते हैं। पैरेंट्स को समझना चाहिए कि अच्छे और बुरे दोनों तरह के दिन हमारे जीवन में आते हैं। हमारी मेंटल हेल्थ के साथ साथ बच्चे की मेंटल हेल्थ भी जरूरी है। अगर समस्या गंभीर दिखती है तो समय रहते अपने बच्चे और उसके बाल रोग विशेषज्ञ से उसके मानसिक स्वास्थ्य के बारे में बात की जा सकती है। समस्या अगर गंभीर लगे तो उसको काउंसलिंग के जरिये सुलझाया जा सकता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

एक देखभाल करने वाला शिक्षक, देखभाल की जाने वाली पीढ़ी के लिए सबसे सुरक्षित उत्प्रेरक

विजय गर्ग

शिक्षा की ऊंची इमारत में, शिक्षकों और स्कूल नेताओं को अक्सर अथक वेटर के रूप में चित्रित किया जाता है - ज्ञान का रक्षक तथा युवा दिमागों के वास्तुकार। फिर भी, खट्टे से भरे हाथों, सावधानीपूर्वक तैयार पाठ योजनाओं और शांत व्यवहार के पीछे एक सच्चाई है जिसे अक्सर नजरअंदाज किया जाता हैः शिक्षकों को सुपरमानव नहीं माना जाता।

वे सामान्य व्यक्ति हैं, जो किसी भी अन्य की तरह चिंताओं, तनाव और भावनात्मक उतार-चढ़ाव के अधीन होते हैं। माता-पिता की अपेक्षाएं, हालांकि देखभाल में जड़ रखती हैं, अक्सर अवास्तविक के क्षेत्र में गिर जाती हैं। कई माता-पिता स्कूलों में एक व्यापक पैकेज की तलाश करते हैं - शैक्षणिक उत्कृष्टता, निर्दोष चरित्र विकास और समृद्ध सह-पाठ्यक्रम भागीदारी। शिक्षकों से अंतहीन धैर्य रखने, हमेशा रचनात्मक रहने और अनंत उपलब्ध होने की अपेक्षा होती है। ये मांगें पहले से ही पतले लोगों पर कितना भारी बोझ डालती हैं, इस बारे में सोचने के लिए कुछ लोग रुकते हैं। एक शिक्षक ज्ञान का वाहक से बहुत अधिक है। वे प्रशिक्षक, सलाहकार और कभी-कभी सरोगेट माता-पिता भी हैं। कक्षा के अलावा, वे पाठ तैयारी, मूल्यांकन, प्रशासनिक कर्तव्यों और डिजिटल शिक्षा के लगातार बदलते परिदृश्य को संतुलित करते हैं। महामारी ने इस वास्तविकता को बढ़ाया। उन्हें सुलैमान के साथ संघर्षों को हल करने की उम्मीद है - जैसे कि बुद्धि, बारीकियों से अनुशासन लागू करना और जटिल संस्थानों पर मशीन जैसी सटीकता से नजर रखना। कई लोगों के लिए, एक स्कूल नेता कम व्यक्ति और अधिक प्रणाली बन जाता है - अंतहीन उत्पादकता के लिए प्रोग्राम किया गया। फिर भी, परिष्कृत बाहरी के नीचे एक मानव प्राणी है जो नींद की रातों, व्यक्तिगत दुविधाओं और संस्था को आकार देने की भारी जिम्मेदारी से जूझ रहा है।

शिक्षकों को कार्यकर्ताओं के रूप में देखने की यह प्रवृत्ति पेशे का कष्टप्रद अमानवीकरण दर्शाती है। यह दैनिक भावनात्मक श्रम को नजरअंदाज करता हैः एक शर्मीले बच्चे को प्रदान किया गया शांत प्रोत्साहन, समझने तक किसी अवधारणा का धैर्यपूर्वक पुनरावृत्ति, या संघर्षरत छात्र के मानसिक स्वास्थ्य पर दिया जाने वाला विवेकपूर्ण ध्यान। ये इशारे, सहानुभूति और संबंध में जड़े हुए हैं, शायद ही कभी रिपोर्ट कार्ड या स्कूल रैंकिंग में दिखाई देते हैं, फिर भी वे शिक्षण के सार को परिभाषित करते हैं। हर किसी की तरह, शिक्षकों और स्कूल नेताओं को भी आराम, वैधता और करुणा की आवश्यकता होती है। माता-पिता की सराहना का एक शब्द, विश्वास का इशारा या यहां तक कि ₹आप पर्याप्त कर रहे हैं₹ की मान्यता भी थके हुए शिक्षकों को युवा बना सकती है। इसलिए माता-पिता और शिक्षक संबंधों को मांग और वितरण से साझेदारी में बदलने का समय आ गया है। विडंबना यह है कि स्कूल छात्रों के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर जोर देते हैं, लेकिन समाज अक्सर शिक्षकों के भावनात्मक पारिस्थितिकी तंत्र को नजरअंदाज करता है। शिक्षकों को औपचारिक प्रशंसा दी जा सकती है, लेकिन कठिनाई के क्षणों में उन्हें चेहराहीन पेशेवरों तक सीमित कर दिया जाता है। उनकी मानवता की निरंतर मान्यता ही आवश्यक है।

जैसे-जैसे प्रत्येक स्कूल वर्ष चलता है, यह याद रखने लायक हैः एक शिक्षक की मुस्कान थकान को छिपा सकती है, और प्रिंसिपल की शांति अशांति को छुपा सकती है। शिक्षकों को मानवीय बनाना अप्रभावी होने का बहाना नहीं है, बल्कि यह पुष्टि करना है कि वे भी अनुग्रह और समझ के हकदार हैं। केवल तभी जब हम स्वीकार करते हैं कि शिक्षक मानव होते हैं और नेता मशीन नहीं होते, तो ही हम करुणा पर आधारित शिक्षा प्रणाली का पालन-पोषण कर सकते हैं। एक देखभाल करने वाला शिक्षक, आखिरकार, देखभाल की जाने वाली पीढ़ी के लिए सबसे सुरक्षित उत्प्रेरक है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट

"महिलाओं पर डबल बोझ: शिक्षा विभाग में कपल केस अंक हटाना"

"नौकरीपेशा महिलाओं के घर और ऑफिस के दबाव में बढ़ता संघर्ष और सरकारी नीतियों का असंतुलित प्रभाव" हरियाणा में शिक्षा विभाग की ट्रांसफर पॉलिसी में कपल केस अंक हटाने का निर्णय नौकरीपेशा महिलाओं के लिए गंभीर चुनौती है। समाज में महिलाओं से अपेक्षित "आदर्श पत्नी" और "आदर्श बहू" की भूमिका उन्हें घर और ऑफिस दोनों में बराबरी का बोझ उठाने पर मजबूर करती है। पुरुष कर्मचारी अक्सर केवल अपनी नौकरी पर ध्यान देते हैं, जबकि महिलाएं घर का खाना बनाना, बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल और ऑफिस—सभी जिम्मेदारियां निभाती हैं। यह नीतिगत बदलाव महिलाओं पर अतिरिक्त दबाव डालता है और सशक्तिकरण के दावे को कमजोर करता है।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

समाज में महिलाओं की स्थिति और उनके सशक्तिकरण को लेकर आज भी अनेक चुनौतियाँ हैं। विशेषकर नौकरीपेशा महिलाओं के लिए यह चुनौती और भी गहरी है क्योंकि उन्हें घर और कार्यस्थल—दोनों स्थानों पर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना पड़ता है। हरियाणा में हाल ही में शिक्षक स्थानांतरण नीति में किए गए बदलाव—जिनमें "कपल केस" के अंक हटाने की सिफारिश शामिल है—ने इस मुद्दे को फिर से उजागर कर दिया है। यह बदलाव केवल प्रशासनिक नहीं है, बल्कि महिलाओं के जीवन और उनके पारिवारिक संतुलन पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है।

हरियाणा के शिक्षा विभाग की स्थानांतरण नीति २०१६ से विकसित होती रही है। इस नीति के तहत यदि एक ही परिवार में पति और पत्नी दोनों शिक्षक हों, तो उन्हें कपल केस अंक (प्राथमिकता अंक) दिए जाते थे। इसका उद्देश्य था कि दोनों पति-पत्नी एक ही जिले या नज़दीकी स्थान पर पदस्थापित हो सकें, ताकि पारिवारिक संतुलन बना रहे और महिलाओं को नौकरी के साथ परिवार संभालने में सुविधा मिले। इस प्रकार की प्राथमिकता न केवल महिलाओं के लिए लाभकारी थी, बल्कि यह पूरे परिवार के जीवन, बच्चों की पढ़ाई, पारिवारिक जिम्मेदारियों और मानसिक संतुलन के लिए भी महत्वपूर्ण थी।

२०१६ के बाद इस नीति में कुछ मामूली बदलाव हुए, लेकिन कपल केस अंक बने रहे। २०२* के ड्राफ्ट स्थानांतरण नीति में अब इन अंक को हटाने की सिफारिश की गई है। इसका अर्थ है कि पति-पत्नी दोनों शिक्षक होने पर अब उन्हें पहले जैसी प्राथमिकता नहीं मिलेगी। इस बदलाव का प्रभाव सीधे महिला शिक्षिकाओं पर पड़ता है। उन्हें अब परिवार और नौकरी के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। पारिवारिक जीवन प्रभावित हो सकता है, क्योंकि पति-पत्नी अलग-अलग स्थानों पर नियुक्त हो सकते हैं। शिक्षक समुदाय में असंतोष और विरोध बढ़ सकता है। शिक्षक संघों और सामाजिक संगठनों ने इसे पारिवारिक और लैंगिक दृष्टिकोण से आलोचना की है। उनका कहना है कि यह निर्णय "महिलाओं के हितों के विरुद्ध" और "परिवार विरोधी" कदम है।

"डबल बर्डन" एक सामाजिक अवधारणा है, जिसका अर्थ है कि महिला को घर और नौकरी—दोनों जगह अपने कर्तव्यों का पालन करना पड़ता है, जबकि पुरुष केवल अपनी नौकरी पर ध्यान देते हैं। यह असमानता आज भी भारतीय समाज में गहराई

से मौजूद है।

एक उदाहरण देखें। एक नौकरीपेशा पुरुष के लिए घर से भोजन ले जाना सामान्य बात है, और उसके घर के अन्य कामों का बोझ कम होता है। वहीं नौकरीपेशा महिला को घर का खाना बनाना, बच्चों की देखभाल, बुजुर्गों की सहायता, घर की सफाई—सभी जिम्मेदारियों के साथ-साथ अपनी नौकरी भी निभानी पड़ती है। इस असमानता के कारण महिला पर मानसिक, शारीरिक और सामाजिक दबाव बढ़ जाता है। जब स्थानांतरण नीति जैसी सरकारी नीतियाँ भी इस असमानता को नजरअंदाज करती हैं, तो यह सशक्तिकरण के दावों को कमजोर कर देती है।

महिला सशक्तिकरण केवल नौकरी या योजनाओं तक सीमित नहीं होना चाहिए। इसका असली अर्थ है कि महिलाओं को समान अवसर, समान वेतन, समान जिम्मेदारी और सुरक्षित वातावरण मिले।

हालांकि, जब कपल केस अंक हटाए जाते हैं, तो यह सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से महिलाओं के लिए असमानता को बढ़ाता है। भारतीय समाज में अक्सर महिलाओं से "आदर्श पत्नी" और "आदर्श बहू" बनने की अपेक्षा की जाती है। इसका अर्थ है कि घर और परिवार की जिम्मेदारी महिला पर ही डाली जाती है, जबकि पुरुषों को इस दबाव से अपेक्षाकृत कम गुजरना पड़ता है।

कपल केस अंक हटने का असर इस असमानता को और बढ़ा देता है। महिला शिक्षिका को नौकरी में सफलता पाने के लिए अपने परिवार के समय और जिम्मेदारियों का नुकसान उठाना पड़ सकता है। पारिवारिक संतुलन बिगड़ता है, और इससे महिला की मानसिक और भावनात्मक स्थिति प्रभावित होती है। यह बदलाव महिलाओं को केवल "कर्तव्यपूर्ण" भूमिका तक सीमित करने जैसा है, जबकि उन्हें समान अधिकार और अवसर मिलने चाहिए।

समाज में सुधार की दिशा में कदम उठाने की आवश्यकता है। घर के काम को बराबरी से बाँटना चाहिए। पुरुषों को घरेलू कार्यों और बच्चों की देखभाल में बराबरी का योगदान देना चाहिए। सरकारी नीतियों में लैंगिक संवेदनशीलता लाना आवश्यक है। महिलाओं को केवल "त्याग और कर्तव्य" का बोझ न देना, बल्कि समान अधिकार और दर्जा देना चाहिए।

नीतियों में लैंगिक संवेदनशीलता लाना जरूरी है। स्थानांतरण नीतियों में कपल केस जैसी प्राथमिकताओं को बनाए रखना चाहिए और महिला शिक्षिकाओं के लिए पारिवारिक परिस्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए। शिक्षक संघों और समाज की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। संघों के माध्यम से सरकारी निर्णयों पर विचार-विमर्श और विरोध किया जा सकता है। मीडिया और सामाजिक मंचों पर लैंगिक असमानता और डबल बर्डन के प्रभाव पर जागरूकता फैलाना आवश्यक है।

घर और नौकरी का संतुलन बनाए रखना भी जरूरी है। परिवार में जिम्मेदारियों का बराबर बंटवारा किया जाना चाहिए। पुरुषों को घरेलू कार्यों और बच्चों की देखभाल में बराबरी का योगदान देना चाहिए। आरटीआई और पारदर्शिता के माध्यम से शिक्षा विभाग से जानकारी लेना चाहिए कि कपल केस अंक हटाने का निर्णय क्यों और किस आधार पर लिया गया। इससे नीति बनाने में पारदर्शिता और न्यायसंगत निर्णय सुनिश्चित होंगे।

हरियाणा में शिक्षक स्थानांतरण नीति में कपल केस अंक हटाना केवल एक प्रशासनिक बदलाव नहीं है, बल्कि यह महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता के लिए एक चुनौती भी है। यह बदलाव महिलाओं के ऊपर डबल बर्डन को और बढ़ा देता है। महिला सशक्तिकरण का असली अर्थ केवल नौकरी या योजनाओं तक सीमित नहीं, बल्कि समान जिम्मेदारी, पारिवारिक संतुलन और सुरक्षित वातावरण भी है।

यदि समाज और सरकार सच में महिलाओं को सशक्त बनाना चाहते हैं, तो उन्हें नीतियों में लैंगिक संवेदनशीलता, पारिवारिक जिम्मेदारी का बराबर बंटवारा, और महिला अधिकारों की रक्षा पर ध्यान देना होगा। समान अवसर, समान जिम्मेदारी और पारदर्शिता ही महिलाओं के लिए वास्तविक सशक्तिकरण का आधार है। बिना इसके, किसी भी नीतिगत या आर्थिक पहल का प्रभाव सीमित रहेगा और डबल बर्डन जैसी समस्याएं बनी रहेंगी।

बंगाल की खाड़ी में बना साइक्लोनिक सरकुलेशन से झारखंड, ओडिशा में तेज बारिश

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। बंगाल की खाड़ी में बना मजबूत निम्न दबाव का क्षेत्र अब चक्रवाती तूफान में का रूप ले रहा है । यह तेजी से उत्तर-उत्तर पश्चिम की तरफ तट की ओर बढ़ रहा है। मौसम विभाग ने ये भी कहा है कि जैसे ही अवदाब की गति 63 किमी प्रति घंटे की स्पीड से ज्यादा होगी, यह तूफान में बदल जाएगा। भारत मौसम विज्ञान विभाग आई एम डी रांची के अनुसार कहा कि दोपहर तक इसकी गति 55 किमी प्रति घंटे दर्ज की गई है।आई एम डी ने ताजा बुलेटिन में कहा है कि गहरा अवदाब आज यानी गुरुवार की रात तक ओडिशा और उससे सटे आंध्र प्रदेश के तटों को पार कर जाएगा। इस दौरान 75 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चल सकती हैं। मौसम विभाग ने ये भी कहा है कि साइक्लोनिक सर्कुलेशन अगले दिन यानी 3 अक्टूबर तक कमजोर पड़ जाएगा और हवा की स्पीड घटकर 45 से 55 किलोमीटर प्रति घंटे रह जाएगी लेकिन उसका असर कुछ दिनों तक जारी

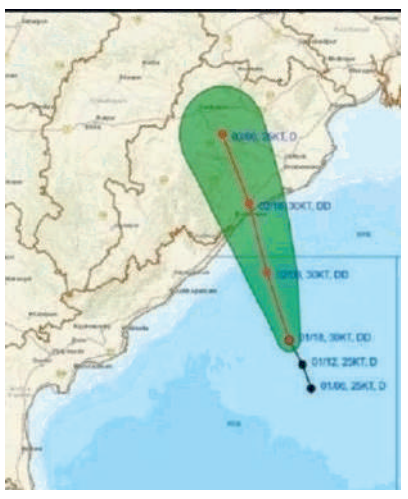

रहेगा।आई एम डी ने कहा है कि इस मौसमी घटना के कारण अगले 5 दिनों तक आधा दर्जन से ज्यादा राज्यों में तेज हवा के झोकों संग बारिश हो सकती है। मौसम विभाग के मुताबिक, ओडिशा,पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, बिहार, पूर्वी मध्य प्रदेश और पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में अत्यधिक तेज़ गरज के साथ बारिश हो सकती है और हवाओं का जोर रह सकता है।

इस बीच, ओडिशा में गुरुवार की सुबह भी बारिश दर्ज की गई। आई एम डी के मुताबिक ओडिशा में भारी बारिश हुई है। राज्य सरकार ने स्थिति से निपटने के लिए चिन्हित संवेदनशील जिलों में कर्मियों और मशीनरी को तैनात किया है। एक अधिकारी ने बताया कि राज्य के सभी हिस्सों में मुख्य रूप से तटीय और दक्षिणी क्षेत्रों में बुधवार से ही भारी बारिश हो रही है। IMD ने आज राज्य के सभी 30 जिलों में भारी बारिश की चेतावनी जारी की है।

आईएमडी ने बताया कि इस तूफान के दो अक्टूबर की रात तक ओडिशा को पार करके आंध्र प्रदेश से लगे हुए गोपालपुर और पारादीप तटों तक पहुंचने की संभावना है। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार, गहरा दबाव एक ऐसी स्थिति है जो एक सुस्पष्ट निम्न दबाव के बाद और चक्रवाती तूफान से पहले आती है, जिसके बाद आमतौर पर भारी वर्षा और तेज हवाएं चलती हैं। आई एम डी ने मछुआरों को तीन अक्टूबर तक ओडिशा तट के पास समुद्र में नहीं जाने की सलाह दी है

बुलेटिन में कहा गया है, ₹गहरे दबाव क्षेत्र के प्रभाव से मध्य बंगाल और उससे लगे उत्तरी बंगाल की खाड़ी में एक अक्टूबर से 40 से 50 किलोमीटर प्रति घण्टे से 60 किलोमीटर प्रति घण्टे की गति से तूफानी हवा चलने की संभावना है। दो अक्टूबर की दोपहर से तीन अक्टूबर की सुबह तक पश्चिम-मध्य और उससे सटे उत्तर-पश्चिम बंगाल की खाड़ी में यह रफ्तार धीरे-धीरे 55-65 किलोमीटर प्रति घण्टे की गति से बढ़कर 75 किलोमीटर प्रति घण्टे की गति तक पहुंच जाएगी।₹ आईएमडी ने राज्य के सभी बंदरगाहों पर 'स्थानीय चेतावनी संकेत संख्या-तीन' (एलसी-3) लगाने का भी सुझाव।

दुर्गा पूजा में बंगाल से चेन छिनताई करने जमशेदपुर आये तैंतीस गिरफ्तार

जमशेदपुर, जमशेदपुर से पुलिस ने चेन छिनताई करने वाली गैंग को पकड़ा है। इस गैंग के 33 सदस्यों को दबोचा गया है, जिसमें 26 महिलाएं भी शामिल हैं। अधिकारी ने बुधवार को बताया कि पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के सात पुरुषों समेत गिरोह के सदस्य दुर्गा पूजा उत्सव के दौरान मोबाइल फोन, चेन और पर्स स्नैचिंग जैसे अपराध करने के लिए सोमवार को यहाँ आए थे।

सबने चेन छीनने समेत तमाम तरह की वारदातों को अंजाम दिया। कालीबाड़ी मंदिर के पास चेन छीनने की घटना हुई, जिसकी शिकायत पुलिस में दर्ज कराई गई थी। पुलिस ने छानबीन शुरू की। सीसीटीवी वीडियो में दो महिलाओं के बारे में जानकारी मिली। पुलिस ने छानबीन की और दोनों को गिरफ्तार कर लिया।

बिष्टुपुर थाने के प्रभारी आलोक कुमार दुबे ने बताया, दोनों महिलाओं से सख्ती से पूछताछ हुई। दोनों पहले तो बातों को गोलमोल करती रहीं, लेकिन मामला गरम होता देख दोनों ने गिरोह के अन्य सदस्यों के बारे में एक-एक कर उगलना शुरू कर दिया। पुलिस को अन्य सदस्यों के शामिल होने की बात पता चलते ही छापा मार अभियान शुरू कर दिया।

अधिकारी ने दावा किया कि पूछताछ के दौरान दोनों महिलाएँ टूट गईं और उन्होंने पुलिस को बताया कि वे एक गिरोह का हिस्सा थीं जो पूजा उत्सव के दौरान अपराध करने जुगसलाई आई थीं। दुबे ने बताया कि पुलिस की एक टीम जुगसलाई पहुँची और सात पुरुषों समेत 31 अन्य लोगों को गिरफ्तार किया। पुलिस अधिकारी ने बताया कि गिरोह के सदस्य शहर के भीड़भाड़ वाले इलाकों में जाते थे और मोबाइल फोन, चेन और पर्स छीन लेते थे।

पुलिस एसआई भर्ती घोटाला: 'पैसा दो, नौकरी पाओ' मामले में बड़े लोग शामिल, बीजेडी ने की सीबीआई जांच की मांग

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: पुलिस उपनिरीक्षक भर्ती की लिखित परीक्षा में हुए फर्जीवाड़े को लेकर बीजद ने राज्य सरकार की कड़ी आलोचना की है। गुरुवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बीजद ने दावा किया कि इस घटना में बड़े नामों का हाथ है।इस संबंध में बीजद के वरिष्ठ नेता प्रशांत मुदुली ने कहा, 'पिछले 15 महीनों में सोलह भर्ती परीक्षाएं अंतिम समय में रद्द कर दी गई हैं, जिससे नौकरी के इच्छुक उम्मीदवार निराश हुए हैं।पुलिस सब-इंस्पेक्टर (एसआई) पद के लिए इस साल 8 और 9 मार्च को होने वाली लिखित परीक्षा आखिरी समय में रद्द कर दी गई थी। यह परीक्षा 7 और 8 अक्टूबर को होनी थी, जिसे 30 सितंबर को फिर से रद्द कर दिया गया। भर्ती प्रक्रिया में शामिल 117 उम्मीदवारों को श्रीकाकुलम पुलिस ने गिरफ्तार किया है। अगर उम्मीदवारों को रिश्वत देने के आरोप में गिरफ्तार किया जाता है, तो रिश्वत लेने वालों को गिरफ्तार क्यों नहीं किया जा रहा है? उन्होंने पूछा।

इसके साथ ही, प्रशांत ने कहा, 'आरोप है कि राज्य सरकार के उच्च पदस्थ अधिकारी और मंत्रिमंडल के सदस्य भी इस घटना में शामिल हैं। इस भर्ती की जिम्मेदारी ओपीआरबी पर थी, लेकिन संतोष उपाध्याय को इसका अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। 933 एसआई के पदों पर भर्ती के लिए आवश्यक परीक्षा भारत सरकार के प्रौद्योगिकी संस्थान (आईटीआई) को दी गई थी। बाद में, आईटीआई ने रिच माइंड को हटा दिया और ओडिशा की एक कंपनी सिलिकॉन डिजिटेक को सहयोगी के रूप में ले लिया। किसके हित में रिच माइंड को हटाकर सिलिकॉन डिजिटेक जैसी अनुभवहीन कंपनी को ज़िम्मेदारी दी गई, इस पर बीजद ने सरकार पर उंगली उठाई है।

उन्होंने आगे कहा, ष्अगर परीक्षार्थियों ने रिश्वत दी है, तो किसने रिश्वत ली और उनकी गिरफ़्तारी कब होगी? यह मुख्यमंत्री से पूछा जाना चाहिए, क्योंकि पुलिस विभाग मुख्यमंत्री के अधीन है।ष

इसके साथ ही, बीजद ने राज्य सरकार से इस घटना की जाँच सीबीआई को सौंपने की माँग की है। प्रवक्ता लेनिन मोहंती ने चेतावनी दी है कि अगर सीबीआई को जाँच नहीं सौंपी गई, तो बीजद सड़कों पर उतरेगा।

सऊदी–पाक रक्षा समझौता: भारत की सुरक्षा और कूटनीति पर मंडराता खतरा

सऊदी अरब और पाकिस्तान के बीच सितंबर 2025 का रक्षा समझौता भारत के लिए केवल एक पड़ोसी की सैन्य मज़बूती का संकेत नहीं है, बल्कि उसकी कूटनीतिक और ऊर्जा सुरक्षा पर भी गहरा असर डाल सकता है। चीन–पाक–सऊदी धुरी का उभरना, सऊदी निवेश का संभावित विचलन, पाकिस्तान की सैन्य क्षमताओं में वृद्धि और परमाणु सहयोग की आशंका—ये सभी मिलकर भारत की "पश्चिम की ओर सक्रियता" नीति को चुनौती देते हैं। ऐसे समय में भारत को खाड़ी देशों के साथ संबंध और मज़बूत करने, ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण करने और प्रवासी भारतीयों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सक्रिय रणनीति अपनानी होगी।

-- *डॉ प्रियंका सौरभ*

सितंबर 2025 में सऊदी अरब और पाकिस्तान के बीच हुआ सामरिक पारस्परिक रक्षा समझौता केवल दो देशों का द्विपक्षीय करार नहीं है, बल्कि यह बदलते वैश्विक समीकरणों और खाड़ी की असुरक्षाओं का प्रतीक है। जब दोहा में हमास के कार्यालय पर इज़राइली हमला हुआ और अमेरिका सुरक्षा की गारंटी देने में कमजोर दिखाई दिया, तब खाड़ी देशों के भीतर यह सवाल गहराने लगा कि उनकी सुरक्षा आखिर किस पर टिकेगी। सऊदी अरब ने इस असुरक्षा की घड़ी में पाकिस्तान को सहयोगी चुना, और पाकिस्तान ने अपनी कमजोर होती अर्थव्यवस्था के सहारे के लिए इस मौके का स्वागत किया।

सऊदी–पाक रिश्ते वैसे भी नए नहीं हैं। 1951 से ही दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग मौजूद रहा है और 1979–89 के दौरान तो 20,000 पाकिस्तानी सैनिक सऊदी धरती पर तैनात थे, जिन्होंने पवित्र हरमों की रक्षा की और ईरान तथा यमन से आने वाले खतरों का सामना किया। उस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ने आज की स्थिति को सहज बना दिया। लेकिन मौजूदा समझौते की पृष्ठभूमि में कई नई परिस्थितियाँ हैं। अमेरिका की विश्वसनीयता पर संदेह, ईरान का लगातार बढ़ता खतरा, हूती विद्रोहियों और हिज़बुल्लाह जैसे प्रॉक्सी संगठनों की गतिविधियाँ और पाकिस्तान की डगमगाती अर्थव्यवस्था, सभी मिलकर इस करार को आवश्यक बना रहे थे।

यह समझौता केवल रक्षा सहयोग तक सीमित नहीं है। इसमें पारस्परिक सुरक्षा गारंटी, आतंकवाद-निरोध सहयोग, खुफिया साझेदारी, संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण और आर्थिक–ऊर्जा सहयोग जैसे तत्व शामिल हैं। इससे सऊदी अरब को यह भरोसा मिलता है कि किसी भी खतरे की स्थिति में पाकिस्तान साथ खड़ा रहेगा, और पाकिस्तान को यह आश्वासन मिलता है कि उसे तेल, निवेश और कूटनीतिक सहारा मिलेगा। लेकिन यही वह बिंदु है जहाँ से भारत के लिए चिंता शुरू होती है।

भारत ने पिछले दशक में खाड़ी देशों, विशेषकर सऊदी अरब और यूएई, के साथ रिश्तों को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया था। निवेश, ऊर्जा सहयोग और प्रवासी भारतीयों की सुरक्षा के लिहाज़ से भारत ने महत्वपूर्ण कूटनीतिक उपलब्धियाँ हासिल की थीं। किंतु पाकिस्तान की इस वापसी ने उस निवेश और सहयोग को चुनौती देने की स्थिति बना दी है। भारत के लिए सबसे बड़ी चिंता यह है कि पाकिस्तान, सऊदी रक्षा नीति पर प्रभाव डालकर भारत के खाड़ी हितों को कमजोर कर सकता है। इससे भी अधिक गंभीर यह संभावना है कि चीन, जो पहले से ही पाकिस्तान का रणनीतिक साझेदार है, इस धुरी के माध्यम से खाड़ी क्षेत्र तक अपना प्रभाव फैला ले। यह भारत की "Act West" नीति के लिए सीधी चुनौती होगी।

सऊदी अरब ने भारत में 100 अरब डॉलर निवेश की प्रतिबद्धता जताई थी, लेकिन पाकिस्तान की जरूरतें इस निवेश को विचलित कर सकती हैं। आर्थिक दृष्टि से यह भारत की विकास योजनाओं पर असर डालेगा। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान का परमाणु दर्जा इस समझौते को और संवेदनशील बनाता है। सऊदी अरब पहले भी परमाणु तकनीक हासिल करने की महत्वाकांक्षा जता चुका है। यदि इस समझौते के माध्यम से उसे पाकिस्तान से किसी प्रकार की अप्रत्यक्ष मदद मिलती है, तो यह भारत की सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती होगी।

भारत के लिए एक और चिंता यह है कि पाकिस्तान को इस करार से उन्नत सैन्य उपकरण और प्रशिक्षण तक पहुँच मिलेगी। सऊदी और अमेरिकी सहयोग से उसकी सैन्य क्षमता और मजबूत होगी, जिसका सीधा असर भारत–पाक शक्ति संतुलन पर पड़ेगा। इसके साथ ही सऊदी अरब की वित्तीय मदद पाकिस्तान की कमजोर अर्थव्यवस्था को सहारा देगी, जिससे उसकी भारत-विरोधी नीति को स्थायित्व मिलेगा। इस्लामाबाद इस अवसर का उपयोग अपने सैन्य ढाँचे को मज़बूत करने और भारत विरोधी गतिविधियों के लिए कर सकता है।

ओडिशा सूचना आयोग कार्यालय द्वारा आरटीआई अधिनियम का घोर उल्लंघन और दुरुपयोग - ओडिशा में एक चिंताजनक स्थिति : प्रदीप प्रधान

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर: जैसा कि आप जानते हैं, प्रशासन में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए आरटीआई अधिनियम लागू किया गया है और नागरिकों को सूचना प्राप्त करके प्रशासन के कामकाज पर नज़र रखने का अधिकार दिया गया है। यह हमेशा माना जाता है कि आरटीआई अधिनियम की धारा 15 के तहत गठित सूचना आयोगों को आरटीआई अधिनियम के प्रभावी कार्यान्वयन को लागू करने का अधिदेश प्राप्त है और वे कानून के संरक्षक और सार्वजनिक प्राधिकारियों के लिए आदर्श हैं। लेकिन यह दुखद है कि आपका अपना कार्यालय सूचना देने से इनकार करता है और आरटीआई अधिनियम का उल्लंघन करता है। पीआईओ और एफएए इतने लापरवाह और निकम्मे हैं कि वे कानून की भावना को समझने की स्थिति में नहीं हैं। मैं आपके तत्काल हस्तक्षेप और उचित आदेश के लिए तथ्य-पत्र प्रस्तुत करता हूँ।

1. 16.6.25 को, मैंने ओडिशा सूचना आयोग कार्यालय के पीआईओ को आरटीआई आवेदन दायर किया था

निम्नलिखित जानकारी प्राप्त करने के लिए।

i. सुशांत मोहंती और जगन्नाथ रथ, राज्य सूचना आयुक्त और जलद त्रिपाठी, पूर्व राज्य सूचना आयुक्त द्वारा ली गई एलटीसी का विवरण, उनके द्वारा प्राप्त कुल राशि की प्रति और बिल व वाउचर की प्रति प्रदान करें।

ii. राज्य आयोग के पास वर्ष 2024-25 के लिए कार्यालय व्यय के मद में 5.43 करोड़ रुपये का बजटीय प्रावधान है। प्रत्येक कार्य/परियोजना पर किए गए व्यय और कुल शेष राशि का विवरण प्रदान करें।

2. 7.7.25 को, जन सूचना अधिकारी ने यह कहते हुए उत्तर दिया कि बिंदु संख्या 1 पर ₹आवश्यक जानकारी अर्थात एलटीसी व्यय सूचना का अधिकार अधिनियम की धारा 8(1)(j_) के अंतर्गत आता है₹। बिंदु संख्या 2 और 3 पर, जन सूचना अधिकारी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

3. 14.7.25 को, मैंने यह कहते हुए प्रथम अपील दायर की कि जन सूचना अधिकारी द्वारा लिया गया यह रुख पूरी तरह से बेतुका और अनुचित है... जन सूचना अधिकारी ने दुर्भावनापूर्ण इरादे से निम्नलिखित तर्क के साथ सूचना देने से इनकार किया है।

"एलटीसी के लिए किया गया भुगतान सरकारी खजाने से किया जाता है, जो करदाताओं का पैसा है। सूचना के अधिकार (आरटीआई) अधिनियम के तहत, प्रत्येक नागरिक को यह जानकारी प्राप्त करने का अधिकार है कि उसके पैसे का उपयोग कैसे किया गया है। जब मुख्यमंत्री, मंत्रियों और अधिकारियों के विदेश दौरों के खर्च की जानकारी आरटीआई अधिनियम के तहत उपलब्ध कराई जाती है, तो एलटीसी के खर्च को प्रकटीकरण से कैसे छूट दी जा सकती है?"

4. एफएए ने मामले की उचित सुनवाई नहीं की और बिना सोचे-समझे पीआईओ के फैसले को बरकरार रखते हुए आदेश पारित कर दिया।

5. मैं अपनी अपील पर विचार करने और आवश्यक आदेश पारित करने के लिए आयोग के समक्ष निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत करता/करती हूँ।

• सूचना आयुक्तों द्वारा एलटीसी पर किए गए खर्च की जानकारी व्यक्तिगत जानकारी की प्रकृति की नहीं है। ये खर्च सरकारी खजाने से किए जाते हैं, जो करदाताओं का पैसा है। सूचना के अधिकार (आरटीआई) अधिनियम का उद्देश्य नागरिकों को सरकारी खजाने से किए गए एक-एक पैसे के खर्च से संबंधित प्रत्येक जानकारी तक पहुँच प्रदान करना है। द्वितीय अपील वाद संख्या 1271/22 पर निर्णय देते हुए सूचना आयोग ने यह विचार व्यक्त किया है कि ₹चिकित्सा प्रतिपूर्ति से संबंधित जानकारी यद्यपि व्यक्तिगत है, परंतु पारदर्शिता और जनहित से संबंधित है। कभी-कभी कर्मचारी झूठे बिल प्रस्तुत करके चिकित्सा प्रतिपूर्ति प्राप्त कर लेते हैं और इस प्रक्रिया में सार्वजनिक धन का दुरुपयोग होता है। एक नागरिक को सार्वजनिक धन के उचित उपयोग के बारे में जानने का अधिकार है। वास्तव में इसमें व्यापक जनहित निहित है।₹ अतः एलटीसी व्यय के बारे में दी गई जानकारी व्यक्तिगत नहीं है और आरटीआई अधिनियम की धारा 8(1)(जे) के अंतर्गत अस्वीकृत होने योग्य नहीं है। अतः यह सिद्ध होता है कि लोक सूचना अधिकारी ने दुर्भावना से उक्त जानकारी देने से इनकार किया है।

• बिंदु संख्या 2 और 3 (प्रत्येक कार्य/परियोजना पर किए गए व्यय का विवरण और 5.43 करोड़ रुपये के बजट प्रावधान के बाद कुल शेष राशि) पर लोक सूचना अधिकारी ने चुप्पी साधे रखी और कोई जानकारी नहीं दी। आरोप है कि लोक सूचना अधिकारी ने जानबूझकर जानकारी गुप्त रखी।

मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि कृपया मामले की जाँच करें और राज्य में पारदर्शिता के हित में उचित कानूनी कार्रवाई करें। सार्वजनिक रूप से यह महसूस किया जा रहा है कि आयोग की पवित्रता दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है। इसे बचाए रखना आपकी ज़िम्मेदारी है।

ई-वेस्ट: 21वीं सदी का छिपा हुआ पर्यावरणीय बम

तकनीकी प्रगति ने मानव जीवन को अभूतपूर्व सुविधाएँ प्रदान की हैं।

स्मार्टफोन, लैपटॉप, टेलीविजन जैसे उपकरणों ने हमारे काम, संचार और मनोरंजन के तरीकों को क्रांतिकारी रूप से बदल दिया है। लेकिन इस डिजिटल युग की चमक के पीछे एक गहरा संकट छिपा है—इलेक्ट्रॉनिक कचरा (ई-वेस्ट)। यह न केवल पर्यावरण के लिए घातक है, बल्कि मानव स्वास्थ्य और सामाजिक-आर्थिक ढाँचे के लिए भी गंभीर खतरा बन चुका है। तेजी से बढ़ता ई-वेस्ट और इसका अनियंत्रित निपटान 21वीं सदी की सबसे जटिल वैश्विक चुनौतियों में से एक है।

ई-वेस्ट में पुराने मोबाइल, कंप्यूटर, बैटरी, रेफ्रिजरेटर जैसे बेकार इलेक्ट्रॉनिक उपकरण शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र की ग्लोबल ई-वेस्ट मॉनिटर 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, 2022 में वैश्विक स्तर पर 62 मिलियन टन ई-वेस्ट उत्पन्न हुआ, जो 2010 की तुलना में 82% अधिक है और 2026 तक इसके 74 मिलियन टन तक पहुँचने का अनुमान है। भारत, जो इस सूची में चौथे स्थान पर है, ने 2022 में 3.2 मिलियन टन ई-वेस्ट पैदा किया। चिंताजनक बात यह है कि वैश्विक स्तर पर केवल 22.3% ई-वेस्ट ही औपचारिक रूप से रीसाइकिल होता है, बाकी अनौपचारिक क्षेत्रों या लैंडफिल में चला जाता है।

ई-वेस्ट की सबसे बड़ी चुनौती इसके जहरीले तत्वों—सीसा, पारा, कैडमियम, आर्सेनिक और लिथियम—में निहित है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, इनके संपर्क से साँस की बीमारियाँ, कैंसर, त्वचा रोग और तंत्रिका तंत्र की समस्याएँ हो सकती हैं। खुले में जलाए जाने पर ई-वेस्ट जहरीली गैसें जैसे डाइऑक्सिन और फ्यूरान उत्सर्जित करता है, जो वायु प्रदूषण को बढ़ाता है। भारत में दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु जैसे शहरों में अनौपचारिक रीसाइक्लिंग क्षेत्र में हजारों श्रमिक बिना सुरक्षा उपायों के इस कचरे को संभालते हैं। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 95% ई-वेस्ट अनौपचारिक क्षेत्र द्वारा संसाधित होता है, जिससे पर्यावरण और श्रमिकों के स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान होता है।

इस संकट की जड़ हमारी उपभोक्ता संस्कृति में भी है। हर साल नए स्मार्टफोन और गैजेट्स की लॉन्चिंग पुराने उपकरणों को तेजी से बेकार कर देती है। ग्लोबल ई-वेस्ट मॉनिटर के अनुसार, औसतन हर 2-3 साल में लोग स्मार्टफोन बदलते हैं। कंपनियाँ ₹प्लांड ऑब्सोलेंस₹ की रणनीति अपनाती हैं, जिससे उत्पाद कम टिकाऊ बनते हैं, और उपभोक्ता बार-बार नया सामान खरीदते हैं। भारत में 2024 में 150 मिलियन से अधिक स्मार्टफोन की बिक्री का अनुमान है, जिससे ई-वेस्ट का ढेर तेजी से बढ़ रहा है। यह न केवल पर्यावरणीय संसाधनों पर दबाव डालता है, बल्कि दुर्लभ धातुओं जैसे कोबाल्ट और लिथियम की माँग को भी बढ़ाता है।

ई-वेस्ट का प्रभाव पर्यावरण तक सीमित नहीं है; यह सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को भी गहरा करता है। भारत में अनौपचारिक रीसाइक्लिंग क्षेत्र में काम करने वाले ज्यादातर लोग गरीब और हाशिए पर रहने वाले समुदायों से हैं, जो निम्न मजदूरी में जोखिम भरी परिस्थितियों में काम करते हैं। ई-वेस्ट से निकलने वाले जहरीले तत्व—सीसा, पारा, कैडमियम—भूजल और मिट्टी को दूषित करते हैं, जिससे खाद्य शृंखला और मानव स्वास्थ्य खतरे में पड़ते हैं। उदाहरण के लिए, दिल्ली के सीलमपुर और मुंडका जैसे क्षेत्रों में अनियंत्रित रीसाइक्लिंग के कारण मिट्टी और पानी में भारी धातुओं की मात्रा खतरनाक स्तर पर पहुँच चुकी है। यह न केवल स्थानीय समुदायों, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए भी गंभीर संकट है।

इस चुनौती से निपटने के लिए तत्काल और समन्वित प्रयास जरूरी हैं। सबसे पहले, औपचारिक रीसाइक्लिंग प्रणाली को मजबूत करना होगा। भारत में ई-वेस्ट मैनेजमेंट नियम, 2016 के तहत उत्पादकों की जिम्मेदारी को लागू किया गया है, जो कंपनियों को अपने उत्पादों के जीवनचक्र के अंत में निपटान की जिम्मेदारी सौंपता है। लेकिन इन नियमों का कार्यान्वयन कमजोर है। सरकार को आधुनिक रीसाइक्लिंग संयंत्रों को प्रोत्साहन देना चाहिए और अनौपचारिक क्षेत्र को औपचारिक प्रणाली में एकीकृत करना चाहिए। यूरोपीय संघ, जहाँ 65% ई-वेस्ट औपचारिक रूप से एकत्र होता है, इसका बेहतरीन उदाहरण है। भारत को ऐसी ही प्रभावी प्रणाली विकसित करनी होगी।

दूसरा, उपभोक्ता व्यवहार में बदलाव लाना अनिवार्य है। ₹रिपेयर एंड रीयूज़₹ की संस्कृति को बढ़ावा देना होगा। जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में लोग पुराने उपकरणों की मरम्मत को प्राथमिकता देते हैं। भारत में भी स्थानीय स्तर पर मरम्मत केंद्र स्थापित किए जा सकते हैं, जो न केवल ई-वेस्ट को कम करेंगे, बल्कि स्थानीय रोजगार के अवसर भी बढ़ाएँगे। तीसरा, जनजागरूकता अभियान महत्वपूर्ण हैं। स्कूलों, कॉलेजों और समुदायों में ई-वेस्ट के खतरों और इसके सुरक्षित निपटान के बारे में जागरूकता फैलानी होगी। कई देशों में ₹ई-वेस्ट ड्रॉप-ऑफ पॉइंट्स₹ स्थापित हैं, जहाँ लोग पुराने उपकरण जमा कर सकते हैं। भारत में बेंगलुरु जैसे शहरों में कुछ निजी संगठनों ने ऐसी पहल शुरू की है, लेकिन इसे राष्ट्रीय स्तर पर लागू करना जरूरी है। चौथा, तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देना होगा। ई-वेस्ट से सोना, चाँदी और ताँबा जैसी मूल्यवान धातुएँ निकालने के लिए नई तकनीकों का विकास संभव है। उदाहरण के लिए, 1 टन स्मार्टफोनों से 300 ग्राम सोना निकाला जा सकता है। यह न केवल आर्थिक लाभ देगा, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव भी कम करेगा।

ई-वेस्ट का यह अंधेरा पक्ष हमें सिखाता है कि तकनीकी प्रगति की कीमत पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर नहीं पड़नी चाहिए। यह संकट एक अवसर भी है—टिकाऊ भविष्य के लिए नवाचार और जिम्मेदारी को अपनाने का। सरकार, उद्योग और नागरिकों के सामूहिक प्रयासों से हम इस चुनौती पर काबू पा सकते हैं। यह समय है कि हम डिजिटल युग की चमक को वास्तव में सार्थक बनाएँ और ई-वेस्ट के खिलाफ यह लड़ाई पर्यावरण, समाज और आने वाली पीढ़ियों की भलाई के लिए जीतें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

आयुष्मान योजना का फायदा उठाने के लिए अब हुए 111 हॉस्पिटल, जाने अपने आस पास के हॉस्पिटल के नाम नीचे सलग्न लिस्ट में जांचकर

ASHISH SOOD
MINISTER OF HOME, POWER, URBAN DEVELOPMENT, EDUCATION, HIGHER EDUCATION TRAINING AND TECHNICAL EDUCATION
GOVERNMENT OF NCT OF DELHI
A-3/2 JANAKPURI, NEW DELHI-110058

सादर नमस्कार,

आयुष्मान योजना में पंजीकृत होने की हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

यह योजना 5 लाख केंद्र सरकार और 5 लाख दिल्ली सरकार द्वारा दी गई सहायता का संगम है – यानी कुल 10 लाख तक का निःशुल्क इलाज अब आपके अधिकार में है।

अभी यह योजना अपने प्रारंभिक चरण में है। शुरुआत में कुछ चयनित अस्पतालों में ही इस योजना का लाभ लिया जा सकता है। आपको उन अस्पतालों की सूची दी जा रही है, जहां आप योजना के तहत इलाज करवा सकते हैं।

Sr. No.	Hospital Name	Nodal Officer Name	Nodal Officer Number	District
1	Safdarjung Hospital	Dr. Mohit Patralekh	9968057359	SOUTH WEST
2	All India Institute of Medical Sciences, New Delhi	Dr Abdul Hakim Choudhary	9355872488	SOUTH WEST
3	Dr. Ram Manohar Lohia Hospital	DR V DHIR	9868210632	CENTRAL
4	Lady Hardinge Medical College & SSK Hospital	Dr Rajiv Garg	9013435940	CENTRAL
5	Kalawati Saran Children Hospital	Dr Sandeep Kumar	9818837214	CENTRAL
6	DR SHROFFS CHARITY EYE HOSPITAL	MR PRADEEP KUMAR	8586876261	NEW DELHI
7	NKS HOSPITAL A UNIT OF BRAM HEALTH CARE PVT LTD	SACHIN TYAGI	9355900921	NEW DELHI
8	SONIA HOSPITAL	K S Negi	9973077695	NEW DELHI
9	SYNERGY EYE CARE	Vikas Mahajan	7291991103	NEW DELHI
10	KALRA HOSPITAL SRCNC PVT LTD	JULIE SINGH	9891445937	WEST
11	AYUSHMAN HOSPITAL & HEALTH SERVICES	Ashwani Kumar Singh	9205400161	NEW DELHI
12	PARK HOSPITAL A UNIT OF PARK MEDI WORLD PVT LTD	Karan Kashap	9818068060	NEW DELHI
13	NORTHERN RAILWAY CENTRAL HOSPITAL NEW DELHI	Dinesh Mohan	9717630564	CENTRAL
14	Northern Railway Divisional Hospital , Delhi	Dr S P Chaudhry	9717630548	NORTH
15	Metro Hospital & Cancer Institute	SACHIN ROHILLA	9891177257	NEW DELHI
16	RLKC HOSPITAL METRO HEART INSTITUTE	PRAKASH DUTT	7217853125	NEW DELHI
17	Dr. Kapurs The Healing Touch Eye & Maternity Centre	MR MOHIT ARORA	9871789999	NEW DELHI

18	HAKIM ABDUL HAMEED CENTENARY HOSPITAL	Abdul Karim Siddiqui	7065085505	NEW DELHI
19	COMPOSITE HOSPITAL CRPF	DR VIJAYAKUMAR LK	9449635317	NEW DELHI
20	VALLABHBHAI PATEL CHEST INSTITUTE	Sonam Spalgsis	9650853257	NEW DELHI
21	NDMC CHARAK PALIKA HOSPITAL	DR ANAND KUMAR SINGH	8595234392	NEW DELHI
22	UNIVERSAL CENTER OF HEALTH SCIENCES	Shailesh Jain	8800800500	South East
23	EYE4U	Ankush Mutreja	9871463345	SOUTH WEST
24	Sharp Sight Eye Hospital	RAJ KUMAR SINGH	9582152930	EAST
25	Eye Mantra Hospital	DR SHWETA JAIN	9999876549	NORTH WEST
26	Action Cancer Hospital	Mohit singh	9873248779	WEST
27	NEPHRINE UNIT DCDC HEALTH SERVICES PRIVATE LIMITED	Sunder Singh	8506007299	NEW DELHI
28	DCDC HEALTH SERVICES PVT. LTD.	Pankaj Rohtagi	9999421613	NORTH WEST
29	Karuna Sindhu Charitable Hospital	Dr Arun Raghav	8826891954	SOUTH WEST
30	KHANDELWAL HOSPITAL & UROLOGY CENTRE PVT. LTD.	Dilawar Khan	9540938211	SHAHDARA
31	National Heart Institute	Tarun Kumar Pandey	9990598922	South East
32	MATA ROOP RANI MAGGO & MAHENDRU HOSPITAL	KAMAL KANT	9354887216	SOUTH WEST
33	MAHARAJA AGARSAIN MULTISPECIALITY HOSPITAL	JITENDRA KUMAR	9891654929	NORTH WEST
34	NARANG EYE INSTITUTE LASER & RETINA CENTRE	Ranvijay Singh	9958127433	NORTH
35	SALOKAYA HEALTHCARE PVT.LTD.	Rachna Gupta	9215915903	NORTH
36	RATHI HOSPITAL	Ankur Rathi	8766338613	SOUTH WEST
37	Epitome Kidney Urology Institute & Lion Hospital	Devender Thakur	9999664194	NEW DELHI
38	GANDHI HOSPITAL	ALISHA GANDHI	9811283596	WEST
39	TOMAR MULTISPECIALTY HOSPITAL	Adesh Kumar	9953606565	NORTH WEST
40	IPSC Pain and Spine Hospital	SONIA SHARMA	9311223911	NORTH
41	SGS MULTISPECIALITY HOSPITAL	Sushil Kumar Agarwala	9310271252	SOUTH WEST
42	EYE SCIENCES	Sumit Bhatt	7042672026	SOUTH
43	SHREE HOSPITAL	KARAMBIR SINGH	9953882244	SOUTH WEST
44	SRI BALAJI ACTION MEDICAL INSTITUTE	VIMAL SIROHI	8506074639	WEST
45	SANJEEVAN MEDICAL RESEARCH CENTRE PVT LTD	J. MURUGAN	9810636938	NEW DELHI
46	SUSHILA HOSPITAL	Arun	9873691154	NORTH
47	BHAGWATI HOSPITAL	Dr Shekhar Pamnani	9811207171	NORTH
48	KHANNA MEDICARE CENTRE	AMANDEEP KAUR	9811087156	NEW DELHI
49	VARDHMAN DIALYSIS CENTRE	DR RAMESH JAIN	9811057475	NORTH
50	CNC NURSING HOME	dr deepanshi	9518281710	WEST
51	Arogya hospital	Parthasarthy Bhaskar	9818366680	NORTH WEST

ASHISH SOOD
MINISTER OF HOME, POWER, URBAN DEVELOPMENT, EDUCATION, HIGHER EDUCATION TRAINING AND TECHNICAL EDUCATION
GOVERNMENT OF NCT OF DELHI
A-3/2 JANAKPURI, NEW DELHI-110058

सादर नमस्कार,

आयुष्मान योजना में पंजीकृत होने की हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

यह योजना 5 लाख केंद्र सरकार और 5 लाख दिल्ली सरकार द्वारा दी गई सहायता का संगम है – यानी कुल 10 लाख तक का निःशुल्क इलाज अब आपके अधिकार में है।

अभी यह योजना अपने प्रारंभिक चरण में है। शुरुआत में कुछ चयनित अस्पतालों में ही इस योजना का लाभ लिया जा सकता है। आपको उन अस्पतालों की सूची दी जा रही है, जहां आप योजना के तहत इलाज करवा सकते हैं।

Sr. No.	Hospital Name	Nodal Officer Name	Nodal Officer Number	District
1	Safdarjung Hospital	Dr. Mohit Patralekh	9968057359	SOUTH WEST
2	All India Institute of Medical Sciences, New Delhi	Dr Abdul Hakim Choudhary	9355872488	SOUTH WEST
3	Dr. Ram Manohar Lohia Hospital	DR V DHIR	9868210632	CENTRAL
4	Lady Hardinge Medical College & SSK Hospital	Dr Rajiv Garg	9013435940	CENTRAL
5	Kalawati Saran Children Hospital	Dr Sandeep Kumar	9818837214	CENTRAL
6	DR SHROFFS CHARITY EYE HOSPITAL	MR PRADEEP KUMAR	8586876261	NEW DELHI
7	NKS HOSPITAL A UNIT OF BRAM HEALTH CARE PVT LTD	SACHIN TYAGI	9355900921	NEW DELHI
8	SONIA HOSPITAL	K S Negi	9973077695	NEW DELHI
9	SYNERGY EYE CARE	Vikas Mahajan	7291991103	NEW DELHI
10	KALRA HOSPITAL SRCNC PVT LTD	JULIE SINGH	9891445937	WEST
11	AYUSHMAN HOSPITAL & HEALTH SERVICES	Ashwani Kumar Singh	9205400161	NEW DELHI
12	PARK HOSPITAL A UNIT OF PARK MEDI WORLD PVT LTD	Karan Kashap	9818068060	NEW DELHI
13	NORTHERN RAILWAY CENTRAL HOSPITAL NEW DELHI	Dinesh Mohan	9717630564	CENTRAL
14	Northern Railway Divisional Hospital , Delhi	Dr S P Chaudhry	9717630548	NORTH
15	Metro Hospital & Cancer Institute	SACHIN ROHILLA	9891177257	NEW DELHI
16	RLKC HOSPITAL METRO HEART INSTITUTE	PRAKASH DUTT	7217853125	NEW DELHI
17	Dr. Kapurs The Healing Touch Eye & Maternity Centre	MR MOHIT ARORA	9871789999	NEW DELHI

18	HAKIM ABDUL HAMEED CENTENARY HOSPITAL	Abdul Karim Siddiqui	7065085505	NEW DELHI
19	COMPOSITE HOSPITAL CRPF	DR VIJAYAKUMAR LK	9449635317	NEW DELHI
20	VALLABHBHAI PATEL CHEST INSTITUTE	Sonam Spalgsis	9650853257	NEW DELHI
21	NDMC CHARAK PALIKA HOSPITAL	DR ANAND KUMAR SINGH	8595234392	NEW DELHI
22	UNIVERSAL CENTER OF HEALTH SCIENCES	Shailesh Jain	8800800500	South East
23	EYE4U	Ankush Mutreja	9871463345	SOUTH WEST
24	Sharp Sight Eye Hospital	RAJ KUMAR SINGH	9582152930	EAST
25	Eye Mantra Hospital	DR SHWETA JAIN	9999876549	NORTH WEST
26	Action Cancer Hospital	Mohit singh	9873248779	WEST
27	NEPHRINE UNIT DCDC HEALTH SERVICES PRIVATE LIMITED	Sunder Singh	8506007299	NEW DELHI
28	DCDC HEALTH SERVICES PVT. LTD.	Pankaj Rohtagi	9999421613	NORTH WEST
29	Karuna Sindhu Charitable Hospital	Dr Arun Raghav	8826891954	SOUTH WEST
30	KHANDELWAL HOSPITAL & UROLOGY CENTRE PVT. LTD.	Dilawar Khan	9540938211	SHAHDARA
31	National Heart Institute	Tarun Kumar Pandey	9990598922	South East
32	MATA ROOP RANI MAGGO & MAHENDRU HOSPITAL	KAMAL KANT	9354887216	SOUTH WEST
33	MAHARAJA AGARSAIN MULTISPECIALITY HOSPITAL	JITENDRA KUMAR	9891654929	NORTH WEST
34	NARANG EYE INSTITUTE LASER & RETINA CENTRE	Ranvijay Singh	9958127433	NORTH
35	SALOKAYA HEALTHCARE PVT.LTD.	Rachna Gupta	9215915903	NORTH
36	RATHI HOSPITAL	Ankur Rathi	8766338613	SOUTH WEST
37	Epitome Kidney Urology Institute & Lion Hospital	Devender Thakur	9999664194	NEW DELHI
38	GANDHI HOSPITAL	ALISHA GANDHI	9811283596	WEST
39	TOMAR MULTISPECIALTY HOSPITAL	Adesh Kumar	9953606565	NORTH WEST
40	IPSC Pain and Spine Hospital	SONIA SHARMA	9311223911	NORTH
41	SGS MULTISPECIALITY HOSPITAL	Sushil Kumar Agarwala	9310271252	SOUTH WEST
42	EYE SCIENCES	Sumit Bhatt	7042672026	SOUTH
43	SHREE HOSPITAL	KARAMBIR SINGH	9953882244	SOUTH WEST
44	SRI BALAJI ACTION MEDICAL INSTITUTE	VIMAL SIROHI	8506074639	WEST
45	SANJEEVAN MEDICAL RESEARCH CENTRE PVT LTD	J. MURUGAN	9810636938	NEW DELHI
46	SUSHILA HOSPITAL	Arun	9873691154	NORTH
47	BHAGWATI HOSPITAL	Dr Shekhar Pamnani	9811207171	NORTH
48	KHANNA MEDICARE CENTRE	AMANDEEP KAUR	9811087156	NEW DELHI
49	VARDHMAN DIALYSIS CENTRE	DR RAMESH JAIN	9811057475	NORTH
50	CNC NURSING HOME	dr deepanshi	9518281710	WEST
51	Arogya hospital	Parthasarthy Bhaskar	9818366680	NORTH WEST

ज़रूरतमंदों की मदद करना सबसे बड़ा पुण्य – नगर सुधार ट्रस्ट के चेयरमैन

अमृतसर, 2 अक्टूबर (साहिल बेरी)

डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी साहनी के दिशा-निर्देशों के तहत जिला प्रशासन और रेड क्रॉस अमृतसर द्वारा अमृतसर में 5 अक्टूबर तक चलने वाले दान उत्सव के दौरान बड़ी संख्या में शहरवासी और स्कूली बच्चे अपने घरों में पड़े अनुपयोगी सामान को ज़रूरतमंदों के लिए दान करने के लिए आगे आ रहे हैं।

आज इस दान उत्सव के विशेष अवसर पर नगर सुधार ट्रस्ट के चेयरमैन श्री करमजीत सिंह रिंटू विशेष रूप से रणजीत एवेन्यू कम्युनिटी सेंटर पहुँचे। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन और रेड क्रॉस का यह प्रयास बेहद सराहनीय है कि वे शहर की विभिन्न गैर-सरकारी संस्थाओं के साथ मिलकर ज़रूरतमंदों की मदद के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज के दौर में ज़रूरतमंदों की मदद करना सबसे बड़ा पुण्य है और यह हम सबका फ़र्ज़ बनता है कि हम ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए आगे आएं।

उन्होंने युवाओं से भी अपील करते हुए कहा कि वे भी इस पुण्य कार्य में शामिल हों। उन्होंने कहा कि अक्सर हमारे घरों में कई तरह का सामान यूँ ही पड़ा रहता है जिसका हम कोई प्रयोग नहीं करते। अगर यह सामान ज़रूरतमंदों तक पहुँच सके तो यह बड़ा पुण्य होगा क्योंकि कई लोग इन चीज़ों से वंचित रह जाते हैं।

उन्होंने खुशी जताई कि बड़ी संख्या में स्कूली बच्चे इस उत्सव में भाग ले रहे हैं और अपने घरों में पड़े अनुपयोगी सामान को दान कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस दान उत्सव में कई गैर-सरकारी संस्थाएँ और अन्य संगठन भी बड़ी संख्या में भाग ले रहे हैं। चेयरमैन ने कहा कि दान की गई वस्तुओं को अलग-अलग श्रेणियों में बाँटकर ज़रूरतमंदों तक पहुँचाया जाएगा।

उन्होंने कहा कि यह दान उत्सव केवल दान की भावना को ही आगे नहीं बढ़ाएगा, बल्कि समाज के ज़रूरतमंद व्यक्तियों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में एक अहम कदम होगा। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि ज़रूरतमंदों को बाँटने के लिए इस्तेमाल किए हुए कपड़े, जूते, खिलौने, किताबें, इलेक्ट्रॉनिक्स और अन्य पुनः उपयोग योग्य वस्तुएँ बड़ी संख्या में एकत्रित हुई हैं।

इस मौके पर सहायक आयुक्त मैडम पियूषा ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और ₹सिटी नीड्स दान उत्सव₹ में सामुदायिक भागीदारी के महत्व पर ज़ोर दिया। सहायक आयुक्त ने बताया कि किस तरह से संस्थाएँ और एनजीओ इस मुहिम में सक्रिय रूप से हिस्सा ले सकती हैं। उन्होंने इन्हें ज़रूरतमंदों के लिए कपड़े, जूते, खिलौने, किताबें, इलेक्ट्रॉनिक्स और अन्य पुनः उपयोग योग्य वस्तुएँ एकत्र करने के लिए प्रोत्साहित किया।

सहायक आयुक्त मैडम पियूषा ने सभी भाग लेने वाली संस्थाओं और एनजीओ से अपील की कि वे अपने समुदायों में इस आयोजन को प्रचारित करें और व्यापक जागरूकता व भागीदारी सुनिश्चित करें। उन्होंने भारत सरकार द्वारा मिशन मेरी लाइफ कार्यक्रम के अनुरूप ऐसी पहलों का समर्थन करने के लिए जिला प्रशासन की प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने कहा कि आज के समय में ज़रूरतमंदों की मदद करना सबसे बड़ा पुण्य है और यह सबका फ़र्ज़ बनता है कि हम इसमें आगे आएं।

इस बैठक में रेड क्रॉस के सचिव श्री सैमसन मसीह, हेड क्रॉस की पैट्रन श्रीमती गुरदरशन कौर बावां समेत बड़ी संख्या में एनजीओ के सदस्य उपस्थित थे।

एनसीसी द्वारा स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम

अमृतसर, 2 सितम्बर (साहिल बेरी)

फर्स्ट पंजाब बटालियन एनसीसी अमृतसर की ओर से नगर निगम अमृतसर और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के सहयोग से स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत वॉर मेमोरियल अमृतसर में एनसीसी कैडेट्स को शपथ दिलवाई गई। स्वच्छता संबंधी नुक्कड़ नाटक और सफाई अभियान वॉर मेमोरियल से लेकर इंडिया गेट तक चलाया गया।

इस अभियान में श्री गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर, हिंदू कॉलेज अमृतसर, सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल खासा बाज़ार और स्कूल ऑफ़ एमिनेंस छेहरटा के एनसीसी कैडेट्स और स्टाफ ने भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत में सबसे पहले श्रीमती मनीप कौर (नगर निगम अमृतसर) ने सभी एनसीसी कैडेट्स और स्टाफ को शपथ दिलवाई। इसके उपरांत उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि सभी कैडेट्स अपने आसपास और क्षेत्र के लोगों को सफाई रखने के लिए जागरूक करें। उन्होंने समझाया कि किस प्रकार स्वच्छता भी सेवा का एक रूप है। सबसे पहले सेवा अपने इलाके में सफाई करने से शुरू करनी चाहिए। साफ-सुथरे इलाके में सभी लोग स्वस्थ रहेंगे और इसी तरह एक स्वस्थ समाज का निर्माण किया जा सकता है।

इस अवसर पर श्री गुरु नानक देव विश्वविद्यालय के एनसीसी कैडेट्स ने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत कर कैडेट्स को स्वच्छता संबंधी जागरूक किया। इसके बाद एनसीसी कैडेट्स ने सफाई अभियान चलाया, जिसमें उन्होंने क्षेत्र की सफाई कर लोगों को स्वच्छता बनाए रखने के लिए प्रेरित किया।

एनसीसी विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए लेफ्टिनेंट सुखपाल सिंह संधू, सूबेदार गुरनाम सिंह तथा अन्य स्टाफ ने इस दिन के महत्व के बारे में बताया।

कार्यक्रम के अंत में एनसीसी विद्यार्थियों को रिफ्रेशमेंट दी गई। फर्स्ट पंजाब बटालियन एनसीसी के कमांडिंग अफसर कर्नल पी.डी.एस. ने नगर निगम अमृतसर और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का हार्दिक धन्यवाद किया।

इस अवसर पर हवलदार मलकीत सिंह, श्रीमती नवदीप कौर, श्रीमती निशा कुमारी आदि स्टाफ और एनसीसी कैडेट्स उपस्थित रहे।

सरहद पार से हथियार और नशा तस्करी में शामिल एक नाबालिग समेत पाँच व्यक्ति 12 पिस्तौलों और 1.5 किलोग्राम हेरोइन सहित गिरफ्तार

हथियारों और नशीले पदार्थों की खेपें गिराने के लिए पाकिस्तानी तस्कर करते थे ड्रोन का इस्तेमाल :सीपी गुरप्रीत सिंह भुल्लर

अमृतसर, 2 अक्टूबर (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के निर्देशानुसार पंजाब को सुरक्षित राज्य बनाने के लिए चलाए जा रहे अभियान के दौरान बड़ी सफलता हासिल करते हुए अमृतसर कमिश्नरेट पुलिस ने एक नाबालिग समेत पाँच गुर्गों को 12 आधुनिक .30 बोर पिस्तौलों और 1.5 किलोग्राम हेरोइन के साथ गिरफ्तार कर पाकिस्तान से जुड़े सीमा पार के हथियार और नशा तस्करी नेटवर्क को ध्वस्त कर दिया है। यह जानकारी पंजाब के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव ने आज यहाँ दी।

गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों में जोबन सिंह (22), करनदीप सिंह उर्फ पंडित (19) और अजयपाल सिंह (18), तीनों निवासी गाँव माड़ी मेघा, तरनतारन; अमृतसर के गाँव रणिया का जशनप्रीत सिंह (18) और एक 16 वर्षीय नाबालिग शामिल हैं।

डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि प्रारंभिक जांच से पता चला है कि गिरफ्तार आरोपी जोबन सिंह और जशनप्रीत सिंह सीधे पाकिस्तान स्थित तस्करों के संपर्क में थे और सोशल मीडिया के जरिए हथियारों और नशीले पदार्थों की खेपें प्राप्त करने और पहुँचाने का काम कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हथियारों की ये खेपें पंजाब में गैंगवार और आपसी दुश्मनी को बढ़ावा देने के लिए इस्तेमाल होनी थीं।

डीजीपी ने कहा कि मामले में आगे-पीछे के संबंध जोड़ने और पूरे नेटवर्क का पर्दाफाश करने के लिए आगे और जांच जारी है।

पुलिस कमिश्नर (सीपी) अमृतसर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने कार्रवाई का विवरण साझा करते हुए बताया कि गेट हकीमा क्षेत्र में लगाए गए एक नाके पर पुलिस टीमों ने संदिग्ध जोबन सिंह, करनदीप सिंह उर्फ पंडित और अजयपाल सिंह को गिरफ्तार किया और उनके कब्जे से पाँच .30 बोर पिस्तौल बरामद की गईं। गिरफ्तार तीनों आरोपी गाँव माड़ी मेघा, जो अंतरराष्ट्रीय सीमा के नज़दीक स्थित है, के रहने वाले हैं। उन्होंने बताया कि पाकिस्तान स्थित तस्कर हथियारों और नशीले पदार्थों की खेपें गिराने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल करते थे।

सीपी ने कहा कि खुलासों के आधार पर गिरफ्तार आरोपी जोबन सिंह के साथियों -जशनप्रीत सिंह और एक नाबालिग - को नामजद करके सात पिस्तौल सहित गिरफ्तार किया गया। जोबन सिंह से लगातार पूछताछ करने पर उसके द्वारा छुपाकर रखी गई 1.5 किलो हेरोइन की खेप के बारे में भी पता चला, जिसे उसके बताए स्थान से बरामद कर लिया गया।

सरकारी आईटीआई रंजीत एवेन्यू एवं दयानंद आईटीआई, अमृतसर का चौथा कोशल दीक्षांत समारोह संपन्न

अमृतसर, 2 अक्टूबर (साहिल बेरी)

सरकारी आईटीआई रंजीत एवेन्यू एवं दयानंद आईटीआई, अमृतसर में चौथा कोशल दीक्षांत समारोह आज उत्साहपूर्वक आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि माननीय विधायक (पूर्वी अमृतसर) श्रीमती जीवनज्योत कौर रहीं।

यह आयोजन प्रिंसिपल इंजि. संजीव शर्मा के नेतृत्व में किया गया। कार्यक्रम के संयोजक श्री गुरप्रीत सिंह (टी.ओ.) तथा सह-संयोजक नवदीप सिंह, चंनदीप सिंह, नवजोत जोशी, लालचंद, रविंदर सिंह, दीपक कुमार, गगनदीप सिंह, सुश्री जगजीत कौर (ऑफिस सुपरिंटेंडेंट) एवं अन्य सदस्यों ने विशेष योगदान दिया।

इस अवसर पर विभिन्न ट्रेडों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले 80 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। साथ ही संस्थान स्तर पर प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को विशेष सम्मान प्रदान किया गया।

अपने संबोधन में माननीय विधायक श्रीमती जीवनज्योत कौर ने विद्यार्थियों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि "निष्ठा और निरंतर परिश्रम से आप जीवन में अपने लक्ष्य अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।" उन्होंने आगे कहा, "मैं यहाँ पुनः अवश्य आऊँगी। मैंने इस संस्थान के बारे में विशेष रूप से प्रशिक्षण और प्लेसमेंट को लेकर बहुत कुछ सुना है।" प्रिंसिपल और स्टाफ की तरफ़ से उनको यादगारी चिन्न देकर समानित किया गया।

इच्छाशक्ति से सब कुछ मुमकिन, भगतांवाला डंप पर कचरे के निपटारे का काम हुआ शुरू : मेयर जतिंदर सिंह भाटिया

'आप' सरकार द्वारा भगतांवाला डंपिंग ग्राउंड पर बायो-रिमेडिएशन प्लांट का उद्घाटन

अमृतसर, 2 अक्टूबर (साहिल बेरी)

आज आम आदमी पार्टी के हलका अमृतसर दक्षिणी से विधायक श्री इंदरबीर सिंह निज्जर, हलका केंद्रीय से विधायक डॉ. अजय गुप्ता और नगर निगम अमृतसर के मेयर श्री जतिंदर सिंह भाटिया द्वारा भगतांवाला डंपिंग ग्राउंड में बायो-रिमेडिएशन प्लांट का उद्घाटन किया गया।

इस मौके पर श्री इंदरबीर सिंह निज्जर ने कहा कि पिछली सरकारों ने तो लोगों से वादे किए, लेकिन कचरे को खत्म करने की दिशा में कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। उन्होंने कहा कि इच्छाशक्ति से सब कुछ संभव है और आम आदमी पार्टी की सरकार, मुख्यमंत्री श्री भगवंत सिंह मान की अगुवाई में, नगर निगम अमृतसर ने ₹इकोस्टेन कंपनी₹ के साथ 15 महीनों के लिए कचरे के निपटारे का कॉन्ट्रैक्ट किया है।

मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने बताया कि नगर निगम द्वारा इस काम के लिए 46.34 करोड़ रुपये का टेंडर जारी किया गया था। प्रक्रिया के अनुसार ₹इको ग्रीन स्टेन कंपनी₹ को यह काम 21% कम यानी 36.54 करोड़ रुपये में अलॉट किया गया।

डॉ. अजय गुप्ता ने जानकारी दी कि रोजाना 3333 मीट्रिक टन कचरे की बायो-रिमेडिएशन होगी। करार के अनुसार 11 लाख मीट्रिक टन कचरे को खत्म करने के लिए एक्शन प्लान निगम को सौंपा जाएगा, जिसमें दैनिक और मासिक रिपोर्ट की मॉनिटरिंग की जाएगी।

मेयर भाटिया ने कहा कि लोग अक्सर कहते थे कि यह कचरे का पहाड़ कभी खत्म नहीं होगा। लेकिन इसे उठाने का काम आज से शुरू हो गया है। यह आम आदमी पार्टी की ओर से उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम है। डंप पर ऑनलाइन बैलेंसिंग और इलेक्ट्रॉनिक वेटिंग सिस्टम लगाया जाएगा और पूरे काम की सीसीटीवी से निगरानी होगी। उन्होंने बताया कि कंपनी ₹सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट रूल्स₹ के अनुसार काम करेगी।

इसके साथ ही मेयर भाटिया ने यह भी जानकारी दी कि 01-10-2025 से नगर निगम द्वारा कचरा उठाने वाली कंपनी से भी अनुबंध किया गया है। जल्द ही शहर में डोर-टू-डोर कचरे की लिफ्टिंग शुरू की जाएगी। कचरे की समस्या से निपटने के बाद पेयजल और सीवरेज की समस्याओं को भी प्राथमिकता से हल किया जाएगा।

इस मौके पर डिप्टी मेयर तरुणबीर सिंह कैंडी, जिला प्रधान शहरी प्रभावीर सिंह बराड़, जिला महासचिव मुखविंदर सिंह विरदी, जिला मीडिया इंचार्ज सतनाम सिंह मठाड़, चेयरमैन बलजीत सिंह रिंकू, माजा जोन महिला विंग इंचार्ज सुखबीर कौर, माजा जोन मीडिया सचिव वरुण राणा, काउंसलर विक्की दत्ता, सतनाम, विजय कुमार, रवीशेर सिंह, मनप्रीत सिंह, जगमीत सिंह कुल्ली, किरणजीत कौर के पति हैप्पी जी, बंटी पहलवान, कमल बोरी, शमशेर सिंह, शिवाली के पति बॉबी, सुख हुंदल, गुरविंदर सिंह रिंकू, हरजीत सिंह कलकत्ता, नवनीत शर्मा पीए, सुदेश, बिक्रम सिंह शेरगिल (कमिश्नर नगर निगम अमृतसर), सुरिंदर सिंह (अतिरिक्त कमिश्नर नगर निगम अमृतसर) आदि मौजूद थे।

मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने अरविंद केजरीवाल, भगवंत मान, मनीष सिसोदिया और मंत्री डॉ. रवजोत सिंह का विशेष तौर पर धन्यवाद किया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023